ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ/1215/170-179/છ, તા. 23-3-2016 – થી મંજૂર

# हिन्दी

## ( द्वितीय भाषा )

## कक्षा 11

**प्रतिज्ञापत्र**

भारत मेरा देश है ।
सभी भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परंपरा पर गर्व है।
मैं हंमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता-पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा- एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

**मूल्य: ₹ 32.00**

तमसोमा ज्योतिर्गमय

**गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल**
**'विद्यायन', सेकटर 10-ए, गांधीनगर-382 010**

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर
इस पाठ्यपुस्तक के सभी अधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन है।
इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

**विषय-परामर्शन**
डॉ. रघुवीर चौधरी

**लेखन-संपादन**
डॉ. एच. एन. वाधेला (कन्वीनर)
डॉ. रामगोपाल सिंह
डॉ. उमिला विश्वकर्मा
डॉ. हेमंत ओझा
डॉ. वीरभद्रसिंह राओल
डॉ. मंगलभाई प्रजापति
डॉ. अमृतभाई प्रजापति
श्री जल्पाबहन कयाड़ा

**समीक्षा**
डॉ. अर्जून तड़वी
डॉ. गीताबहन जगड़
श्री पंकज मारु
श्री पूजाभाई ओड़ेदरा
श्री वीरेन्द्रगिरि गोंसाई
श्री प्रभातसंग मोरी
श्री रेखाबहन व्यास

**संयोजन**
डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

**निर्माण-संयोजन**
श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

**मुद्रण-आयोजन**
श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

## प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गए नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।

नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिप्रेक्ष में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई **कक्षा 11, हिन्दी ( द्वितीय भाषा )** की यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नये पाठ्यपुस्तक की हस्तप्रत-निर्माण की प्रकिया में संपादकीय पेनल ने विशेष ख्याल रख कर तैयार की है। एन.सी.ई.आर.टी. एवं अन्य राज्यों के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात के नये पाठ्यपुस्तक को गुणवत्तालक्षी कैसे बनाया जाय उस पर संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयत्न किया है।

इस पाठ्यपुस्तक को प्रसिद्ध करने से पहले इसी विषय के विषय-निष्णातों एवं इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों की ओर से सर्वांगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा-शिबिर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक की मंजूरी-क्रमांक प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान गुजरात माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड के द्वारा प्राप्त हुए सुझावों के अनुसार इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके प्रसिद्ध किया गया है।

नये अभ्यासक्रम का एक उदेश्य है, इस स्तर के छात्र व्यवहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा-अभिव्यक्ति को विशेष असरकारक बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा का परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खूबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में प्रयोग करना सीखें, इस लिए भाषा-अभिव्यक्ति एवं लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक को रुचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है।

| | |
|---|---|
| **एच. एन. चावडा** | **डॉ. नीतिन पेथाणी** |
| नियामक | कार्यवाहक प्रमुख |
| दिनांक : 15-03-2016 | गांधीनगर |

**प्रथम संस्करण : 2016**

**प्रकाशक :** गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से
एच. एन. चावडा, नियामक

**मुद्रक :**

# मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह * -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व संझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के क्षेत्रों में उत्कर्ष की और बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

---

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

# अनुक्रमणिका

## ( प्रथम सत्र )


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | साधो, देखो जग बौराना | (पद) | कबीर | 1 |
| 2. | बापू की कुटिया में | (रेखाचित्र) | रामवृक्ष बेनीपुरी | 4 |
| 3. | पुरानी चीजों के पक्ष में | (कविता) | राजेश जोशी | 9 |
| 4. | चन्द्रशेखर आज़ाद | (संस्मरण) | सद्‌गुरु शरण अवस्थी | 12 |
| ● | **हिन्दी के विविध रूप** | (प्रयोजन मूलक हिन्दी) | | 16 |
| 5. | शिक्षक के नाम पत्र | (पद्यानुवाद) | अब्राहम लिंकन | 19 |
| 6. | भारत माता की जय | (आत्मकथांश) | जवाहरलाल नेहरू | 24 |
| ● | **व्यावहारिक पत्राचार - 1** | (प्रयोजन मूलक हिन्दी) | | 28 |
| 7. | परशुराम - लक्ष्मण संवाद | (महाकाव्यांश) | तुलसीदास | 32 |
| 8. | पंचलाइट | (कहानी) | फणीश्वरनाथ 'रेणु' | 36 |
| ● | **प्रयोजन मूलक हिन्दी** | (प्रयोजन मूलक हिन्दी) | | 41 |
| 9. | चंपा काले अच्छर नहीं चीन्हती | (कविता) | त्रिलोचन | 44 |
| 10. | अजंता | (प्रवास वर्णन) | भगवत् शरण उपाध्याय | 47 |
| ● | **स्ववृत्त** | (प्रयोजन मूलक हिन्दी) | | 51 |
| ● | **व्यावहारिक पत्राचार - 2** | (प्रयोजन मूलक हिन्दी) | | 53 |


## ( द्वितीय सत्र )


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 11. | नीति के दोहे | (मुक्तक) | रहीम | 59 |
| 12. | दुःख | (कहानी) | यशपाल | 62 |
| 13. | कदम मिलाकर चलना होगा | (गीत) | अटल बिहारी वाजपेयी | 68 |
| 14. | नन्हा- सा पौधा | (एकांकी) | लक्ष्मीनारायण लाल | 71 |
| ● | **निमंत्रण पत्र** | (प्रयोजन मूलक हिन्दी) | | 78 |
| 15. | बाज लोग | (कविता) | अनामिका | 80 |
| 16. | कल्पना शक्ति | (निबंध) | बालकृष्ण भट्ट | 83 |
| 17. | गज़ल | (गज़ल) | विजय तिवारी | 86 |
| 18. | पहली चूक | (व्यंग लेख) | श्रीलाल शुक्ल | 89 |
| ● | **बैंक पत्राचार** | (प्रयोजन मूलक हिन्दी) | | 93 |
| 19. | डंका | (कविता) | सुब्रमण्यम् भारती | 94 |
| 20. | दो लघु कथाएँ | (लघुकथा) | बनफूल | 97 |
| ● | फीचर लेखन | (प्रयोजन मूलक हिन्दी) | | 100 |
| ● | विज्ञापन | (प्रयोजन मूलक हिन्दी) | | 101 |
| ● | पारिभाषिक शब्दावली | | | 103 |
| ● | व्याकरण | (शब्द, उपसर्ग, समास) | | 105 |
| | | ● पूरक वाचन | | |
| | (1) गुड गुड माय सन | (विज्ञान कथा) | रवीन्द्र अंधारिया | 110 |
| | (2) कट गये पेड़ पर देसिन भई छांव रे | (गीत) | संकलित (इन्टरनेट से साभार) | 111 |
| | (3) इसे जगाओ | (कविता) | भवानी प्रसाद मिश्र | 121 |
| | (4) गुरु पर्व | (लेख) | खालिद अशरफ | 123 |

# 1 साधो, देखो जग बौराना

**कबीर**

(जन्म : सन् 1398, मृत्यु : सन् 1518)

भक्तिकालीन निर्गुण संत-परंपरा में कबीर का स्थान सर्वोपरि हैं। उनका जन्म काशी (वाराणसी) में हुआ था। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपति ने उनका लालन-पालन किया। कबीर निरक्षर थे किन्तु मानव-प्रेम का ढाई अक्षर पढ़कर वे पण्डित हो गए। वे रामानंद के शिष्य थे। उन्हीं से कबीर ने 'राम' नाम के मर्म को पहचाना।

कबीर भक्त कवि, संत और बहुश्रुत थे। उन्होंने अपने युग मे ंव्याप्त जाति-पाँति, कुरीतियों, अंधविश्वास, बाह्याडंम्बर मूर्तिपूजा, अवतारवाद - उस युग में व्याप्त धार्मिक धर्म संबंधी संकीर्णता का खुलकर विरोध किया। उनके पास अनुभव का असीम भंडार था। अनुभव के खरेपन और यथार्थबोध से उत्पन्न कबीर की कविता पाठक और श्रोता पर गहरा प्रभाव डालती है।

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी कहलाती हैं। इसमें बोलचाल की सहजता और बोधकता हैं। कबीर की रचनाएं 'कबीर ग्रंथावली' में संग्रहीत हैं। इनका प्रमुख ग्रंथ 'बीजक' है। इसके तीन भाग हैं- रमैनी, सबद, साखी। इनके कुछ पद 'गुरुग्रंथ साहब' में भी संग्रहीत हैं।

प्रस्तुत पद में कबीर ने अपने युग में व्याप्त हिन्दू-मुस्लिम धर्म की विसंगतियों तथा अन्तर्विरोधों, धार्मिक संकीर्णताओं, बाह्यांडम्बरों आदि का खुलकर विरोध करते हुए धार्मिक ठेकेदारों को आत्मज्ञान प्राप्ति की नसीहत दे रहे हैं।

---

## पद

साधो, देखो जग बौराना।
साँची कहो तौ मारन धावै, झूठे जग पतियाना॥
हिंदू कहत हैं राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस मैं दोऊ लड़े मरतु हैं, मरम कोई नहिं जाना॥
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करे असनाना।
आतम-छोड़ि पषानै पूजैं, तिनका थोथा ज्ञाना॥
आसन भारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीपर-पाथर पूजन लागे, तीरथ - बर्त भुलाना॥
माला पहिरे, टोपी पहिरे, छाप-तिलक अनुमाना।
साखी सब्दे गावत भूले, आतम खबर न जाना॥
घर-घर मंत्र जो देन फिरत हैं, माया के अभिमाना।
गुरुवा सहित सिष्य सब बूड़े, अंतकाल पछिताना॥
बहुतक देखे पीर-औलिया, पढ़ै किताब-कुराना।
करै मुरीद, कबर बतलावैं, उनहूँ खुदा न जाना॥

हिंदू की दया, मेहर तुरकन की, दोनों घर से भागी।
वह करे जिबह, वाँ झटका मारे, आग दोऊ घर लागी॥
या बिधि हँसत चलत हैं हमको, आप कहावैं स्याना।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, इनमें कौन दिवाना॥

### शब्दार्थ - टिप्पणी

**बौराना** पागल होना; दीवाना **साँची** सच **धावै** दौड़े **पतियाना** विश्वास करना **असनाना** स्नान **पषानै** पत्थर **थोथा** खोखला, व्यर्थ **डिंम** अंडा **गुमाना** घमण्ड **साखी** साक्षी; प्रत्यक्ष ज्ञान **शब्दै** शब्द **बूड़े** डूबना **मेहर** कृपा, दया, निकाह के समय दूल्हे द्वारा दुल्हनको दी गई रकम या वस्तु **जिबह** हलाल बर्त व्रत स्याना सयाना

### स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :**

(1) कबीर के मतानुसार सच कहने पर जगत के लोग क्या करते हैं ?

(क) विश्वास करते हैं।

(ख) तमाशा खड़ा करते हैं।

(ग) मारने दौड़ते हैं

(घ) विश्वास नहीं करते हैं।

(2) इनमें से किन लोगों का ज्ञान व्यर्थ हैं ?

(क) जो आत्मज्ञान को छोड़ पत्थर की पूजा करते हैं।

(ख) जो नियमित भगवान की पूजा करते हैं।

(ग) जो ईश्वर को नहीं मानते हैं।

(घ) जो प्रात:काल स्नान नहीं करते हैं।

(3) तुर्कों की क्या पहचान है ?

(क) दया (ख) धर्म (ग) मेहर (घ) नफरत

**2. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) जगत के लोग किस पर जल्दी विश्वास करते हैं ?

(2) हिन्दू और मुस्लिम आपस में क्यों लड़ते हैं ?

(3) अंतकाल में कौन लोग पछतावा करते हैं ?

(4) हिन्दू लोगों की क्या पहचान है ?

**3. दो-तीन वाक्य में उत्तर लिखिए :**

(क) कौन-से लोग ईश्वर से दूर हैं ?

(ख) पीर-औलिया खुदा को क्यों नहीं जान पाये ?

(ग) बाह्याडंबर, मूर्तिपूजा के बारे में कबीर क्या कहते हैं ?

**4. पाँच से छ : पंक्तियों में उत्तर लिखिए :**

(1) हिन्दू व मुस्लिम धर्म की क्या स्थिति है ? पद के आधार पर बताइए।

(2) दोनों धर्मों में से कौन दिवाना है ? तर्क पूर्ण उत्तर दीजिए।

(3) कबीरने हिन्दू-इस्लाम धर्म में व्याप्त बाह्याडम्बर का खुलकर विरोध किया है, समझाइए।

**5. (1) समानार्थी शब्द लिखि**ए :

बौराना, थोथा, अभिमान, अनुमान

(2) मानक शब्द रूप लिखिए -

आतम, असनाना, सिष्य, मरम, पाथर, कबर

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी- प्रवृत्ति :** बाह्याडंबरों पर व्यंग्य करती हुई कबीर की अन्य साखियाँ एकत्रित करके कक्षा में सुनाइए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति :** 'कबीर ग्रंथावली' से इसी प्रकार की साखियाँ एकत्रित करके छात्रों को सुनाएँ।

**अथवा**

सी. डी. द्वारा कबीर के दोहों का गान सुनवाइए।

●

# 2 बापू की कुटिया में

**रामवृक्ष बेनीपुरी**

(जन्म : सन् 1902, मृत्यु : सन् 1968)

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर जिलें के बेनीपुर गाँव में हुआ था। बाल्यावस्था में ही इनके पिता का निधन हो गया था। इनका पालन-पोषण इनकी मौसी ने किया था। सन् 1920 में मैट्रिकुलेशन परीक्षा पास करने से पहले ही पढ़ना लिखना छोड़कर ये गांधीजी के असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े व कई बार जल गये। बाद में इन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की विशारद शिक्षा पास की। पन्द्रह वर्ष की अवस्था से ही वे पत्र-पत्रिकाओं में लिखने लगे थे।

रामवृक्ष बेनीपुरी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, ललित निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण आदि अनेक गद्य-विधाओं में रचनाएँ की। साहित्य के क्षेत्र में उनका प्रवेश पत्रकारिता के माध्यम से हुआ। 'तरुण भारत', 'किसान - मित्र', 'बालक' जनता आदि साप्ताहिक पत्रिकाओं का सम्पादन किया। 'माटी की मूरतें' और 'लाल तारे' उनके रेखाचित्रों के संग्रह हैं। गेहूँ और गुलाब 'चिता के फूल', 'पतितों के देश में' आदि इनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं। ललित निबंध के क्षेत्र में उन्हें विशेष ख्याति मिली।

प्रस्तुत पाठ 'बापू की कुटिया' में लेखक को गांधीजी के जीवन-काल में उनसे न मिल पाने का रंज है तो दूसरी ओर उनकी अनुपस्थिति में कुटिया की हर वस्तु को आत्मसात करने का सुअवसर पाकर अपने आप को भाग्यशाली मानते हैं। लेखक बापू से इतने प्रभावित थे कि उनके न रहने पर बापू की वस्तुओं के साहचर्य से वे उन्हें अपने आस - पास महसूस करते हैं।

---

बापू यहाँ तुम्हारी इस कुटिया में, तुम्हारे पायताने बैठकर, ये कुछ पंक्तियाँ लिख रहा हूँ।

जब तक तुम यहाँ थे, मैं नहीं आया। यह मेरा दुर्भाग्य था या सौभाग्य ? दुर्भाग्य तो था ही, क्योंकि जिसके आदेश पर अपने जीवन के प्रवाह को मोड़ दिया, जिसकी आज्ञा पर बार - बार अपने को संकटों में डाला और सबसे बढ़कर जिस विश्ववंद्य व्यक्ति के दर्शन के लिए दूर-दूर देशों के लोग आते रहे - उसकी जिन्दगी में उसके आवास - स्थान पर पहुँचकर, उसकी चरण-रज से अपने मस्तक को धन्य न बना सका, यह दुर्भाग्य नहीं तो क्या है ? फिर बापू तुमने तो अपनी चरणधूलि से मेरे छोटे-से गाँव को भी एक दिन पवित्र किया था । अत: यह स्वभावत: ही उचित था कि जब तुम यहाँ थे, मैं आता और तुम्हारे दर्शनों से, तुम्हारे चरणस्पर्श से अपने जीवन को कृतकृत्य करता। पर यह सब नहीं हो सका।

किन्तु देखता हूँ, और आज यहाँ प्रत्यक्ष कर रहा हूँ - आदमी का दुर्भाग्य

कभी-कभी सौभाग्य बन जाता है। लगता है, 'देर आयद दुरुस्त आयद' की कहावत बहुत ही सच हैं। यदि मैं उन दिनों आता तो क्या मैं तुम्हारे बिस्तरे के इतना निकट, इतनी देर के लिए, स्थान पा सकता था ? उस शांत एकांत में, अकेले-अकेले इस कुटिया से इतना तादात्म्य प्राप्त करने में सफल हो सकता था ? अरे, तुम्हारे पायताने बैठकर अपनी लेखनी को इस तरह सार्थक करने का सौभाग्य उन दिनों क्या खाकर, किस पुरातन पुण्य-बल से पा सकता था ?

तुम्हारा यह बिस्तरा-खजूर की चटाई पर एक गद्दा डालकर और उसे खादी से ढककर बनाया गया यह श्वेत-शुभ्र बिस्तरा। बापू ! लगता है, तुम अभी-अभी यहाँ से कुछ देर के लिए बाहर गए हो और अभी - अभी उस हृदयकारी मुस्कान के साथ पधारोगे। तुम्हारा यह बिस्तरा, तुम्हारा यह तकिया, तुम्हारी यह तुलसी की माला, तुम्हारा यह प्यारा चरखा - सब-के-सब यही तो कह रहे हैं - तुम अभी गए हो, अभी आओगे।

किन्तु नहीं, इस कुटिया के दाहिने द्वार के निकट जो यह घड़ी और खड़ाऊँ की जोड़ी है, यह कहती है – अरे, तुम किस भ्रम में हो! बापू क्या हमें छोड़कर कभी बाहर निकलते थे ? वह बाहर कहीं नहीं गए हैं। तो क्या बापू यहीं हैं, कहाँ हैं, बताओ, ओ बिस्तरे, हमारे सारे राष्ट्र के बापू कहाँ हैं ?

बिस्तरा नहीं बोलता, किन्तु खुली अल्मारी पर रखे बापू के तीनों बंदर तो इशारे से कह रहे हैं – आँख बंद करो। जबान बंद करो। कान बंद करो– अपने को आत्मस्थ करो, फिर देखोगे, बापू यहीं हैं।

और सचमुच पा रहा हूँ बापू तुम कहीं गए नहीं, यहीं हो, इसी बिस्तरे पर, उस तकिये के सहारे बैठे हो। हाँ–हाँ, इस शांत एकांत में मैं इस सारी कुटिया को बापूमय पा रहा हूँ।

देखिए, वह अपने बिस्तरे पर बैठे बापू अपने यरवदा–चक्र को घुमा रहे हैं। अभी कुछ देर पहले उन्होंने सामने रखे कलमदान से कलम निकालकर कुछ लिखा है। और अब ज़रा हट जाइए, थके–माँदे बापू हाथ में तुलसी की माला लिए अपने सामने की दीवार में मिट्टी की उभाड़ से बनाए दो नारियल के वृक्षों के बीच गेर से लिखे 'ओम्' को निर्निमेष दृष्टि से निहार रहे हैं। और, उस 'ओम्' के ऊपर क्या है ? – हे राम!

हे राम! आह, कल्पनालोक से उठकर मैं किस कठोर चट्टान पर पटक दिया गया ! हे राम! इन शब्दों ने कहा – नहीं, बापू अब हमारे बीच नहीं रहे। वह हमसे कब के छीन लिए गए। – उस दिन, जब गोलियों के तीन भयानक धड़ाकों के बीच, दुनिया ने अंतिम बार उनके मुख से 'हे राम' सुना था।

'जनम–जनम मुनि जतन कराहीं।

अंत राम कहि आवत नाहीं।'

उस दिन संसार ने पाया था. ऋषियों की परंपरा टूटी नहीं है, बल्कि उसमें नई ज्योति की एक नई कड़ी जुड़ गई है। काश, यह ज्ञान उस अज्ञानी को हो पाता, जिसने हिन्दुत्व के नाम पर इतना बड़ा अनर्थ किया। किन्तु बापू अमर हैं। अपने दिव्य रूप में वह सिर्फ यहाँ ही विद्यमान नहीं हैं, यत्र–तत्र–सर्वत्र उनकी सत्ता और महत्ता व्याप्त है और तब तक व्याप्त रहेगी जब तक आकाश में चाँद–तारे और पृथ्वी पर उदभिज, अंडज, पिंडज हैं।

ओ बिस्तर! इस सादगी में भी तुम कितने महान् हो क्या इसका अहसास तुम्हें कभी होता है ? अरे, तुम्हें देखकर कितने रत्नजड़ित स्वर्ण–सिंहासन भी ईर्ष्या से जलते होंगे! क्या कभी उन पर एक क्षण को भी उतना बड़ा आदमी बैठा होगा जितने बड़े आदमी को कितने ही दिनों, महीनों, वर्षों तक तुम्हें, अपने ऊपर आसीन करने का गौरव प्राप्त हो सका ?

यह गौरवशाली बिस्तरा! जिसके सिरहाने दीवार से सटी काठ की तख्ती, जिसकी कठोरता को कम करने के लिए उतना ही बड़ा तकिया। थक जाने पर बापू उसी तकिये के सहारे बैठते! बिस्तरे के दाहिने–बापू की कुछ आवश्यक वस्तुएँ। पत्तों का बना यह टोकरा, जिसमें वे रद्दी कागज–पत्रों को डाल दिया करते। आज भी उसमें कुछ ऐसे कागज–पत्र हैं। उसी की बगल के समीप दीवार से सटा पीतल का थूकदान, जिसे बापू स्वयं साफ करते। कलमदान जिस पर अब भी उनकी लेखनी रखी है। यह जादू–भरी लेखनी–इसने अपनी नोक से न जाने कितने लोगों के प्राणों को उद्वेलित किया ! एक स्टैंड पर एक पेंसिल। फिर यह यरवदा–चक्र, जिसके चक्कर से ही सारा भारत नाचने लगा, ठीक उसी तरह जिस तरह कृष्ण की वंशी से गोपियाँ नाचने लगी थी। अपने को भूलकर, कुल–परिवार को भूलकर, सारे संसार को भूलकर! उससे सटे कताई के कुछ फुटकर सामान में पूनी, ताँत आदि। फिर तीन खानों का एक छोटा–सा शैल्फ।

बापू को समझने के लिए इस छोटे-से शैल्फ को भली-भाँति देखना ही होगा – इसमें बापू का सारा मानस-संसार समाया है। सबसे पहले इसके ऊपर एक दपत्ती पर टँगी, बड़ी अच्छी लिखी, लारिनर की सूक्ति को पढ़िए, जिसका आशय है –

'यदि सच्ची राह पर हो तो तुम्हें क्रोध करने की जरूरत ही नहीं, यदि गलत राह पर हो, तो फिर किस बिस्तर पर, किस मुँह से, आँख लाल-पीली करोगे।'

शैल्फ के ऊपर पत्थर का एक टुकड़ा, यों ही ऊबड़-खाबड़ कहीं से उठा लाया गया। यह बापू के लिए पेपरवेट का काम करता था। नीचे के दो खानों में बापू की किताबें! पहले खाने में (1) सार्थ गुजराती जोड़णी कोश, (2) रिथिंकिंग क्रिश्चियैनिटी, (3) हज़रत ईसा और ईसाई धर्म, और (4) श्रीमद्‌भगवद्‌गीता। दूसरे खाने में – (1) रामचरितमानस , (2) श्रीस्वास्थ्य-वृत्ति (3) आश्रभजनावली, और (4) गीता आणि गीताई। किताबों के खानों के आगे एक आलमुनियम का डिब्बा, जिसमें सूत आदि। फिर, वे तीन सुप्रसिद्ध बंदर, जिन्होंने इतिहास में स्थान पा लिया है। लगता है, वे तीनों बंदर इस सूने वातावरण से घबरा उठे है। नहीं , जैसे एक ने बापू की मृत्यु की खबर सुनकर अपने कान सदा के लिए बंद कर लिए है, एक आँखों को तलहथियों से छिपाकर रो रहा है और एक अपने मुँह पर हाथ रखकर कह रहा है – अरे, अब हम-तुम क्या बोलेंगे। जिसे बोलना था, वह तो इस कुटिया को, इस बिस्तरे को, खाली करके सदा के लिए चला गया।

तीन बंदरों की बगल में चिकने पत्थर का एक खुशनुमा टुकड़ा जिस पर लिखा हैं – प्रेम ही भगवान है – फिर, एक चित्रकारी की हुई डिबिया जिसमें दो-तीन फुटकर चीजें।

बिस्तरे के दूसरी ओर तीन छोटे-छोटे डेस्क जिन्हें वह शायद लिखने के समय व्यवहार में लाते थे। डेस्कों के बाद, खंभे से सटी चटाई पर एक छोटा-सा कालीन, जिस पर दीवार से लगा एक तकिया। यहीं मान्य अतिथि बैठाए जाते और वे बापू से घुल-मिलकर बातें करते। फिर सारे घर में चटाइयाँ-ही-चटाइयाँ।

इन्हीं चटाइयों पर देश-विदेश के बड़े-बड़े व्यक्ति बैठते और बापू के मुख से निकले वचनामृत का पान करते। बापू अपने चक्र को घुमाते हुए उनसे बात करते जाते। यों काम के साथ बात को मिलाकर मानो हमें सदा चेतावनी देते – देखो, समय बरबाद मत करो। तुम्हारी बातें भी तुम्हारे चक्र को कभी नहीं रोक सकेंगी। जिन चटाइयों पर कभी नेहरू, राजेन्द्रप्रसाद, पटेल के समान देश के बड़े-से-बड़े लोग और संसार के बड़े-से-बड़े राजनीतिज्ञ, पत्रकार, साहित्यिक बैठते थे, उन पर आज इस दुपहरिया में अकेला मैं बैठा हूँ – इस बात की कल्पना भी भावमुग्ध कर रही है।

इन चटाइयों के ऊपर एक दपत्ती पर वह क्या लिखा हुआ टँगा हैं ? उसे पढ़िए-

'झूठ शब्दों में निहित नहीं है, छल करने में है। चुप्पी साधकर भी झूठ बोला जा सकता है। दोहरे अर्थवाले शब्दों के प्रयोग द्वारा किसी शब्दांश पर जोर देकर आँख के संकेत से और किसी वाक्य को विशेष महत्त्व देकर भी झूठ का प्रयोग होता है। वस्तुत: इस प्रकार का मिथ्या प्रयोग साफ शब्दों में बोले गए झूठ की अपेक्षा कई गुना बुरा है।'

बापू की इस कुटिया के तीन भाग हैं। एक भाग यह है, जहाँ मैं बैठा हूँ, यहीं कभी बापू रहते थे। इसके बगल में, मध्य भाग में, एक कोठरी है, जिसमें एक चौकी पर एक बिस्तरा सिमटा हुआ रखा हैं। इस कोठरी में, अंतिम दिनों में बापू की सेवा के लिए राजकुमारी अमृत कौर रहती थी।

इसके तीसरे भाग में बापू का स्नानागार है। कितनी सफाई, कैसी स्वच्छता ! बापू अपने कमोड़ को अपने हाथों कैसा साफ रखते। उसकी सफाई के लिए लकड़ी का ब्रुश हैं, फिनाइल की शीशी है। कमोड के आगे, कमरे में पानी की बाल्टियाँ, लोटे, मिट्टी

के हंडे आदि हैं। इस भाग के दो हिस्से हैं। एक में शौच और स्नान के सामान हैं। दूसरे में एक चौकी है, कुछ तख्ते हैं – बापू के शरीर पर यहीं तेल की मालिश की जाती थी।

'बापू की कुटिया की एक-एक वस्तु को अपलक दृष्टि से देख रहा हूँ और लिख रहा हूँ। बाँस और लकड़ी की बनाई हुई यह कुटिया, ऊपर खपरैल। दीवारें बाँस की फट्टियों की हैं, जिन पर चटाइयाँ लगाकर ऊपर से मिट्टी से पोत दिया गया है। कहीं भी चूना या किसी रंग का प्रयोग नहीं किया गया है। दरवाजे और खिड़कियाँ काफी हैं – हवा और रोशनी की कमी नहीं।'

### शब्दार्थ - टिप्पणी

**कृतकृत्य** धन्य-धन्य **पायताना** पावों को फैलाकर सोने की दिशा **शुभ्र** सफेद **खड़ाऊँ** पादुका (लकड़ी की) **मिथ्या** झूठ **आत्मस्थ** आत्मा में स्थित **एहसास** अनुभव **उद्भिज** वनस्पति **अंडज** अंडे से उत्पन्न जीव **पिंडज** गर्भ से उत्पन्न होनेवाला **ऊबड़-खाबड़** ऊँची-नीची सतह, खुरदरा **दफ्ती** मोटे कागज की पट्टिका (गत्ता) निर्निमिप – अपलक, **उद्वेलित** आन्दोलित, प्राप्ति

### स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :**

(1) लेखक कहाँ बैठा है ?

(क) सिरहाने (ख) पायतानें (ग) बीच में (घ) नीचे

(2) शैल्फ के ऊपर रखा पत्थर का टुकड़ा कैसा है ?

(क) चिकना (ख) मुलायम (ग) खुरदरा (घ) ऊबड़-खाबड़

(3) चिकने पत्थर के टुकड़े पर क्या लिखा है ?

(क) प्रेम ही भगवान हैं। (ख) हे राम! (ग) सत्य-अहिंसा (घ) ईश्वर एक है।

(4) बापू की कुटिया के कितने भाग हैं ?

(क) दो (ख) तीन (ग) पाँच (घ) चार

**2. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) लेखक ने विश्ववंद्य व्यक्ति किसे कहा है ?

(2) बापू का बिस्तरा किन वस्तुओं से निर्मित था ?

(3) बापू के तीनों बंदर इशारे से क्या कह रहे है ?

(4) हिन्दुत्त्व के नाम पर किसने अनर्थ किया ?

(5) अंतिम दिनों में बापू की सेवा कौन करता था ?

(6) थक जाने पर बापू किसके सहारे बैठते थे ?

**3. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) लेखक अपने आप को दुर्भागी क्यों समझते हैं ?

(2) लेखक ने गांधीजी के बिस्तरे को गौरवशाली क्यों कहा हैं ?

(3) गांधीजी के शैल्फ में कौन-कौन सी पुस्तकें थीं ?

(4) हे राम! की स्मृति ने लेखक को किस कठोर चट्टान पर पटक दिया ?

**4. पाँच से छः पंक्तियों में उत्तर दीजिए :**

(1) बापू की कुटिया में आकर लेखक अपना सौभाग्य क्यों मानता है ?

(2) बापू के कमरे में लेखक को क्या-क्या दिखाई देता है ?

(3) बापू के बिस्तरे को लेखक क्यों महान मानता है ?

(4) किस बात की कल्पना लेखक को भावमुग्ध कर देती है ?

**5. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) 'आदमी का दुर्भाग्य भी कभी-कभी सौभाग्य बन जाता है ?'

(2) 'यदि सच्ची राह पर हो तो तुम्हें क्रोध करने की जरूरत ही नहीं।'

(3) 'झूठ शब्दों में निहित नहीं है छल करने में है। चुप्पी साधकर भी झूठ बोला जा सकता है।'

**6. दिए गए विधानों की पूर्ति करके उचित विकल्प चुनकर पूरा वाक्य फिर से लिखिए :**

(1) अपने बिस्तरे पर बैठे बापू अपने __________को घुमा रहे हैं।

(क) काल चक्र (ख) यरवदा चक्र (ग) कलमचक्र (घ) अशोक चक्र

(2) बापू को समझने के लिए इस छोटे से शैल्फ को __________ ही होगा।

(क) भलि-भाँति देखना (ख) उचित प्रकार से देखना (ग) अच्छी तरह से देखना (घ) सूक्ष्मता से देखना

(3) इन्हीं चटाइयों पर देश-विदेश के बड़े बड़े व्यक्ति बैठते और बापू के मुख से निकले __________ का पान करते।

(क) भजन (ख) वक्तव्य (ग) भाषण (घ) वचनामृत

**7. सामासिक शब्दों का विग्रह कर समास के प्रकार बताइए :**

चरणस्पर्श, कलमदान, रत्नजड़ित, स्वर्ण-सिंहासन, भावमुग्ध, वचनामृत

**8. प्रत्यय अलग कीजिए :**

हिन्दुत्व, अर्थवाला, साहित्यिक, स्वच्छता, चटाइयाँ

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी प्रवृत्ति**

गांधी आश्रम की मुलाकात कीजिए एवं अपने अनुभव कक्षा में सुनाइए।

**शिक्षक प्रवृत्ति**

'सत्य के प्रयोग' में से गांधीजी के बचपन के कुछ अंश का कक्षा में पठन करके छात्रों को बताएँ।

•

| 3 | पुरानी चीजों के पक्ष में |
|---|---|

# पुरानी चीजों के पक्ष में

**राजेश जोशी**

(जन्म : सन् 1946)

प्रगतिशील विचारधारा के कवि राजेश जोशी का जन्म मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़ जिले में हुआ। उन्होंने शिक्षा पूरी करने पर पत्रकारिता शुरू की और कुछ सालों तक अध्यापन किया, बैंक में नौकरी की और अब स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।

अपने भावों और विचारों को व्यक्त करने के लिए कविता के अलावा कहानियाँ, नाटक, लेख, टिप्पणियाँ आदि पर कलम चलाई। लघु फिल्म के लिए पटकथा लेखन भी किया। भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी, जर्मन, रूषी भाषा में उनकी कविता के अनुवाद हुए हैं। राजेश जोशी के चार कविता संग्रह – 'एक दिन बोलेंगे पेड़', 'मिट्टी का चेहरा', 'नेपथ्य में हँसी' और 'पंक्तियों के बीच' हैं। कहानी संग्रह में 'सोमवार और अन्य कहानियों में' कपिल का पेड़', तीन नाटक 'अच्छे आदमी', 'जादू जंगल', टंकारा का गाना' सामिल हैं। आलोचनात्मक टिप्पणियोँ की किताब एक कवि की नोटबुक प्रकाशित हुई हैं। उन्हें शमशेर सम्मान, पहल सम्मान, मध्य प्रदेश सरकार का शिखर सम्मान और माखनलाल चतुर्वेदी सम्मान के साथ केन्द्रीय साहित्य अकादेमी के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राजेश जोशी की कविता में स्थानीय बोली बानी मिजाज और मौसम सभी कुछ व्याप्त है। प्रस्तुत कविता के साथ मनुष्यता को बचाये रखने के लिए निरंतर संघर्ष मिलता है। आधुनिकता के बढ़ते कदम से दुनिया के नष्ट होने का खतरा जितना प्रबल है उतना ही जीवन की संभावना की खोज में कवि बेचैन है।

---

कितनी ही बदल जाये यह दुनिया
काम आती रहती है लोगों के कुछ पुरानी चीजें हर वक्त
नानी की कहानियाँ और दादी के घरेलू इलाज के नुस्खे
काम आते रहते हैं जैसे सदियों पुराने पहाड़ और प्राचीन
और स्मृतियाँ उनके किनारे बसी सभ्यताओं की।

कम्प्यूटर और सेटेलाइट के इस युग में भी
दुनिया की हजारों सड़कों पर दौड़ती रहती हैं
हमारी पुरानी साइकिलें!
सच एक प्राचीन चीज है और हाँलाकि झूठ भी
और वक्त पर दोनों ही काम आते हैं आदमी के।
सारे बहस मुबाहिसों के बावजूद इतना तो तय है
बनिस्बत हिंसा के एक सादा सरल जीवन
ज्यादा काम आता है लोगों के!

हत्यारों का शोर इसलिए ज्यादा कि वे ज्यादा संगठित हैं
दूब कम शोर मचाती है वृक्षों से
विनम्रता कोई कायरता नहीं!
नई-नई मूर्खताओं के बावजूद बची रहती हैं
पुरानी समझदारियाँ
स्मृतियों में बची रहती हैं
थोड़ी-सी टीस और थोड़ी-सी मिठास!

## शब्दार्थ - टिप्पणी

**नुस्खे** कागज पर लिखी गई दवा एवं उसकी सेवन विधि, **सेटेलाईट** उपग्रह, **मुबाहिस** वितर्क; विवाद **बनिबस्बत** की अपेक्षा; के बदले, **दूब** एक प्रकार की घास (गुज) धरो, **टीस** कसक; रह रह कर उठनेवाली पीड़ा

## स्वाध्याय

**1. सही विकल्प चुनकर निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) इनमें से किसकी कहानियाँ पुरानी हैं ?

(क) चाची (ख) मास्टरजी (ग) नानी (घ) एक भी नहीं

(2) कम्प्यूटर और सेलेलाईट के युग में आज भी सड़कों पर क्या दौड़ रही ?

(क) साइकिल (ख) मोटरकार (ग) बैलगाड़ी (घ) इनमें से एक भी नहीं

(3) 'दूब' किसका प्रतीक है ?

(क) हत्यारों (ख) संगठितता (ग) विनम्रता (घ) सरलता

(4) सारे विवाद का केन्द्र स्थान कौन-सी बात है ?

(क) सच (ख) झूठ (ग) सच और झूठ दोनों (घ) एक भी नहीं

(5) 'कुछ पुरानी चीजों के पक्ष में' कविता में कवि का रुझान किन चीजों की ओर है ?

(क) आध्यात्मिकता (ख) सामाजिकता (ग) पुरानापन (घ) नयापन

**2. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :**

(1) कुछ पुरानी चीजों के पक्ष में कविता में कवि ने किन चीजों के मद्देनजर अपनी बात कही है ?

(2) बीमार पड़ने पर आज भी क्या काम आता है ?

(3) कुछ पुरानी चीजों के पक्ष में आधुनिकता की परिचायक कौन-सी चीजें हैं ?

(4) कवि राजेश जोशी कौन-सी चीज स्मृतियों में शेष रहने की बात कहते हैं ?

**3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पाँच छः वाक्य में दीजिए :**

(1) सड़कों पर आज भी साइकिल क्यों चलाई जाती है ?

(2) लोगों को हिंसा की बजाय सरल जीवन क्यों पसंद है ?

**4. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) 'विनम्रता कोई कायरता नहीं ।'

(2) 'बनिस्बत हिंसा के एक सादा सरल जीवन ज्यादा काम आता है लोगों को !'

**5. इस कविता में प्रयुक्त आगत ( विदेशी ) शब्दों को छाँटकर लिखिए :**

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- 'विनम्रता कोई कायरता नहीं' – इस पंक्ति को समझाइए।
- आधुनिक चीजों की उपलब्धियाँ और पौराणिक चीजों की उपलब्धियों की तुलना कीजिए।
- नई-नई मूर्खताओं के बावजूद बची रहती हैं पुरानी समझदारियाँ – इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

1. 'पुरानी चीजों की उपलब्धियाँ मूल्यवान हैं' – इस विषय पर कहानी सुनाइए।

●

# 4 चन्द्रशेखर आज़ाद

**सद्‌गुरु शरण अवस्थी**

(जन्म : सन् 1901, मृत्यु : सन् 1973)

सद्‌गुरुशरण अवस्थी मूलत : नाट्यकार निबंधकार एवं समीक्षक थे। कानपुर में बी. एन. एस. डी. कालेज के आचार्य थे। श्री अवस्थी का लेखन उनके जीवनकाल से जुड़ा हुआ है जो मूलत: प्रेरणादायक है।

'तुलसी के चार पल' तथा 'भ्रमित पथिक' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने चन्द्रशेखर आज़ाद से जुड़ी हुई स्मृतियों के माध्यम से उनके जीवन व्यक्तित्व तथा उनकी निडरता पर दृष्टिपात किया है। असाधारण प्रतिभा के धनी चन्द्रशेखर आज़ाद शक्ति के पुंज थे। उन्हें अपने आप पर पूर्ण विश्वास था। आकर्षक व्यक्तित्व, निडर, आत्म निर्भर, मितभाषी इस वीर पुरुष को स्वर्गीय कहने से लेखक को बड़ी चोट पहुँचती है। उनसे जुड़ी अनेक सूक्ष्म बातों पर लेखक ने प्रकाश डाला है।

---

उन्हें स्वर्गीय कहते चोट लगती है। न जाने उनकी स्मृति आज क्यों सजग हो उठी। भूलना एक महान् गुण है। वह समय का विस्तार है। स्मृति के बोझ का वह विश्राम हैं। शरीर में लगे हुए खरोचे, देह में लगे हुए घाव, समय के सहारे सूखते और भरते हैं। मन पर लगी हुई चोट, हृदय पर लगा हुआ आघात विस्मृति के सहारे ही ठीक हो पाता हैं। स्मृति की तीव्रता शास्त्रों के अनुशीलन और पुस्तकों के स्वाध्याय से मिलती है, और विस्मृति का वरदान सन्तों के सत्संग और विराग के अनुष्ठान से प्राप्त होता है। यदि संसार में विस्मृति ,स्वत:सिद्ध न हो, तो लोग अपने-अपने घाव प्रतिदिन कुरेदते रहें और जीवन कोढ़ की खाज हो जाए।

क्षण आते हैं और चले जाते हैं। उनके आवर्तन में स्मृतियों की छाप लगती और धुलती चलती है। धुले हुए पाटव के भीतर से भी कुछ आकार झाँककर रूपरेखा से परिचय कराया करते हैं। ये आकार क्षणों के शृंगार भी हो सकते हैं, चाहे स्वत:कितने ही सुखमय हों और वे आकार क्षणों के अभिशाप भी हो सकते हैं, चाहे स्वत: कितने ही सुखपूर्ण हों। वे व्यक्ति, वे घटनाएँ, वे परिस्थितियाँ धन्य हैं; जिनकी अमिट छाप क्षणों का श्रृंगार है। उनके लिए विस्मृति समय के प्रवाह को रोककर स्वयं घण्टों प्रतीक्षा करती है। मन में सन्तत्व और चिराग की स्वत: वर्षा हुआ करती है।

चन्द्रशेखर एक ऐसे ही व्यक्ति, ऐसी ही घटना और ऐसी ही परिस्थिति थे। उनकी स्मृति मन का पुण्य है।

मेरी न जाने कितनी बार उनसे भेंट हुई होगी। मेरे छोटे भाई के मित्र होने के कारण वे मुझे हमेशा भइया कहा करते थे। किसी के घर, किसी सड़क पर, किसी रेलवे स्टेशन पर, जिस हालत में भी वे दिन के किसी क्षण में मुझे मिले। उन्होंने हमेशा ही मेरे प्रति अग्रज का सम्मान प्रदर्शित किया। क्रान्तिकारी लोग वचन के बड़े कृपण और मंन्तव्य के बड़े गोप्य होते थे, पर उन्होंने अपना समझकर मुझसे कभी कोई दुराव नहीं रखा। उन्हें भय बिलकुल न था। वे निश्चिन्त थे कि वे जीते-जी किसी के हाथों नहीं आ सकते। कटि से लटकते हुए दो माउज़र पिस्तोल और कन्धे पर पड़ी हुई कारतूस की पेटी पर उनका पूरा भरोसा था। जिस किसी के घर हम लोगों ने उन्हें छिपाकर रखने की व्यवस्था की, उसे वे हमेशा निश्चिन्त रखते थे। उन्होंने स्पष्ट कह रखा था कि वे चार घर दूर पहुँच कर तमंचे बजाएँगे जिससे उनके आश्रयदाता पर कोई आपत्ति न आ सके।

उन्होंने महात्मा गांधी की अहिंसा की निस्सारता पर मुझे घण्टों समझाया होगा, और मैंने उनकी हिंसा पद्धति की खुलकर बुराई की होगी, पर हम दोनों का पारस्परिक आदर बढ़ता ही गया, क्योंकि हम दोनों अपने विचार में ईमानदार थे। मेरा विचार केवल तर्क का शृङ्गार और मानसिक प्रयत्य मात्र था। उनके व्यवहार पक्ष की शक्ति मुझमें न थी। उनका विचार कर्म की शोभा और योगक्षेम का प्रकाश था। उनके व्यक्तित्व मे इतना बल था कि मेरी इच्छा के प्रतिकूल वे मुझसे काम ले लिया करते थे और

उनकी बात पूरी करने में मैं अपने को गौरवान्वित अनुभव करता था।

क्रांतिकारियों के कई विस्फोट कार्य और मेरे परिचय के अन्तरकाल में ही हुए, पर उन पर बातें करने और पूछने का मुझे संभव न था जो भी थोड़ा बहुत वे संकेत कर देते थे, मेरी मुद्रा में उसका अनुमोदन न देखकर प्रसंग टल जाया करता था। उनका शरीर शक्तिका पुंज था, और उनकी आत्मनिर्भरता की प्रतिकृति। उनकी स्फीत शिराओं में उष्ण रक्त का भरपूर प्रवाह या। उनके कार्यों की शोभा मुखरता और वाणी की शोभा मौन थी। न जाने कितने रूपों में मैंने उन्हें देखा होगा। कलंगीदार पंजाबी पगड़ी और ढीले सलवार में वे जितने अच्छे लगते थे, खद्दर के कुरते और बंगाली धोती में भी वे वैसे हो खिलते थे। साधारण तया वे खुले गले का कोट और दोनों पैरों को कछौटे से ढकनेवाली धोती पहनते थे। मैंने उन्हें सूट और हैट में भी देखा है और पूरे पंजाबी परिधान में भी। हर प्रकार के वस्त्र के भीतर वे खिलते थे।

कठोर और हिंसापूर्ण संदर्भ के भीतर उनका मक्खन सदृश कोमल मन मैंने अच्छी तरह देखा है। उनकी वीरता में जो उग्रता थी, उसका लक्ष्य राजनीतिक अपराध था और भारत को स्वतन्त्र करने की बलवती आकांक्षा थी। उनके साहस में जो ध्वंस की सूचना थी, उसका आलम्बन विदेशियों के पशुबल की अकड़ थी। अपने देश के जो निरीह प्राणी उनके क्रांति के मार्ग में आने के कारण नष्ट हो जाते थे, उनके लिए चंन्द्रशेखर के पास अपार सहानुभूति और छलकते हुए आँसू थे। पर उनकी सार्वजनिक कार्यपद्धति में दया का दूसरा नाम कायरता और क्षमा का दूसरा नाम आपत्ति था। मेरे जैसे उदात्त वृत्तियों की दुहाई देने वाले व्यक्तियों को उन्होंने परिणाम द्वारा कई बार प्रमाणित कर दिया था कि उनकी ही कार्य-पद्धति समीचीन हैं।

ईश्वर, धर्म और पाप-पुण्य विषयक विवाद के लिए उनके पास समय न था। इस तर्क-वितर्क को वे अवकाश का वाक्विलास समझते थे। मैं कह नहीं सकता कि उनकी इन विषयों के सम्बन्ध में क्या मान्यताएँ थीं। पर यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि जिस मान्यता से मन में हिचक, शैथिल्य, कार्यभीरुता, बुद्धिवाद, पलायनवाद को अवसर मिले, उसके वे पूर्ण प्रतिकूल थे।

हाँ, पर पाप और पुण्य की अनेकार्थी और आज की व्यापक व्याप्ति को चाहे वे न मानते हों-और कादाचित् नहीं भी मानते थे- परन्तु जीवन की पवित्रता, सामाजिक निर्मलता, वैयक्तिक उज्जवलता तथा नैतिक उच्चता के वे बड़े पोषक थे। कोई यह विश्वास नहीं कर सकता कि हत्याओं को बेधड़क कर डालनेवाले हाथ स्पर्श में इतने कोमल और नागरिक हो सकते हैं।

मैं जब इन पंक्तियों को लिख रहा हूँ, तब भी उनकी मनुहार मेरे सामने घूम रही है। कितने अधिक व्यक्तियों में उनकी ममता की जड़ें जमी हैं, यह आज उनके उन्मूलित होने के बाद ज्ञात हो रहा है। राजनैतिक उन्हें सराहें और स्वंतन्त्रता प्राप्ति का अग्रदूत समझकर उनकी प्रतिमा बनाकर अर्चना करें। इतिहासकार अपनी पुस्तकों को उनकी प्रशंसा से सजावें और उनके महत्त्व का निर्णय करें, साहित्यक उन पर उपन्यास, कहानियाँ और काव्य की रचना करके उन्हें अमर बना दें, सम्पादकगण उनापर लेख और टिप्पणियाँ लिखकर उनके साथी और सहकारी सभाओं में भाषण दें और एकांत में आँसू बहावें; परन्तु मेरे ऐसे अलग देखनेवाले किन्तु निकट अनुभव करनेवाले, कर्मक्षेत्रों से कोसों दूर, प्राणी केवल धवल कागज पर कुछ काली सतरें खींचने के अतिरिक्त कर ही क्या सकते हैं ? इन पंक्तियों को उकसानेवाले भी वही हैं, उन्हीं की विस्मृति तक पहुँचने के लिए उन्हीं की स्मृति को आज की पंक्तियाँ अर्पित हैं।

### शब्दार्थ-टिप्पणी

**स्मृति** याद **सजग** जागरुक **आघात** चोट **पाटव** पटुता, दृढ़ता **कोढ़** सफेद दाग **खाज** खुजली, **ध्वंस** विनाश, **उन्मूलन** जड़ से उखाड़ना **कोस** अन्तर की माप (दो मील या 3.2 किमी) **उकसाना** भड़काना **समीचीन** समुचित **शैथिल्य** ढीलापन, शिथिलता

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर लिखिए :**

(1)हृदय की चोट किससे ठीक होती है ?

(क) दवाई से (ख) स्मृति से (ग) विस्मृति से (घ) वरदान से

(2) चन्द्रशेखर आज़ाद लेखक को क्या कहकर बुलाते थे ?

(क) भइया कहकर (ख) भाई साहब कहकर (ग) बड़ेभाई कहकर (घ) दादा कहकर

(3) लेखक ने चन्द्रशेखर आज़ाद के मन को किसके समान बताया हैं ?

(क) नारियल के समान कठोर (ख) फूल की तरह कोमल

(ग) मक्खन सदृश कोमल (घ) पत्थर के समान कठोर

(4) चन्द्रशेखर आज़ाद के लिए दया का दूसरा नाम क्या था ?

(क) सहानुभूति (ख) कायरता (ग) साहस (घ) वीरता

(5) क्रांतिकारी लोग कैसे होते थे ?

(क) वचन के कृपण व मन्तव्य के बड़े गोप्य

(ख) वचन के पक्के व मन्तव्य के बड़े गोप्य

(ग) वचन के कृपण व मन्तव्य के स्पष्ट

(घ) वचन के कच्चे व मन्तव्य के बड़े स्पष्ट

**2. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) स्मृति की तीव्रता कैसे प्राप्त होती है ?

(2) विस्मृति का वरदान कैसे मिलता है ?

(3) चन्द्रशेखर आज़ाद किन गुणों के पोषक थे ?

(4) लेखक ने किन व्यक्तियों, घटनाओं और परिस्थितियों को धन्य माना है ?

(5) चन्द्रशेखर आज़ाद को साहित्यकार कैसे अमर बना सकते है ?

**3. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :**

(1) शरीर और मन पर लगी चोट में क्या फर्क है ?

(2) लेखक कब अपने आप को गौरवांवित अनुभव करते थे ?

(3) चन्द्रशेखर आज़ाद के विषय में निर्विवाद रूप से क्या कहा जा सकता हैं ?

(4) लेखक और आज़ाद के बीच पारस्परिक आदर क्यों बढ़ता गया ?

**4. पाँच से छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :**

(1) जीवन में क्षण की क्या विशेषता है ?

(2) चन्द्रशेखर आज़ाद की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(3) चन्द्रशेखर आज़ाद किन वस्त्रों में खिल उठते थे ?

(4) चन्द्रशेखर आज़ाद की कार्यप्रणाली के विषय में लेखक क्या कहते हैं ?

**5. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(क) विस्मृति के न रहने पर जीवन कोढ़ की खाज़ हो जाएगा।

(ख) भूलना एक महान गुण है।

**6. (1) विलोम शब्द लिखिए :**

स्वर्ग, विराग, स्मृति, कृपण, प्रतिकूल ,उऋण

**(2) समानार्थी शब्द लिखिए-**

अभिशाप, कटि, ध्वंस, अपराध, निरीह

**7. (1) उपसर्ग अलग कीजिए :**

विस्मृति, अभिशाप, आघात, अमिट

**(2) प्रत्यय अलग कीजिए :**

राजनीतिक, कायरता, व्यक्तित्व, साहित्यिक, स्वर्गीय

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- चन्द्रशेखर आज़ाद के समकालीन क्रान्तिकारियों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए। चित्र के साथ हस्तलिखित अंक तैयार कर कक्षा में लगाइए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेनेवाले गुजरात के क्रान्तिवीरों के विषय में जानकारी प्राप्त कर कक्षा में सुनाएँ।

# हिंदी के विविध रूप

हमारा भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ बंगला, असमिया, उड़िया, हिन्दी, मराठी, गुजराती, कश्मीरी, तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम, कोंकणी, सिंधी, पंजाबी, इत्यादि भाषाएँ बोली जाती हैं। हिन्दी देश के एक बड़े भू-भाग में बोली जाती है। हम जिसे आज 'हिन्दी' कहते हैं, वास्तव में तो वह हिन्दी की एक बोली-खड़ीबोली का विकसित रूप है। यह दिल्ली, मेरठ, सहारनपुर के आसपास बोली जाने वाली बोली है। इस खड़ी बोली में अन्य बोलियों के तत्त्वों का समायोजन करके हिन्दी भाषा बनी है। हिन्दी में कुल 18 बड़ी बोलियाँ हैं जो उसे बोले जाने वाले क्षेत्र के लोगों की मातृभाषा हैं; जैसे - हरियाणी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मगही मैथिली, कन्नौजी, बुंदेली, मेवाती, मारवाड़ी, जयपुरी, गढ़वाली इत्यादि। बोलियों का क्षेत्र सीमित होता है और भाषा का विस्तृता बोलने के क्षेत्र की दृष्टि से हिन्दी को हम तीन रूपों में समझ सकते हैं :

(क) जनपदीय या आँचलिक (ख) राष्ट्रीय और (ग) अंतरर्राष्ट्रीय

(क) जिसे हम हिन्दीभाषी क्षेत्र कहते हैं वह बड़ा व्यापक है। भौगोलिक दृष्टि से एक ओर उत्तरांचल प्रदेश से लेकर हिमाचल, दिल्ली -हरियाणा, राजस्थान तक तो दूसरी ओर उत्तर प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश से दक्षिण में छत्तीसगढ़ तक फैला हुआ है। यहाँ के निवासी अपने - अपने क्षेत्रों में दैनिक व्यवहार में अपनी-अपनी बोलियाँ बोलते हैं, औपचारिक रूप से हिन्दी का प्रयोग करते हैं। इस रूप में हिन्दी की बोलियाँ जनपदीय भाषा की भूमिका निभाती हैं। इस विस्तृत भूभाग से बाहर देश के बड़े नगरों में हिन्दी का एक अलग रूप ही दिखाई देता है, जिसपर स्थानीय भाषा की शब्दावली, रूप रचना का प्रभाव दिखाई देता है, हम ऐसी को हिन्दी उन शहेरों के नाम से पहचानते हैं; जैसे - बम्बइया (मुंबई)हिन्दी; कलकतिया (कोलकाता) हिन्दी, हैदराबादी (हैदराबाद) हिन्दी आदि। हैदराबाद, बीदर, गुलबर्गा आदि में बोली जाने वाली हिन्दी को दक्कनी (दक्खिनी) हिन्दी भी कहते हैं।

(ख) हिन्दी का राष्ट्रीय रूप खड़ी बोली पर आधारित है, जिसका मानकीकरण किया गया है। यह पूरे देश के लिए औपचारिक भाषा है, इसे 'मानक हिन्दी' कहते हैं। यह हिन्दीभाषी राज्यों में राजकाज की भाषा के रूप में भी प्रयोग की जा रही है। वास्तव में खड़ी बोली हिन्दी का विकास उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ किन्तु इसका प्राचीनतम रूप 'पुरानी हिन्दी' के नाम से दसवीं - ग्यारहवीं शताब्दी में मिलता है। तेरहवीं शताब्दी के अंत भाग में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में कविताएँ (पहेलियाँ-मुकरियाँ) लिखी; जैसे-

**हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़ी थी।**
**राजाजी के बाग में, दुशाला ओढ़े खड़ी थी ।**

**या**

**एक थाल मोती से भरा । सबके सिर पर औंधा धरा।**
**चारों और वह थाली फिरे । मोती उससे एक न गिरे।**

अमीर खुसरो ने इस भाषा के लिए 'हिन्दी' तथा 'हिन्दुई' शब्द का प्रयोग कई स्थलों पर किया है।

हिन्दी के आरंभिक विकास में नाथों, सिद्धों तथा संतों का बहुत योगदान रहा। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी को पूरे भारत में पहुँचाया। अहिन्दी क्षेत्रों के कण्हपा (कर्नाटक), नामदेव और तुकाराम (महाराष्ट्र), नरसी मेहता तथा प्राणनाथ

(गुजरात) आदि ने भी 'साहित्यिक हिन्दी' के विकास में विशेष योगदान दिया। इनकी रचनाओं में हिन्दी की विभिन्न बोलियों के अतिरिक्त पंजाबी, फारसी भाषा का प्रभाव भी है। इसी समय हिन्दी तीर्थस्थानों वाणिज्य व्यवहार के क्षेत्र में भी व्यवहृत हुई और एक 'संपर्क भाषा' के रूप में उसका विकास हुआ।

स्वाधीनता पूर्व इस भाषा ने विभिन्न राष्ट्रीय आंदोलनों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंगाल में केशवचंद्र सेन और सुभाषचंद्र बोस; महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक; गुजरात में स्वामी दयानंद और महात्मा गांधी आदि ने इसके सार्वदेशिक रूप के कारण इसे 'राष्ट्र भाषा' के लिए उपयुक्त मानते हुए समूचे देश के लिए इसे अपनाने पर जोर दिया। महात्मा गांधी ने इस राष्ट्रभाषा को 'हिन्दुस्तानी' नाम दिया। इसमें अरबी-फारसी तथा संस्कृत के प्रचलित शब्दों को बोचचाल की भाषा के रूप में स्वीकार लिया। इस समय शैली की दृष्टि से हिन्दी के दो रूप प्रमुख दिखते हैं। (1) संस्कृतनिष्ठ हिन्दी और (2) अरबी-फारसी मिश्रित हिन्दी। भारतीय स्तर पर हिन्दी संपर्क भाषा है।

स्वाधीनता के बाद 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को संघ (भारत) की 'राजभाषा' घोषित किया गया। हिन्दीभाषी प्रदेशों की मुख्य राजभाषा हिन्दी है। अहिन्दीभाषी प्रदेशों में वहाँ की अपनी प्रादेशिक भाषाएँ 'राजभाषा' बनी हैं; जैसे - गुजरात में गुजराती, महाराष्ट्र में मराठी, तमिलनाडु में तमिल तथा कर्नाटक में कन्नड़ इत्यादि। कुछ राज्यों ने हिन्दी या उर्दू को अपनी 'दूसरी राजभाषा' घोषित किया हैं।

पूरे भारत के स्तर पर हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक, वाणिज्यिक एवं प्रशासनिक आदि विभिन्न कार्यक्षेत्रों तक फैला हुआ है। इनमें सामाजिक, साहित्यिक और शैक्षिक क्षेत्रों की भाषा प्राय; जनभाषा के अधिक निकट है जबकि वैज्ञानिक, वाणिज्यिक, प्रशासनिक आदि क्षेत्रों की भाषा तकनीकी भाषा है। इस दृष्टि से हिन्दी के मुख्यत: दो रूप दिखाई देते हैं - (1) जन व्यवहार की हिन्दी (2) प्रयोजनरक कार्यक्षेत्रों की हिन्दी।

**(1) जन व्यवहार की हिन्दी के क्षेत्र :**

सामाजिक संदर्भों तथा व्यावहारिक क्षेत्रों में प्रयोग होने वाली हिन्दी के मौखिक तथा लिखित दो रूप मिलते हैं। कार्यक्षेत्र के अनुरूप इनका रूप भी अलग-अलग होता हैं। जनव्यवहार की हिन्दी के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं :

(1) सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों और सामान्य जनता के बीच संवाद।

(2) सभा-समारहो का संचालन।

(3) किसी सूचना की उद्घोषणा।

(4) चुनाव प्रचार के व्याख्यान।

(5) किसी मैच या घटना का आँखों देखा हाल।

(6) समाचार लेखन या वाचन आकाशवाणी, टेलीविजन।

(7) समस्या निराकरण हेतु विभिन्न विभागों - बैंक, पोस्ट ऑफिस या रेलवे आदि से संबंधित पत्र व्यवहार।

(8) फिल्म आदि से संबंधित पत्र व्यवहार इनकी शैली औपचारिक, अनौपचारिक या आत्मीय हो सकती हैं।

**(2) प्रयोजनपरक कार्यक्षेत्रों की हिन्दी :**

किसी भी देश के शासन के लिए स्वीकृत भाषा राजभाषा कहलाती है। रजभाषा के रूप में हिन्दी भाषा कुछ विशिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होती है। हिन्दी के इस रूप को 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' के रूप में जाना जाता है। इसकी विस्तृत चर्चा अगले प्रकरण में की जाएगी।

(ग) आज हिन्दी का प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हो रहा है। भारत के बाहर फीज़ी, मॉरिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद और गुयाना आदि देशों में भारतीय मूल, के निवासी सांस्कृतिक महत्त्व की दृष्टि से हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। यूरोप के देशों, आस्ट्रेलिया और एशिया महाद्वीप के अनेक देशों मे जैसे चीन, जापान, कोरिया, आदि में विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा हैं। नेपाल, म्यांमार बांग्लादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, मलेशिया, सिंगापुर आदि देशों में भारतीय बड़ी संख्या में व्यापार करते हैं। उनके जीवन में हिन्दी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

संक्षेप में, आज हिन्दी साहित्यिक भाषा होने के साथ-साथ भारत की 'राजभाषा' और संपर्क भाषा भी है। यह हमारी सामाजिक सांस्कृतिक एकता का माध्यम है। हिन्दी में देश की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति हुई है।

**स्वाध्याय**

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :**

(1) राजभाषा से क्या तात्पर्य है ?

(2) हिन्दी किन-किन राज्यों की मुख्य राजभाषा है ?

(3) हिन्दी भारत की राजभाषा कब बनी ?

(4) किन-किन देशों में भारतीय मूल के लोग हिन्दी का प्रयोग कर रहे है ?

**2. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :**

(1) हिन्दी का जनपदीय रूप (2) हिन्दी का शैलीगत स्वरूप

**3. सविस्तार उत्तर दीजिए :**

(1) खड़ी बोली हिन्दी के आरंभिक विकास का परिचय दीजिए।

(2) स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी का क्या महत्त्व था ?

(3) हिन्दी के जनव्यवहार के क्षेत्र कौन-कौन से हैं ?

●

# 5 शिक्षक के नाम पत्र

**अब्राहम लिंकन**

(जन्म : सन् 1809, मृत्यु : सन् 1865)

अब्राहम लिंकन का जन्म अमेरिका में केन्टक राज्य के होडनविले के फरवरी सन् 1809 में एक अत्यंत गरीब परिवार में हुआ था। वे अपने प्रयत्न से विभिन्न स्थानों से पुस्तकें मंगवाकर रात को चूल्हे की आग के प्रकाश में पढ़कर ज्ञान प्राप्त करते थे। स्वअध्ययन द्वारा पढ़ाई करके एलिनौस में वकील का पदभार संभाला। सन् 1854 में रिपब्लिकन पार्टी का नेतृत्व किया तथा 1860 में अमरीका के 16वें राष्ट्रपति बने।

बचपन से ही शक्तिशाली लिंकन ने देश को सदा दो भागों में बँटने से बचाया तथा भयंकर रूप से अमानवीय गुलामी प्रथा से भी देश को मुक्ति दिलाई। इसीलिए इन्हें 'आजादी का मसीहा' कहा जाता हैं।

यह पत्र अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने पुत्र के अध्यापक को लिखा है- जिसमें अध्यापक के द्वारा किसी विद्यार्थी को ईमानदारी , विवेकशील, परिश्रमी, धैर्यवान, आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ अपने विचार स्वयं बनाने पर बल दिया गया हैं। ताकि उसको अपने आप पर भी पूरा विश्वास हो। पत्र में वर्णित शाश्वत जीवन मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं। यह मूल पत्र का हिन्दी पद्य में रूपांतरित रूप है। पत्र शैली में लिखा गया यह पाठ प्रेरणादायक है।

---

आदरणीय गुरुजी,
सभी आदमी न्यायप्रिय नहीं होते
नहीं होते सभी सत्यनिष्ठ
मेरा बेटा सीखेगा यह कभी न कभी।
मगर उसे यह भी सिखाइए:
दुनिया में हर बदमाश की तरह
होता है एक साधुत्तचरित पुरुषोतम भी
स्वार्थी राजनैतिक होते हैं दुनिया में जैसे,
होते हैं उसी तरह पूरी जिन्दगी निछावर करनेवाले नेता भी।

होते हैं घात में दुश्मन अगर
तो सहायक मित्र भी होते हैं
मैं जानता हूँ
सभी बातें झटपट नहीं सिखाते बनती...
फिर भी, हो सके तो उसके मन में जमाइए,
पसीना बहाकर कमाया हुआ एक पैसा तक
फ़ोकट में मिले हंडे से ज्यादा मूल्यवान है।
सिखाइए उसे कैसे झेलते हैं हार
और सिखाइए जीत की खुशी को स्वयं से मनाए।

अगर आप में ताकत हो तो
उसे इर्ष्या–द्वेष से दूर रहना सिखाइए;
सिखाइए उसे अपना हर्ष संयम से दिखाए।
कहना, गुंडों से मत डर जाना, क्योंकि
उन्हें झुकाना सबसे आसान होता है।
जितना बन पड़े दिखाया कीजिए उसे
पुस्तक–भंडार का अद्‌भुत वैभव,
पर साथ ही साथ
दीजिए उसके जी को जरा फुरसत
कि सृष्टि की सनातन सुन्दरता महसूस कर पाए।
देख पाए वह
चिड़ियों की गगन उड़ान...
सुनहली धूप में मँडराते भौंरे...
और हरीभरी पहाड़ी की ढलान पर
झूमते नन्हें–नन्हें फूल।
पाटशाला में उसे सबक मिले;
बेईमानी से पाई सफलता से
सीधे–सीधे टकराई असफलता श्रेयस्कर है।
यह सिखाइए कि
अपने खयाल, अपनी सूझ–बूझ पर
पक्का विश्वास रखे वह,
भले ही सब लोग उसे गलत ठहराएँ।
वह भलों के साथ भलाई बरते और
टेढ़ों को सबक सिखाए।
अगर मेरे बेटे के दिमाग में जमाते बने तो देखिए;
विजय के झंडे के नीचे खड़े होने को दौड़ती भीड़ में
शामिल न होने का साहस जुटाए।
और यह भी समझाइए उसे
कि सुने सबकी, हर एक की...
पर छान ले उसे सत्य की छलनी में
और छिलना फेंककर

ग्रहण करे विशुद्ध सार।
बन पड़े तो उतारिए उसके मन में
हँसते रहो हृदय का दु:ख दबाकर।
कहिए कि आँसू बहाते शरमाए नहीं वह...
सिखाइए उसे,
ओछेपन को मानना
और चाटुकारी से सावधान रहना।
उसे पक्के–पूरी तरह समझाइए कि
खूब कमाई करे ताकत और अक्ल की लागत से,
लेकिन कभी भी न बेचे अपना हृदय, अपनी आत्मा
धिक्कारती हुई आती है भीड़ अगर,
तो अनदेखा करना सिखाइए उसे,
और लिखिए उसके हृदय पर
जो सत्य जान पड़े, न्यायोचित लगे
उसकी खातिर धरती में गड़ाकर पाँव लड़ता रहे।

उसे ममता दीजिए मगर
लाड़ करके मत बिगाड़िए
आग में जल–तपकर निकले बिना
लोहा मजबूत फौलाद नहीं बनता।
उसे आदत डालें कि
अधीर होने का धीरज सँजोए,
और धीरज से काम ले वह
अगर दिखानी है बहादुरी.......
हमें विश्वास चाहिए स्वयं का मजबूत
तभी जमेगी उदात्त श्रद्धा मनुष्य जाति के प्रति।
क्षमा कीजिए गुरुजी ! मैं बहुत बोल रहा हूँ,
बहुत–कुछ माँग रहा हूँ...
फिर देखिए... जितना बने, कीजिए जरूर,
मेरा बेटा
बहुत–बहुत प्यारा बच्चा है, भाई !

– आपका...

**अब्राहम लिंकन**

## शब्दार्थ-टिप्पणी

**श्रेयस्कर** मंगलकारी, **सबक** पाठ, सीख, **चाटुकारी** चापलूसी, **लागत** पूंजी की रकम, **अधीर** उतावला, **सत्यनिष्ठ** सत्य में विश्वास रखने वाला, सत्यवादी, **साधुचरित** स जन, **छिलना** छलनी से नीचे आई गई बेकार सामग्री

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर लिखिए :**

(1) अब्राहम लिंकन ने यह पत्र किसको लिखा था ?

(क) अपने पुत्र को (ख) अपने शिक्षक को (ग) पुत्र के शिक्षक को (घ) अपने मित्र को

(2) किसको झुकाना सबसे आसान होता है ?

(क) नेता (ख) गुंडा (ग) शिक्षक (घ) मित्र

(3) जीत की खुशी किसके साथ मनानी चाहिए ?

(क) मित्र के साथ (ख) रिश्तेदारों के साथ (ग) स्वयं के साथ (घ) पड़ोसी के साथ

(4) सत्य और न्याय के लिए क्या करना चाहिए ?

(क) मर मिट जाना चाहिए (ख) भागना चाहिए (ग) छिप जाना चाहिए (घ) संघर्ष करना चाहिए

**2. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) मेहनत से कमाया हुआ एक पैसा किससे ज्यादा मूल्यवान हैं ?

(2) बालक को पाठशाला से क्या सबक लेना चाहिए ?

(3) बालक को किस पर पूर्ण विश्वास बनाये रखना चाहिए ?

(4) दूसरों के साथ बालक को कैसा व्यवहार करना चाहिए ?

(5) बालक को किससे सावधान रहना चाहिए ?

**3. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) लिंकन का पुत्र कभी न कभी क्या देखेगा ?

(2) दुनिया में किस प्रकार के लोग होते हैं ?

(3) काव्य में वर्णित प्राकृतिक सौन्दर्य को लिखिए।

**4. पाँच से छः पंक्तियों में उत्तर लिखिए :**

(1) लिंकन अपने पुत्र के अन्दर कौन-कौन से गुण विकसित करना चाहते थे ?

(2) लिंकन अपने पुत्र को कैसा बनाना चाहते थे ?

(3) अब्राहम लिंकन ने यह पत्र किसको ध्यान में रखकर लिखा होगा, अपने पुत्र या उसके शिक्षक को, तर्कपूर्ण उत्तर लिखिए।

(4) आप को पत्र का कौन-सा अंश अच्छा लगा ? क्यों ?

(5) अब्राहम लिंकन क्यों चाहते हैं कि उनका पुत्र पुस्तकों के भण्डार को जाने ?

**5. ( 1 ) विलोम शब्द लिखिए :**

असफलता, हर्ष, संयम, झुकाना, विशुद्ध

**( 2 ) सामासिक शब्दों का विग्रह करके समास का प्रकार बताइए :**

पुरुषोत्तम, पाठशाला, न्यायोचित, ईर्ष्या-द्वेष

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- गुरुभक्ति तथा गुरुमहिमा से संबंधित दोहे, श्लोक और कविता एकत्रित करके भित्ति पत्रिका बनाएँ तथा कक्षा में लगाएँ

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- यह कविता पत्र अब्राहम लिंकन ने 150 वर्ष पूर्व लिखी थी इसमें कुछ शाश्वत जीवन मूल्यों की बात की गई हैं, उनकी सार्थकता आज भी हैं, यह छात्रों को बताएँ।

●

# 6 भारतमाता की जय

**पं. जवाहरलाल नेहरू**

(जन्म : सन् 1889, मृत्यु : सन् 1964)

पं. जवाहरलाल नेहरू का जन्म इलाहाबाद शहर में हुआ था। पिता पं मोतीलाल नेहरू पेशे से वकील थे। जवाहलाल की शिक्षा इंग्लैंड में हुई थी। स्वदेश आने के बाद वे गांधी जी के साथ स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गये। इस कार्य के लिए वे कई बार जेल गये। उनकी शक्ति साहस एवं लोकप्रियता से आकर्षित होकर महात्मा गाँधी ने उनमें पूर्ण विश्वास करते हुए उनको अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने तथा आजीवन उस पद पर बने रहे।

विश्वशान्ति के प्रखर हिमायती नेहरूजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे कुशल राजनीतिज्ञ गंभीर विचारक तथा सफल साहित्यकार थे। मेरी कहानी, 'विश्व इतिहास की झलक', 'भारत एक खोज (डिस्कवरी ऑफ इंडिया)' इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत लेख में अनपढ़ ग्रामीण लोग 'भारतमाता की जय' का नारा तो लगाते हैं किन्तु भारतमाता के सच्चे स्वरूप तथा उनकी वत्सलता से अनजान हैं। उनकी उस अज्ञानता को लेखक के द्वारा दूर करके वास्तविकता से परिचित करने का प्रयास हैं।

---

रात हो गई थी। हम तेजी से रोहतक-दिल्ली रोड की ओर बढ़े, क्योंकि उस रात की हमें दिल्ली पहुँच कर गाड़ी पकड़नी थी। नींद मुझे बुरी तरह घेर रही थी। यकायक हमें रुकना पड़ा, क्योंकि बीच सड़क पर आदमी और औरतों की भीड़ बैठी थी। कुछेक के हाथों में मशालें थीं। वे आगे बढ़कर हमारे पास आये और जब उन्हें सन्तोष हो गया कि हम कौन हैं, तब उन्होंने बताया कि दोपहर से वे वहाँ बैठे-बैठे इंतजार कर रहे हैं। वे सब हृष्ट-पुष्ट जाट थे। उनमें ज्यादातर छोटे-मोटे जमींदार थे। उनसे बिना थोड़ी-बहुत बातचीत किए आगे बढ़ना मुमकिन नहीं था। हम बाहर आये और रात के धुंधलेपन में हज़ारों या इससे भी ज्यादा जाट मर्दों और औरतों के बीच बैठ गये।

उनमें से एक चिल्लाया, 'कौमी नारा!' और हज़ारों गलों ने मिलकर जोश के साथ तीन बार चिल्लाकर कहा- वन्देमातरम्! और फिर उन्होंने 'भारतमाता की जय' के नारे लगाए।

''यह सब ' 'वन्देमातरम्' और 'भारतमाता की जय' किसलिए हैं ?'' - मैंने पूछा।

कोई उत्तर नहीं। पहले उन्होंने मुझे घूर कर देखा और फिर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। दिखाई पड़ता था कि वे मेरे सवाल करने से कुछ परेशान हो उठे हैं। मैंने सवाल दोहराया - ''बोलिए, ये नारे लगाने से आपका क्या मतलब है ?'' फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। उस जगह के अधिकारी कांग्रेस -कार्यकर्ता कुछ खिन्न-से हो रहे थे। उन्होंने हिम्मत करके सब बातें बतानी चाही; लेकिन मैंने उन्हें प्रोत्साहन नहीं दिया।

''यह 'माता' कौन है, जिसको आपने प्रणाम किया है और जिसको जय के नारे लगाए हैं ?'' - मैंने फिर सवाल किया। वे फिर चुप और परेशान-से हो रहे। ऐसे अजीब सवाल उनसे कभी नहीं किये गये थे। सहज भाव से उन्होंने सब बातों को मान लिया था। जब उनसे नारे लगान के लिए कहा जाता था, वे नारे लगा देते थे। इन सब बातों के समझने की उन्होंने कभी कोशिश नहीं की। कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने नारे लगाने के लिए कहा तब वे उज्र कैसे कर सकते थे ? वे तो खूब जोर से पूरी ताकत लगाकर चिल्ला देते थे। बस, नारा अच्छा होना चाहिए। इससे उन्हें खुशी होती थी और शायद इससे उनके प्रतिद्वन्द्वियों को कुछ डर भी होता था।

अब भी मैंने सवाल करना बन्द नहीं किया। बेहद हिम्मत करके एक आदमी ने कहा कि 'माता' का मतलब 'धरती' से है। उस बेचारे किसान का दिमाग धरती की ओर ही गया, जो उसकी सच्ची माँ है, भला करने और भला चाहनेवाली है।

''कौन सी धरती ?''– मैंने फिर पूछा, – ''क्या आपके गाँव की 'धरती' या पंजाब की, या तमाम दुनिया की ?'' इस पेचीदा सवाल से वे और परेशान हुए। तब बहुत–से लोगों ने चिल्लाकर कहा कि इस सबका मतलब आप ही समझाइए ? कुछ भी नहीं जानते और सारी बातें समझना चाहते हैं।

मैंने उन्हें बताया कि भारत क्या है ? किस तरह वह उत्तर में कश्मीर और हिमालय से लेकर दक्षिण में लंका तक फैला हुआ है। उसमे पंजाब, बंगाल, बम्बई, मद्रास सब शामिल हैं। इस महाद्वीप में उनके जैसे करोड़ों किसान हैं जिनकी उनके जैसी ही समस्याएँ हैं। उन्हींकी सी मुश्किलें और बोझ वैसी ही कुचलने वाली गरीबी और आफतें। यहीं महादेश हिन्दुस्तान उन सबके लिए 'भारतमाता' हैं, जो उसमें रहते हैं और जो उसके बच्चे हैं। भारतमाता कोई सुन्दर बेबस असहाय नारी नहीं है, जिसके धरती तक लटकनेवाले लंम्बे बाल हों, जैसा अक्सर कल्पित तस्वीरों में दिखलाया जाता है।

'भारतमाता की जय!' यह जय बोलकर हमने किसकी जय बोली ? उस कल्पित स्त्री की नहीं जो कहीं भी नहीं है। तब क्या यह जय हिन्दुस्तान के पहाड़ों, नदियों, रेगिस्तानों, पेड़ों, पत्थरों की बोली जाती है ?

''नहीं''। उन्होंने जवाब दिया। लेकिन कोई ठीक उत्तर वे मुझे न दे सके।

''निश्चय ही हम जय उन लोगों की बोलते हैं जो भारत में रहते हैं, उन करोड़ों आदमियों की जो उसके गाँवों और नगरों में बसते हैं।'' – मैंने उन्हें बताया। इस जवाब से उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हुई और उन्होंने अनुभव किया कि जवाब ठीक भी है।

''ये आदमी कौन हैं ? निश्चय ही आप और आपके भाई। इसलिए जब आप भारतमाता की जय बोलते हैं, तो खुद अपनी और हिन्दुस्तान भरके अपने भाई–बहनों की जय बोलते हैं, याद रखिए, 'भारतमाता' आप ही हैं और यह आप अपनी ही जय बोलते हैं।''

ध्यान से उन्होंने सुना। प्रकाश की उज्ज्वल रेखा उनके भोले–भाले चहरों रक उदित होती दिखाई दी। यह ज्ञान उनके लिए विचित्र था कि वह नारा, जिसे वे इतने दिनों से लगा रहे हैं, उन्हीं के लिए था। हाँ, रोहतक जिले के गाँव के उन्हीं बेंचारे जाट किसानों के लिए। यह उन्हीं की जय थी। तब आइए, एक बार फिर मिलकर पुकारें– 'भारतमाता की जय!'

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**हृष्ट–पुष्ट** तंदुरुस्त, **प्रतिकार** प्रतिद्वन्द्वी विरोधी, **पेचीदा** उलझा गुआ, कठिन **महाद्वीप** भूखंड **बेबस** लाचार, **उज्ज्वल** स्वच्छ, धवल **अजीब** समझ में आनेवाला विचित्र

## स्वाध्याय

**1. सही विकल्प पसंद करके उत्तर दीजिए :**

(1) लेखक को अचानक रुकना पड़ा क्योंकि...

(क) आगे जाने का रास्ता बंद था।

(ख) सड़क पर बड़ा गड्ढा था।

(ग) सड़क पर आदमी और औरतों की भीड़ थी।

(घ) बीच रास्ते में शेर बैठा था।

(2) जाट लोग पूरी ताकत से नारे लगाते थे क्योंकि...

(क) इससे उन्हें खुशी मिलती थी।

(ख) वे अपने मालिक को खुश करना चाहते थे।

(ग) उसके बदले में उनको पैसे मिलते थे।

(घ) वे नेहरूजी को खुश करना चाहते थे।

(3) एक आदमी ने माता का मतलब धरती बताया, क्योंकि...

(क) वह सैनिक था।

(ख) उसकी माता मर चुकी थी।

(ग) वह किसान था।

(घ) वह नेता था।

(4) भोले-भाले चेहरों पर प्रकाश की रेखा दिखाई दी, क्योंकि...

(क) उन्हें पार्टी में शामिल किया गया था।

(ख) उनकी जमीन वापस मिल गयी थी।

(ग) नेताजी उनकी तारीफ कर रहे थे।

(घ) यह ज्ञान उनके लिए विचित्र था।

**2. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) लेखक तेजी से दिल्ली क्यों पहुँचना चाहते थे ?

(2) रात के अँधेरे में कुछ लोगों के हाथों में क्या था ?

(3) नारा लगाकर किसान किसमें डर पैदा करते थे ?

(4) महादेश हिन्दुस्तान सबके लिए क्या है ?

(5) हम भारतमाता की जय बोलते हैं तो किसकी जय बोलते हैं ?

**3. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) नेहरू जी जाट मर्दों और औरतों के बीच में क्यों गये ?

(2) लोग एक दूसरे का मुँह क्यों ताकने लगे ?

(3) लेखक ने कौन-सा पेचीदा सवाल किया ?

(4) भारत कहाँ से कहाँ तक फैला है ?

(5) लोगों को हार्दिक प्रसन्नता कब हुई ?

**4. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) 'भारतमाता की जय!' का नारा हमें किसकी सेवा करने की प्रेरणा देता हैं ?

(2) 'भारतमाता कोई सुन्दर बेबस नारी नहीं हैं!' इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

**5. समास विग्रह करके समास के नाम बताइए :**

भारतमाता, हिमालय, महादेश, यथाशक्ति

**6. प्रत्यय अलग कीजिए :**

बढ़कर, चाहनेवाली, नारीत्व, प्रसन्नता, हार्दिक

**7. उपसर्ग अलग कीजिए :**

असहाय, बेबस, अनुपस्थित, आजीवन

•

# व्यावहारिक पत्राचार-1

कार्यालयी पत्राचार एक प्रकार से औपचारिक पत्राचार है। जिसका प्रयोग मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों में सरकारी निर्णयों की सूचना देने अथवा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग सरकार के आंतरिक प्राशासन, सूचनाओं के आदान प्रदान, प्रशासनिक मंत्रालय से की जाने वाली कार्रवाई की सहमति प्राप्त करने, सरकार की नीतियों/निर्णयों की जानकारी देने तथा सरकार की उपलब्धियों को जनता तक पहुँचाने आदि के लिए किया जाता है।

प्रारूप एवं प्रयोगगत विभिन्नता के कारण पत्राचार के विविध रूप होते हैं, जो निम्नानुसार हैं:

(1) पत्र को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है – (i) सरकारी पत्र (ii) अर्ध सरकारी पत्र (iii) स्मरणपत्र/अनुसारक

(2) कार्यालय ज्ञापन

(3) कार्यालय आदेश

(4) आदेश

(5) परिपत्र

सरकारी पत्राचार में मसौदा लेखन महत्वपूर्ण माना जाता है। मसौदा लेखन से पूर्व अनेक औपचारिकताओं से गुजरना पड़ता है; जैसे – किसी प्राप्त पत्र पर कार्रवाई करने से पूर्व उसपर टिप्पणी लिखनी होती है जिसमें प्राप्त प्रस्ताव का विश्लेषण, संबंधित नियमों का उल्लेख, नियमों की व्यवस्था और प्रस्तावित निर्णय पर सुझाव दिया जाता है और इसी के अनुसार सक्षम अधिकारी के समक्ष मसौदा अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया जाता हैं।

ऐसे मामलों के संबंध में जिनमें बार–बार कार्रवाई की जानी अपेक्षित होती है और मानक मसौदे उपलब्ध होते हैं, उन पर मसौदा तैयार नहीं किया जाता। ऐसे मामलों में सक्षम अधिकारी के समक्ष हस्ताक्षर हेतु स्वच्छ प्रति प्रस्तुत कर दी जाती है।

मसौदा तैयार करते समय जिन कुछ बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता हैं, वे इस प्रकार हैं:

(1) मसौदे की भाषा स्पष्ट, संक्षिप्त और निर्वैयक्तिक होनी चाहिए। इसमें इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि प्रत्येक अनुच्छेद में तार्किकता और क्रमबद्धता हो।

(2) मसौदा लिखते समय भारत सरकार के अनुदेशों का पालन किया जाना चाहिए।

(3) लम्बे एवं जटिल मामलों को सरल एवं संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

(4) मसौदे मे प्रेषिती (पानेवाला) के संबंधित संदर्भों का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त मसौद में जहाँ – जहाँ आवश्यक संदर्भ देने की आवश्यकता हो, उसका उल्लेख किया जाना चाहिए।

(5) मसौदा बनाते समय उपयुक्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए ताकि सक्षम अधिकारी आवश्यकतानुसार उसमें आवश्यक सुधार कर सके?

उपर्युक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए मसौदे के अनुमोदन के पश्चात् उसकी स्वच्छ प्रति तैयार करवाई जाती है और उसके बाद सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत कर दी जाती है। इसके पश्चात् इसे प्रेषिती को जारी कर दिया जाता है और इसकी कार्यालय प्रति संबंधित मिसिल (फाइल) में लगा दी जाती है।

**सरकारी पत्र**

सरकारी पत्र का प्रयोग कार्यालय से इतर व्यक्तियों, कंपनियों संस्थाओं, स्वैच्छिक संगठनों, राज्य सरकारों आदि से सूचनाओं के आदान–प्रदान हेतु किया जाता है।

सरकारी पत्र की भाषा सरल और स्पष्ट होती है। इसमें अस्पष्ट, अनिश्चित और दो अर्थ देने वाले शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता। इसमें उत्तम पुरुष (मैं)का प्रयोग नहीं होता। इसमें अन्य पुरुष एकवचन का प्रयोग किया जाता है। केवल 'I have been directed' आदि के संदर्भ में 'मुझे' का प्रयोग होता है।

सरकारी पत्र सरकार द्वारा व्यक्त विचारों/निर्णयों आदि की सूचना देते हैं इसलिए इसमें व्यक्त विचार या भाव सरकार के होते हैं, न कि किसी अधिकारी विशेष के।

सरकारी पत्र के प्रारूप के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं :

(1) इसमें संख्या, भारत सरकार, मंत्रालय, विभाग, कार्यालय का नाम हाशिया छोड़कर पृष्ठ के मध्य में ऊपर लिखते हैं तथा उसके बाद दाईं तरफ पता व दिनांक लिखते हैं।

(2) सराकारी कार्यालयों को भेजे जाने वाले पत्र अधिकारी के पदनाम से तथा निजी व्यक्तियों को भेजे जाने वाले पत्रों को नाम से भेजा जाता है।

(3) विषय में संक्षिप्त रूप से पत्र के मूल आशय का उल्लेख किया जाता है।

(4) सम्बोधन में व्यक्तियों के लिए महोदय/महोदया का प्रयोग होता है तथा संस्थाओं या संगठनों के व्यक्तियों के लिए प्रिय महोदय/महोदया का प्रयोग किया जाता है।

(5) पत्र का मुख्य भाग या कलेवर अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसमें विषय से संबंधित विचारों को क्रमिक रूप से लिखा जाता है।

(6) स्वनिर्देश (अधोलेख) में सामान्यत: भवदीय या भवदीया का प्रयोग लिंग के अनुसार किया जाता है।

(7) निजी व्यक्तियों को भेजे जाने वाले पत्र के मुख्य भाग के अंत में धन्यवाद लिखा जाता है।

**सरकारी पत्र का नमूना**

भारत सरकार

आकाशवाणी : अहमदाबाद

पत्र सं. 1 (1) 2015 दिनांक : 27/08/2015

सेवा में,

महानिदेशक

आकाशवाणी भवन

नई दिल्ली

विषय : राजाभाषा हिंदी कार्यान्वयन विषयक कार्यशाला के संबंध में।

महोदय,

आकाशवाणी, अहमदाबाद केंद्र पर आगामी दिसम्बर माह में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन विषयक एक छह दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है जिसमें गुजरात के सभी आकाशवाणी केंद्रों के राजभाषा से संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी प्रतिभागिता करेंगे। इस कार्यशाला के उद्घाटन हेतु कृपया अपनी सहमति प्रदान करें।

सधन्यवाद, भवदीय,

(क ख ग)

निदेशक

आकाशवाणी, अहमदाबाद

**( 2 ) अर्धसरकारी पत्र (Demi - official Letter) :**

अर्धसकारी पत्र का प्रयोग किसी भी मामले पर विशेष रूप से व्यक्तिगत ध्यान देकर सरकारी कार्य के शीघ्र निपटान हेतु राजपत्रित अधिकारियों के बीच किया जाता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित मामलों में किया जाता है:

(1) सामान्यत: समान स्तर के राजपत्रित अधिकारियों के आपसी पत्र व्यवहार में विचारों या सूचनाओं के आदान-प्रदान या प्रेषण के लिए।

(2) जहाँ किसी अधिकारी का ध्यान व्यक्तिगत रूप से किसी मामले की ओर दिलाना अपेक्षित हो।

(3) किसी विषय पर अधिकारी की निजी सम्मति (अभिमत) के लिए।

(4) पत्र प्राप्त करने वाले अधिकारी के कार्यालय से कार्रवाई में अनावश्यक विलंब होने पर।

(5) स्मरणपत्र भेजने पर भी उत्तर न प्राप्त होने पर। अर्धसरकारी पत्र की भाषा सरल और स्पष्ट होती है तथा इसमें उत्तम पुरुष एक वचन का प्रयोग किया जाता है। इस पत्र की भाषा वैयक्तिक एवं मित्रवत् होती है। इस पत्र को लैटरपैड पर लिखा जाता हैं।

**अर्धसरकारी पत्र का प्रारूप**

नाम : **लैटर पैड**

पदनाम :

सं. 1 (1) 2015 दिनांक : 15/09/2015

आदरणीय श्री वर्माजी,

नमस्कार।

आपके कार्यालय को कई अनुस्मारक भेजे जा चुके हैं, फिर भी कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ हैं। कृपया व्यक्तिगत रुचि लेकर इस लंबित मामले को निपटाएँ। तुरत संदर्भ के लिए मूल पत्र एवं अनुस्मारकों की एक-एक प्रति संलग्न है।

सादर, आपका,

(क ख ग)

सेवा में,

श्री रमण वर्मा

निदेशक, आयकर कार्यालय

नई दिल्ली

**( 3 ) स्मरणपत्र या अनुस्मारक** (Reminder) **:**

जब किसी मामले में कार्रवाई हेतु मंत्रालय /विभाग /कार्यालय किसी अन्य मंत्रालय /विभाग /कार्यालय को पत्र भेजता है और उस पत्र पर कार्रवाई की अपेक्षा होती है किन्तु निर्धारित अवधि के भीतर अपेक्षित उत्तर प्राप्त नहीं होता है तब संबंधित मंत्रालय / विभाग /कार्यालय को याद दिलाने के लिए पत्र भेजा जाता है। ध्यान आकर्षित करने या याद दिलाने वाले इस पत्र को स्मरण पत्र या अनुस्मारक कहा जाता है। अनुस्मारक का प्रारूप सरकारी पत्र के समान होता है। इसकी भाषा भी कार्यालयी भाषा की विशेषताओं से युक्त सरल और स्पष्ट होती है।

**स्मरणपत्र या अनुस्मारक का प्रारूप**

भारत सरकार

आकाशवाणी : अहमदाबाद

पत्र सं. 1 (1) 2015 दिनांक : 20/09/2015

सेवा में,

महानिदेशक

आकाशवाणी भवन

नई दिल्ली

विषय : राजाभाषा विषयक कार्यशाला के उद्‌घाटन हेतु।

महोदय,

कृपया इस कार्यालय के पूर्वप्रेषित पत्र सं. 1 (1) 2015 दिनांक : 27/08/2015 का अवलोकन करें तथा स्वीकृति यथाशीघ्र प्रदान करें। तुरत संदर्भ के लिए मूल पत्र की एक प्रति संलग्न है।

सधन्यवाद,

भवदीय,

(कखग)

निदेशक

आकाशवाणी, अहमदाबाद

**स्वाध्याय**

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए।**

(1) कार्यालयी पत्राचार का प्रयोग कब किया जाता है।

(2) व्यावहारिक पत्राचार के विविध रूप का उल्लेख कीजिए ।

(3) सरकारी पत्र किसे कहते हैं ?

(4) अर्ध सरकारी पत्र की परिभाषा दीजिए।

(5) स्मरणपत्र या अनुस्मारक पत्र कब भेजा जाता है ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।**

(1) सरकारी पत्र के मसौदे की विशेषता क्या है ?

(2) सरकारी पत्र के पारूप के मुख्य बिन्दुओं को स्पष्ट कीजिए।

(3) अर्ध सरकारी पत्र का प्रयोग कैसे मामलों में किया जाता है।

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

(1) निम्नलिखित पत्रों के पारूप तैयार कीजिए।

1. सरकारी पत्र

2. अर्धसरकारी पत्र

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- कार्यालयी, व्यावहारिक, सरकारी, अर्धसरकारी एवं स्मरण पत्रों का संग्रह करवाकर पत्रपोथी तैयार करवाइए।

●

| 7 | # परशुराम-लक्ष्मण संवाद |
|---|---|

**तुलसीदास**

(जन्म : सन् 1532, मृत्यु : सन् 1623)

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। अल्पायु में माता-पिता की मृत्यु के कारण अनाथ बने तुलसी का आरंभिक जीवन अभावों में बीता। उन्होंने गुरु नरहरिदास से ज्ञानार्जन किया था। पत्नी रत्नावली से प्रताड़ित-प्रेरित होकर वे गृहत्याग करके विरक्त हो गए थे। उन्होंने अयोध्या, काशी, चित्रकूट आदि स्थलों का तीर्थाटन किया था।

तुलसीदास जी राम के अनन्य भक्त थे। अपने श्रेष्ठ ग्रंथ 'रामचरितमानस' में उन्होंने राम के चरित्र द्वारा लोकजीवन का आदर्श प्रस्तुत किया है। 'दोहावली', 'कवितावली', 'गीतावली', 'विनय-पत्रिका', 'बरवै रामायण', 'वैराग्य संदिपनी', 'पार्वती मंगल', 'जानकी मंगल', 'रामलला नहछू', 'श्रीकृष्ण गीतावली' आदि उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। उन्होंने 'विनय-पत्रिका' तथा 'कवितावली' की रचना ब्रजभाषा में और 'रामचरितमानस' की रचना अवधी भाषा में की हैं। 'रामचरितमानस' में मुख्यत छंद दोहा-चौपाई हैं।

प्रस्तुत अंश 'रामचरितमानस' के 'बालकांड' से लिया गया है। रामचन्द्र द्वारा शिवजी के धनुष तोड़े जाने पर परशुरामजी के क्रोध का वर्णन है। परशुरामजी के क्रोधित होने लेखक लक्ष्मण परशुराम को कहते हैं कि हम अपने क्रोध को रोककर असहय दु:ख सह लेंगे। आप तो वीरता को धारण करनेवाले और धैर्यवान हैं, अत: गाली देते आप शोभा नहीं पाते।

---

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अपमाने॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
एहि धनु पर ममता कोहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भुगुकुलकेतू॥

**दो॰ - रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।**
**धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ॥२७१॥**

लखन कहा हँसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥
का छति लाभु जून धनु तोरे। देखा राम नयन के भोरे॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही॥

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥
ससबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥
**दो॰- मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।**
**गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥२७२॥**
बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू । चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कुछ कहहु सहउँ रिस रोकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई॥
बधे पापु अपरकीरति हारे। मारतहूँ पा परिअ तुम्हारे॥
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥
**दो॰- जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।**
**सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा ग़भीर॥२७३॥**
कौसिक सुनहु मंद यहु बालकु। कुटिल कालबस निज कुल घालकु॥
भानु बंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुस अबुध असंकू॥
काल कवलु होइहि छन माहीं। कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥
तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा॥
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥
नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥
**दो॰-सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहि आपु॥**
**विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु॥२७४॥**

## शब्दार्थ-टिप्पणी

**संभुधनु** शिवजी का धनुष **भंजनिहारा** तोड़नेवाला **आयसु** आज्ञा, अनुमति **अरि** शत्रु **लराई** लड़ाई **तोरा** तोड़ा **रिपु** शत्रु **बिलगाउ** अलग **जैहहिं** जाएँगे **तोरीं लरकिाई** बचपन में तोड़ डाली **भृगुकुलकेत्** भृगुवंश की ध्वजारूप, **नृप** राजा **छति लाभु** हानि-लाभ **दोसू** दोष **रोसू** रोष **सठ** दुष्ट **अति कोही** अति क्रोधी **बिस्व** विश्व **भूप** राजा **परसु** फरसा **गर्भन्ह के अर्भक** गर्भ के बच्चे **घोर** भयानक **महाभटमानी** बड़े अभिमानी **कुठारू** फरसा **पहारू** पहाड़ **कुम्हड़बतिया** कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल **भृगुसुत** भृगु के पुत्र. **सुर** देवता **महिसुर** ब्राह्मण **हरिजन** भगवान के भक्त **गाई** गौ **गिरा** वाणी

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों से चुनकर लिखिए :**

(1) शिवजी के धनुष को किसने तोड़ा था ?

(क) लक्ष्मणजी ने (ख) श्रीरामजी ने (ग) भरतजी ने (घ) शत्रुघ्नजी ने

(2) 'आप बिना कारण ही क्रोध क्यों कर रहे हैं' यह वाक्य कौन बोलता है ?

(क) भरत (ख) श्रीराम (ग)लक्ष्मण (घ) सीताजी

(3) 'मेरा फरसा बड़ा भयानक है यह गर्भ के बच्चों का भी नाश करनेवाला है' यह वाक्य कौन बोलता है ?

(क) श्रीराम (ख) परशुराम (ग)लक्ष्मण (घ) सीताजी

(4) परशुराम लक्ष्मणजी को कैसा बालक कहते है ?

(क) कम बुद्धिवाला (ख) कुबुद्धि और कुटिल (ग)सुबुद्धि-सुशील (घ) सुबुद्धिवाला

**2. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) शिवजी का धनुष तोड़नेवाले को परशुराम किसके समान अपना शत्रु कहते हैं ?

(2) परशुराम का व्यक्तित्व कैसा है ?

(3) सहस्त्रबाहु की भुजाओं को काटनेवाले अस्त्र का नाम क्या था ?

**3. दो-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) परशुराम का फरसा कैसा है और वह किसका नाश करनेवाला है ?

(2) परशुराम के क्रोधरूपी अग्नि को बढ़ते देखकर कौन शीतल वचन बोलता हैं ?

(3) श्रीरामजी परशुराम को कैसा मुनि बताते हैं ?

(4) लक्ष्मणजी के कठोर बचन सुनकर परशुरामजी अपने हाथ क्या उठा लेते हैं ?

**4. पाँच-छः पंक्तियों में उत्तर लिखिए:**

(1) परशुरामजी का क्रोध शांत करने के लिए श्रीरामजी ने क्या कहा ?

(2) परशुरामजी का क्रोध देखकर लक्ष्मणजी क्या कहते हैं ?

**5. मानक हिन्दी रूप लिखिए:**

संभु छति कोही पहारू गाई गारी सोभा

**6. निम्नलिखित चौपाई का भावार्थ समझाइए :**

'भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी॥

सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई॥'

## योग्यता-विस्तार

### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- पठित चौपाइयों के आधार पर परशुराम के क्रोध का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

### शिक्षक-प्रवृत्ति

- परशुराम-लक्ष्मण संवाद का विद्यार्थियों के द्वारा नाट्य-मंचन करवाए।

●

# 8 पंचलाइट

**फणीश्वरनाथ 'रेणु'**

(जन्म : सन् 1921, मृत्यु : सन् 1977)

बिहार में पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना नामक गाँव में फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म हुआ था। उनकी शिक्षा भारत और नेपाल में हुई। वे 1942 ई. में स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। 1950 ई. में नेपाली क्राति आंदोलन में भी हिस्सा लिया। सही मायने में रेणुजी कर्मशील सारस्वत थे। 1952-53 में भीषण रूप से रोगग्रस्त रहने के बाद लेखन कार्य की ओर झुके।

रेणुजी ने हिन्दी में आंचलिक कथा की नींव रखी। बेमिसाल आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' को गोदान के बाद दूसरा सर्वश्रेष्ठ उपन्यास घोषित किया गया। 'परतीपारिकथा', 'जुलूस', 'दीर्घतपा', 'कितने चौराहे', 'पलटूबाबू रोड़' आदि गणमान्य उपन्यास हैं तो 'एक आदिम रात्रि की महक', 'ठुमरी' अग्निखोर, अच्छे आदमी आदि कहानी संग्रह हैं। रेणुजी ने 'ऋणजल धनजल', 'नेपाली क्रांतिकथा', 'वन तुलसी की गंध', 'श्रुत अश्रुत पूर्व', नामक रिपोतार्ज भी लिखे हैं। उनकी कहानी मारे गये गुलफाम से तीसरी कसम नामक फिल्म बनी 'अग्निखोर', 'अच्छे आदमी', आदि प्रमुख कथा संग्रह हैं। रेणुजी को 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।

'पंचलाइट' रेणुजी की गिनीचुनी प्रसिद्ध कहानियाँ में से एक हैं। पंच के न्याय दंड-जुरमाना, नयी चीज के आनेपर धर्म-ध्यान और कीर्तन के माध्यम से ग्रामजीवन का बखूबी चित्रण हुआ है; गाँव के अनपढ़ लोगों में अज्ञान जातिगत द्वेष को उजागर किया है। गोधन पेट्रोमेक्स जलाता है, तो टोले की इज्जत बढ़ जाती हैं। सम्मान स्वरूप गोधन के गुनाहों को जातिगत पंचायत माफ कर देती है। सबके हृदय में नया प्रकाश भर जाता है।

---

पिछले पंद्रह महीने से दंड-जुरमाने के पैसे जमा करके महतो टोली के पंचों ने पेट्रोमेक्स खरीदा है इस बार, रामनवमी के मेले में। गाँव में सब मिलाकर आठ पंचायतें हैं। हरेक जाति की अलग-अलग 'सभाचट्टी' हैं। सभी पंचायतों में दरी, जाजिम, सतरंजी और पेट्रोमेक्स हैं - पेट्रोमेक्स, जिसे गाँववाले पंचलाइट कहते हैं।

पंचलाइट खरीदने के बाद पंचों ने मेले में ही तय किया - दस रुपए जो बच गए हैं, इससे पूजा की सामग्री खरीद ली जाए - बिना नेम-टेम के कल-कब्जेबाली चीज का पुन्याह नहीं करना चाहिए। अंग्रेज बहादुर के राज में भी पुल बनाने से पहले बलि दी जाती थी।

मेले से सभी पंच दिन-दहाड़े ही गाँव लौटे; सबसे आगे पंचायत का छड़ीदार पंचलाइट का डिब्बा माथे पर लेकर और उसके पीछे, सरदार, दीवान और पंच वगैरह। गाँव के बाहर ही बाह्मणटोले के फुटंगीझा ने टोक दिया - 'कितने में लालटेन खरीद हुआ महतो'

''देखते नहीं हैं पंचलैट है! ब्राह्मणटोली के लोग ऐसे ही ताब करते हैं। अपने घर की ढिबरी को भी बिजली-बत्ती कहेंगे और दूसरों के पंचलैट को लालटेन''

टोले-भर के लोग जमा हो गए। औरत-मर्द बूढ़े-बच्चे सभी काम-काज छोड़कर दौड़े आए, ''चल रे चल! अपना पंचलैट आया है, पंचलैट!''

छड़ीदार अगनू महतो रह-रहकर लोगों को चेतावनी देने लगा- ''हाँ, दूर से, ज़रा दूर से! छू-छा मत करो, ठेस न लगे!''

सरदार ने अपनी स्त्री से कहा, ''साँझ को पूजा होगी; जल्दी से नहा-धोकर चौका-पीढ़ी लगाओ।''

टोले की कीर्तन-मंडली के मूलगैन ने अपने भगतिया पच्छकों को समझाकर कहा, ''देखो, आज पंचलैट की रोशनी में कीर्तन होगा। बेताले लोगों के पहले ही कह देता हूँ, आज यदि आखर धरने में डेढ़-बेढ़ हुआ, तो दूसरे दिन से एकदम बैकाट!''

औरतों की मंडली में गुलरी काकी गोसाई का गीत गुनगुनाने लगी। छोटे-छोटे बच्चों ने उत्साह के मारे बेवजह शोरगुल मचाना शरू किया।

सूरज डूबने के एक घंटा पहले से ही टोले-भर के लोग सरदार के दरवाजे पर आकर जमा हो गए-पंचलैट, पंचलैट!

पंचलैट के सिवा और कोई गप नहीं, कोई दूसरी बात नहीं। सरदार ने गुड़गुड़ी पीते हुए कहा, ''दुकानदार ने पहले सुनाया, पूरे पाँच कौड़ी पाँच रुपया। मैंने कहा कि दुकानदार साहेब, यह मत समझिए कि हम लोग एकदम देहाती हैं। बहुत-बहुत पंचलैट देखा हैं। इसके बाद दुकानदार मेरा मुँह देखने लगा। बोला लगता है आप जाति के सरदार हैं! ठीक है, जब आप सरदार होकर खुद पंचलैट खरीदने आए हैं तो जाइए पूरे पाँच कोड़ी में आपको दे रहे हैं।''

दीवानजी ने कहा, ''अलबत्ता चेहरा परखनेवाला दुकानदार है। पंचलैट का बक्सा, दुकान का नौकर देना नही चाहता था। मैंने कहा, ''देखिए दुकानदार साहेब, बिना बक्सा पंचलैट कैसे ले जाएँगे! दुकानदार ने नौकर को डाँटते हुए कहा, क्यों रे! दीवान जी की आँख के आगे 'धुरखेल' करता है; दे दो बक्सा!''

टोले के लोगों के अपने सरदार और दीवान को श्रद्धा -भरी निगाहों से देखा। छड़ीदार ने औरतों की मंडली में सुनाया- ''रास्ते में सन्न-सन्न बोलता था पंचलैट!''

लेकिन ऐन मौके पर 'लेकिन' लग गया! रूदल शाह बनिए की दुकान से तीन बोतल किरासन तेल आया और सवाल पैदा हुआ, पंचलैट को जलाएगा कौन!

यह बात पहले किसी के दिमाग में नहीं आई थी। पंचलैट खरीदने के पहले किसी ने न सोचा। खरीदने के बाद भी नहीं। अब पूजा की सामग्री चौके पर सजी हुई है, कीर्तनिया लोग खोल-ढोल-करताल खोलकर बैठे हैं और पंचलैट पड़ा हुआ है। गाँववालों ने आज तक कोई ऐसी चीज नहीं खरीदी, जिसमें जलाने-बुझाने का झंझट हो। कहावत हैं न, माई रे, गाय लूँ ? तो दुहे कौन ? लो मज़ा! अब इस कल-कब्जेवाली चीज को कौन बाले!

यह बात नहीं कि गाँव-भर मे कोई पंचलैट बालनेवाला नहीं। हरेक पंचायत में पंचलैट है, उसके जलानेवाले जानकार हैं। लेकिन सवाल है कि पहली बार नेम-टेम करके, शुभ-लाभ करके, दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा ? इससे तो अच्छा है कि पंचलैट पड़ा रहे। जिंदगी-भर ताना कौन सहे! बात-बात में दूसरे टोले के लोग कूट करेंगे-तुम लोगों का पंचलैट पहली बार दूसरे के हाथ से! न, न! पंचायत की इज्ज़त का सवाल है। दूसरे टोले के लोगों से मत कहिए।

चारों ओर उदासी छा गई! अँधेरा बढ़ने लगा। किसी ने अपने घर में आज ढिबरी भी नहीं जलाई थी। आज पंचलैट के सामने ढिबरी कौन बालता है!

सब किए-कराए पर पानी फिर रहा था। सरदार दीवान और छड़ीदार के मुँह में बोली नहीं! पंचों के चेहरे उत्तर गए थे। किसी ने दबी हुई आवाज में कहा, ''कल-कब्जेवाली चीज़ का नखरा बहुत बड़ा होता है।''

एक नौजवान ने आकर सूचना दी- ''राजपूत टोली के लोग हँसते-हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट पाँच बार उठो-बैठो, तुरंत जलने लगेगा।''

पंचों ने सुनकर मन-ही-मन कहा, ''भगवान ने हँसने का मौका दिया है हँसेंगे नहीं ?'' एक बूढ़े ने आकर खबर दी, ''रूदल साह बनिया भारी बतंगड़ आदमी है। कह रहा है, पंचलैट का पंपू ज़रा होशियारी से देना!''

गुलरी काकी की बेटी मुनरी के मुँह में बार-बार एक बात आकर मन में लौट जाती है। वह कैसे बोले ? वह जानती है कि गोधन पंचलैट जलाना जानता है। लेकिन, गोधन का हुक्का-पानी पंचायत से बंद है। मुनरी की माँ ने पंचायत में फरियाद की थी कि गोधन रोज़ उसकी बेटी को देखकर 'सनम-सनम' वाला सलीमा का गीत गाता है - 'हम तुमसे मोहोब्बत करके सनम!' पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी

खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस, पंचों को मौका मिला। दस रूपया जुरमाना! न देने से हुक्का-पानी बंद। आज तक गोधन पंचायत से बाहर है। उससे कैसे कहा जाए! मुनरी उसका नाम कैसे ले ? और उधर जाति का पानी उतर रहा है।

मुनरी ने चालाकी से अपनी सहेली कनेली के कान में बात डाल दी - ''कनेली! चिगो, चिध, चिन!'' कनेली मुस्कुराकर रह गई- ''गोधन तो बंद है!'' मुनरी बोली, ''तू कह तो सरदार से!''

''गोधन जानता है पंचलैट जलना।'' कनेली बोली।

''कौन, गोधना ? जानता हैं जलना। लेकिन।''

सरदार ने दीवान की ओर देखा और दीवान ने पंचों की ओर। पंचों ने एकमत होकर हुक्का-पानी बंद किया है। सलीमा का गीत गाकर आँख का इशारा मारनेवाले गोधन से गाँव-भर के लोग नाराज़ थे। सरदार ने कहा, ''जाति की बंदिश क्या, जबकि जाति की इज्जत ही पानी में बही जा रही है! क्यों जी दीवान ? ''

दीवान ने कहा, ''ठीक है!''

पंचों ने भी एक स्वर में कहा, ''ठीक है। गोधन को खोल दिया जाए।''

सरदार ने छड़ीदार को भेजा। छड़ीदार वापस आकर बोला, ''गोधन आने को राजी नहीं हो रहा है। कहता हैं, पंचों की क्या परतीत है। कोई कल-कब्जा बिगड़ गया तो मुझे दंड-जुरमाना भरना पड़ेगा।''

छड़ीदार ने रोनी सूरत बनाकर कहा, ''किसी तरह गोधन को राजी करवाइए, नहीं तो कल से गाँव में मुँह दिखाना मुश्किल हो जाएगा।

गुलरी काकी बोली ''जरा मैं देखूँ कहके।''

गुलरी काकी उठकर गोधन के झोंपड़े की ओर गई 'और गोधन को मना लाई'। सभी के चेहरे पर नई आशा की रोशनी चमकी। गोधन चुपचाप पंचलैट में तेल भरने लगा। सरदार की स्त्री ने पूजा की सामग्री के पास चक्कर काटती हुई बिल्ली को भगाया। कीर्तन-मंडली का मूलगैन मुरछल के बालों को सँवारने लगा। गोधन ने पूछा, ''इसपिरिट कहाँ है? बिना इसपिरिट के कैसे जलेगा ?''

लो मजा! अब यह दूसरा बखेड़ा खड़ा हुआ! सभी ने मन-ही-मन सरदार, दीवान और पंचों की बुद्धि पर अविश्वास प्रकट किया- बिना बूझे-समझे काम करते हैं वे लोग! उपस्थित जन-समूह में फिर मायूसी छा गई। लेकिन गोधन बड़ा होशियार लड़का है। बिना इसपिरिट के ही पंचलैट जलाएगा- ''थोड़ा गरी का तेल ला दो!'' मुनरी दौड़कर गई और एक मलसी गरी का तेल ले आई। गोधन पंचलैट में पम्प देने लगा।

पंचलैट की रेशमी थैली मे धीरे-धीरे रोशनी आने लगी। गोधन कभी मुँह से फूँकता कभी पंचलैट की चाबी घुमाता। थोड़ी देर के बाद पंचलैट से सनसनाहट की आवाज निकलने लगी और रोशनी बढ़ती गई, लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन बड़ा काबिल लड़का है।

अंत में पंचलाइट की रोशनी से सारी टोली जगमगा उठी तो कीर्तनिया लोगों ने एक स्वर में महावीर स्वामी की जय - ध्वनि के साथ कीर्तन शुरू कर दिया। पंचलैट की रोशनी में सभी के मुस्कुराते हुए चेहरे स्पष्ट हो गए। गोधन ने सबका दिल जीत लिया। मुनरी ने हसरत-भरी निगाह से गोधन की ओर देखा। आँखें चार हुईं और आँखों-ही-आँखों में बातें हुई - कहा-सुना माफ करना ! मेरा क्या कुसूर!

सरदार ने गोधन को बहुत प्यार से पास बुलाकर कहा ''तुमने जाति की इज्जत रखी है। तुम्हारा सात खून माफ। खूब गाओ सलीमा का गाना''

गुलरी काकी बोली, ''आज रात मेरे घर खाना गोधन।''

गोधन ने फिर एक बार मुनरी की ओर देखा । मुनरी की पलकें झुक गईं।

कीर्तनिया लोगों ने एक कीर्तन समाप्त कर जयध्वनि की-जय हो ! जय हो ! पंचलैट के प्रकाश में पेड़-पौधों का पत्ता-पत्ता पुलकित हो रहा था।

### शब्दार्थ-टिप्पणी

**जुरमाना** न्यायालय या पंचायत द्वारा अपराधी को दिया गया अर्थ-दंड, **महतो** मुखिया, **कौड़ी** बीस, **ढिबरी** छोटा-सा दीपक, **गरी** नारियल, **मलसी** तेल रखने का एक छोटा बर्तन (कटोरी), **नेम-टेम** नियम-टाइम, **पुन्याह** प्रारंभ, **मुलगैन** नायक, **बेवजह** अकारण, **घुरखेल** धोखा, आँख में धूल झोंकना

### मुहावरे-कहावतें

**भाई रे गाय तो लूँ ? तो दुहे कौन ?** किसी वस्तुओके उपयोग की विधिका ज्ञान न होना, **पानी फिरना** सब व्यर्थ होना **हुक्का पानी बंद होना** जाति या समाज से बहिष्कृत, **पानी उतरना** इज्जत खत्म होना, **दिल का मैल दूर होना** कड़वाहट, दुर्भावना खत्म होना, **आँखें चार होना** आँखें मिलना, **आँखों-आँखों में बात होना** इशारों में बात होना

### स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए :**

(1) गाँव में कुल कितनी पंचायतें थीं ?

(क) चार (ख) पाँच (ग) आठ (घ) छः

(2) पंचलाइट कितने रुपये में खरीदा गया ?

(क) पाँच कोड़ी (ख) दो कोड़ी (ग) सात कोड़ी (घ) सौ कोड़ी

(3) पंचलाइट जलाने के लिए मुनरी क्या लाती है ?

(क) किरासीन (ख) गरी का तैल (ग) स्पीरीट (घ) पेट्रोल

(4) गोधन पर कितना रुपया जुरमाना लगाया गया था ?

(क) दस रुपया (ख) बीस रुपया (ग) पचास रुपया (घ) सौ रुपया

**2. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दिजिए :**

(1) महतो टोली ने पेट्रोमेक्स खरीदने के लिए पैसे का इन्तजाम कैसे हुआ था ?

(2) औरतों की मंडली में गुलरी काकी क्या कर रही थी ?

(3) रूदल साह बनिए की दुकान से क्या खरीदा गया ?

(4) पेट्रोमेक्स के बारे में जाति के लोगों की क्या समस्या थी ?

**3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :**

(1) गाँव की प्रत्येक पंचायत के पास कौन-कौन सी चीजें थीं ?

(2) छड़ीदार के हाथ में क्या था ? उसके पीछे कौन चल रहा था ?

(3) मुनरी ने अपनी सहेली कनेली के कान में क्या कहा ? उसका क्या असर हुआ ?

(4) गोधन के द्वारा पेट्रोमेक्स जलाने पर पंचों ने क्या किया ?

**4. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पाँच से छः पंक्तियों में लिखिए :**

(1) टोली के सरदार की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

(2) पेट्रोमेक्स जलाने में क्या-क्या यत्न किये जाते हैं ? अपने शब्दों में लिखिए।

(3) पंचलाइट आने के बाद लोगों ने समूदाय, पंचो की किस कमी की ओर संकेत लिए है ?

**5. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) 'कल कब्जेवाली चीज का नखरा बहुत बड़ा होता है।'

(2) 'जाति की बंदिश क्या जबकि जाति की इज्जत पानी में बही जा रही है।'

(3) 'कहा सुना माफ करना! मेरा क्या कसूर!'

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- फणीश्वरनाथ रेणु की संवादिया कहानी पढ़िए।
- इस कहानी से आँचलिक शब्दावली ढूंढकर लिखिए

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- अपने आसपास की लोक संस्कृति से छात्र का परिचय करवाएँ।

●

# प्रयोजनमूलक हिन्दी

भाषा का मुख्य कार्य है – संप्रेषण। संप्रेषण का तात्पर्य है कि वक्ता का कथन श्रोता तक उसी अर्थ में पहुँचे, जिस अर्थ में वक्ता ने प्रयोग किया है। सामान्य व्यवहार की भाषा को व्यक्ति स्वयं अपने घर–परिवार, समाज से सीख लेते हैं। इसके लिए किसी औपचारिक तालीम की जरूरत नहीं होती। साहित्य भाषा के संप्रेषण की क्रिया अपेक्षाकृत जटिल होती है। व्यक्ति को स्व–अध्ययन या औपचारिक शिक्षण और अभ्यास से इसे प्राप्त करना होता है। जब कोई भाषा किसी देश के शासन के लिए राजभाषा बनती हैं तब उसका प्रयोग विभिन्न कार्यक्षेत्रों में विशिष्ट प्रयोजनों के लिए किया जाता है। आज भारतीय संघ की 'राजभाषा' हिन्दी है और उसकी लिपि देवनागरी। विशिष्ट कार्यक्षेत्रों की प्रयोजनपरक हिन्दी की आज 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' कहा जाता है।

व्यवहार की भाषा, साहित्यक भाषा भी व्यक्ति और रचनाकार की विभिन्न औपचारिक–अनौपचारिक आवश्यकताओं से नियंत्रित होती है। इसी कारण हमें कविता, कहानी नाटक, उपन्यास आदि की भाषा में इशत् अंतर दिखाई देता हैं। अनेकार्थता श्रेष्ठ साहित्यिक भाषा का हक, आवश्यक गुण है साथ ही साहित्यिक भाषा लक्षणा तथा साथ ही प्रत्येक कार्यक्षेत्र की विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली निश्चित हैं व्यंजना प्रधान होती है। इसके विपरत प्रयोजनमूलक भाषा एकार्थी, अलंकार विहीन तथा अभिधाप्रधान होती हैं। प्रयोजनमूलक हिन्दी का आधार भी मानक हिन्दी की शब्दावली, रूपरचना तथा व्याकरणिक संरचना ही है। प्रत्येक प्रयोजन क्षेत्र की शब्दावली में थोड़ी भिन्नता है। इस कारण प्रयोजन मूलक हिन्दी को सायास सीखना पड़ता है। यह औपचारिक क्षेत्र शैली में होती है।

'प्रयोजन मूलक' शब्द प्रयोजन (विशेषण) में मूलक (प्रत्यय) जुड़कर बना है। 'प्रयोजन' का अर्थ है – 'उद्देश्य' तथा 'मूलक' का अर्थ है – आधारित, निर्भर या आश्रित। इस तरह प्रयोजनमूलक हिन्दी का तात्पर्य हुआ – किसी निश्चित उद्देश्य पर आधारित हिन्दी, यानी निश्चित उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रयुक्त की गई हिन्दी।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के तीन आयाम माने गए हैं–

(1) विषयवस्तु का आयाम (2) मौखिक – लिखित आयाम और (3) शैली का आयाम

**(1) विषयवस्तु का आयाम :** यह ध्यान रखा जाता है कि जिस विषय के लिए प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयोग करना है वह, तकनीकी है या अर्धतकनीकी अथवा गैर तकनीकी। क्योंकि प्रत्येक विषय की पारिभाषिक तथा सामान्य शब्दावली में अंतर होता है। प्रशासन, वाणिज्य, पत्रकारिता, खेलकूद और कार्यालय के क्षेत्र अर्धतकनीकी हैं जब कि विज्ञान, प्राद्योगिकी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा (मेडिकल), न्याय, विधि–आदि तकनीकी क्षेत्र में आते हैं।

**(2) मौखिक – लिखित आयाम :** कार्यालयी, वैज्ञानिक, प्राद्योगिकी आदि क्षेत्रों की भाषा प्राय: लिखित ही होती है जब कि आकाशाणी, दूरदर्शन में यह लिखित भाषा का मौखिक रूप होता है। विधि भाषा मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों मे प्रयुक्त होती है।

**(3) शैली का आयाम :** विज्ञान, विधि, इंजीनियरी जैसे तकनीकी विषयों की भाषा रूढ़िगत और शैली औपचारिक होती है। अर्ध तकनीकी विषयों; जैसे–पत्रकारिता, कार्यालयी, विज्ञापन आदि की भाषा में सभी प्रकार के शैली रूप (सामान, औपचारिक, अनौपचारिक तथा अंतरंग) मिलते हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन के विज्ञापनों की भाषा औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों शैलियों में मिलती है।

**प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशेषताएँ :**

संविधान में राजभाषा स्वीकृत होने के बाद हिन्दी के व्यवहारपरक पक्ष की ओर विद्वानों का ध्यान गया। काम काज तथा प्रयोग के स्तर पर हिन्दी के व्यवहार की कल्पना ने 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' का रूप अख्तियार किया। 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' मानक हिन्दी का ठोस विस्तार और नए रूप में परिवर्द्धन है। प्रयोजनपरकता इसकी मुख्य विशेषता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी में प्रत्येक विषय के लिए अनुकूल पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी की भाषा सटीक, सुस्पष्ट, गंभीर, सरल, अभिधाप्रधान और एकार्थक होती है और इसमें कहावतों, मुहावरों, उक्तियों, अलंकारों तथा प्रतीकों के लिए कोई स्थान नहीं है।

**प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियाँ**

आप जान चुके हैं कि भाषा का प्रयोगगत रूप ही प्रयोजनमुलक रूप है जो विशिष्ट संदर्भ, शैली और क्षेत्र की भाषा के आधार पर बनता है। भाषा के ये विभिन्न रूप भाषा की 'प्रयुक्ति' कहलाते हैं। इस दृष्टि से कार्यालय, बैंकिंग इंजीनियरी जैसे कार्यक्षेत्रों में प्रयुक्ति भाषा रूपों को क्रमश: कार्यालयी-प्रयुक्ति, बैंकिग-प्रमुक्ति तथा इंजीनियरी-प्रयुक्ति कहते हैं। प्रत्येक प्रयुक्ति की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है। एक कार्यक्षेत्र में प्रयुक्ति शब्द का एक ही सुनिश्चित अर्थ होता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियों का सुनिश्चित अर्थ होता हैं। सुविधा के लिए प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियों को निम्नलिखित चार प्रकारों में बाँटा जा सकता है-

(1) कार्यालयी हिन्दी

(2) तकनीकी हिन्दी

(3) वाणिज्यिक हिन्दी और

(4) जनसंचारी हिन्दी

**( 1 ) कार्यालयी हिन्दी :** सरकारी प्रशासन, काम, काज में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी का एक रूप कार्यालयी हिन्दी है। कार्यालय की प्रयुक्ति में एक ही शब्द, अपूर्ण वाक्य भी पूरे वाक्य का अर्थ देता है; जैसे- तत्काल, गोपनीय, अवलोकनार्थ, आवश्यक कार्रवाई के लिए आदि।

**( 2 ) तकनीकी हिन्दी :** विधि, विज्ञान, प्रद्योगिकी, इंजीनियरी, मेडिकल शिक्षा में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी को तकनीकी हिन्दी के अंतर्गत माना गया है। संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग वैज्ञानिक प्रयुक्ति की विशेषता हैं। संकेत प्राय: रोमन या ग्रीकअक्षरों या चिह्नों के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जैसे - अल्फा ($\propto$) बीटा ($\beta$) और गामा ($\nu$) का प्रयोग, घनत्व, परमाणु तथा सी.एन.जी. आदि शब्दों का वैज्ञानिक प्रयुक्ति में विशेष अर्थ है।

**( 3 ) वाणिज्यिक हिन्दी :** बैंक, मंडियों तथा व्यापार-व्यवसाय में प्रयुक्त हिन्दी वाणिज्यिक हिन्दी कहलाती है। मुद्रा, उत्पादन, पूँजी, दिवाला, दलाल या बिचौलिया आदि शब्दों का इन क्षेत्रों में अपना विशेष अर्थ है। बाजार की भाषा में 'दाल में आग लगी है', 'चाँदी लुढ़की', 'तेल नरम' आदि अभिव्यक्तियाँ वाणिज्यिक हिन्दी की अभिव्यक्तियाँ हैं।

**( 4 ) जनसंचारी हिन्दी :** पत्रकारिता, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा विज्ञापन आदि में प्रयुक्त होनेवाली हिन्दी जनसंचारी हिन्दी कहलाती है। तत्काल संप्रेषण इसकी प्रमुख विशेषता है। विज्ञापन की भाषा ध्यानाकर्षक होनी चाहिए। इन क्षेत्रों में प्रयुक्त कुछ शब्द इस प्रकार हैं: मुक्केबाजी, एक दिवसीय मैच, टी-20, चौका, पारी, फिरकी गेंदबाज आदि।

आज अनेक नए क्षेत्रों में हिन्दी के द्वार खुले हैं, खुल रहे हैं। इन सभी क्षेत्रों के उपयुक्त प्रयोजनमूलक हिन्दी के गढ़ने का कार्य चल रहा है, अत: प्रयोजनमूलक हिन्दी के विकास की संभावनाएँ अपार हैं।

## स्वाध्याय

**1. संक्षिप्त उत्तर दीजिए :**

(1) सम्प्रेषण की परिभाषा लिखिए।

(2) प्रयोजनमूलक हिन्दी किसे कहते हैं ?

(3) वाणिज्यिक हिन्दी अर्थात् क्या ?

(4) विज्ञापन लेखन प्रयोजनमूलक हिन्दी की किस प्रयुक्ति में किया जाता हैं ?

**2. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :**

(1) तकनीकी हिन्दी (2) प्रयोजनमूलक हिन्दी के आयाम

**3. सविस्तार उत्तर लिखिए :**

(1) प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशेषताएँ लिखिए।

(2) साहित्यिक भाषा तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी में क्या अंतर है ?

●

# 9 चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती

**त्रिलोचन**

(जन्म : सन् 1917, मृत्यु : सन् 2007)

प्रगतिशील काव्यधारा के कवि त्रिलोचन का जन्म चिरानीपट्टी, कटघरापट्टी, जिला-सुल्तानपुर (उ.प्र.) में हुआ था। उनका मूल नाम वासुदेव सिंह था। उन्होंने काशी विश्वविद्यालय से एम. ए. (अंग्रेजी) की एवं लाहौर से संस्कृत की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने उर्दू-हिन्दी कोश का संपादन किया था।

'गुलाब और बुलबुल', 'उस जनपद का कवि हूँ', 'ताप के ताये हुए दिन' आदि उनके चर्चित कवितासंग्रह हैं। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, शलाका सम्मान आदि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान आदि से सम्मानित किया गया हैं।

यहाँ संकलित कविता 'चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' में गाँव की अनपढ लड़कियों और सामान्य-जन को नायकत्व प्रदान किया गया है। इस कविता में चम्पा की मनोभावना एवं जीवन पद्धति के प्रामाणिक चित्र हैं। चम्पा छोटी और नटखट लड़की है कवि उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। उसने शिक्षा की अहमियत को समझ लिया है। चम्पा के माध्यम से कवि ने गाँवों की तमाम स्त्रियों की मनोव्यथा का निरूपण किया है। जिनके पति पत्नियों को छोड़कर अर्थोपार्जन के लिए परदेश चले जाते हैं, अनपढ़ होने के कारण वे स्वयं ही चिट्ठी -पत्री लिखकर उनके पास भेज नहीं सकतीं। यह कविता स्त्री-शिक्षा पर भी भार देती हैं। चम्पा सिर्फ चंपा नहीं हैं यह आज की समग्र ग्रामीण नारी-चेतना का प्रतीक है।

---

चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है :
इन काले चीन्हों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं

चम्पा सुन्दर की लड़की है
सुन्दर ग्वाला हैं : गायें-भैंसें रखता है
चम्पा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है
चम्पा अच्छी है
चंचल है
न ट ख ट भी है

कभी-कभी ऊधम करती है
कभी-कभी वह कलम छिपा देती है
जैस-तैसे उसे ढूँढ़ कर जब लाता हूँ
पाता हूँ-अब काग़ज गयब
परेशान फिर हो जाता हूँ

चम्पा कहती है :
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुन कर मैं हँस देता हूँ
फिर चम्पा चुप हो जाती है
उस दिन चम्पा आई, मैंने कहा कि
चम्पा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा

गाँधी बाबा की इच्छा है-
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चम्पा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गाँधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी

मैने कहा कि चंपा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी,
कुछ दिन बालम संग साथ रह चला जाएगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर है वह कलकत्ता
कैसे उसे सँदेसा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चम्पा पढ़ लेना अच्छा है!

चम्पा बोली : तुम कितने झूठे हो, देखा,
हाय राम, तुम पढ़-लिख कर इतने झूठे हो
मैं तो ब्याह कभी न करूँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मै अपने बालम को संग साथ रखूँगी
कलकत्ता में कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बजर गिरे।

### शब्दार्थ- टिप्पणी

**अच्छर** अक्षर **अचरज** आश्चर्य, विस्मय, **चौपायों** चार पैरोंवाले पशु (गाय, भैंस, बैल) **ऊधम** बखेड़ा **गोदना** लिखना **गौना** विवाह के पश्चात् लड़की की दूसरी बिदाई, **बजर** वज्र

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :**

(1) चम्पा अपने बालम को कहाँ रखना जाहती है ?

(क) कलकत्ता में (ख) अपने संग साथ में (ग) परदेश में (घ) विदेश में

(2) चम्पा लेखक की कौन-सी चीज़ छिपा देती है ?

(क) पॉकेट (ख) कलम (ग) किताब (घ) चश्मा

(3) 'सब जन पढ़ना-लिखना सीखें' ऐसी इच्छा किसकी है ?

(क) चंपाकी (ख) गांधीजी की (ग) गाँव वालों की (घ) शहर वालों की

(4) गाँव के विवाहित युवक कलकात्ता क्यों जाते हैं ?

(क) घूमने (ख) पढ़ने (ग) कमाने (घ) खेलने

(5) कवि चम्पा को क्या करने के लिए प्रेरित करता है ?

(क) खेलने (ख) पढ़ने (ग) गाने (घ) नाचने

**2. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :**

(1) चम्पा कवि के पास किस समय आती है ?

(2) चम्पा चौंपायों को लेकर क्या करने जाती है ?

(3) चम्पा कहाँ पर वज्र गिरने की बात करती है ?

**3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में दीजिए :**

(1) कवि ने चम्पा को पढ़ने के लिए कहा तो उसने क्या जवाब दिया ?

(2) चम्पा कवि से ऐसा क्यों कहती है कि तुम पढ़-लिखकर झूठे हो ?

(3) चम्पा के कागद गोदने के आरोप का कवि क्या जवाब देता है ?

**4. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पाँच से छः पंक्तियों में लिखिए :**

(1) चम्पा कैसे-कैसे ऊधम करती है ?

(2) काले अच्छर को देखकर चम्पा को अचरज क्यों होता है ?

(3) चम्पा कलकत्ते पर बजर गिरे ऐसा क्यों कहती है ?

(4) गाँधी बाबा की इच्छा है - 'सब जन पढ़ना-लिखना सीखें' इस पंक्ति का भावार्थ समझाइए।

## योग्यता-विस्तार

### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

● 'निराला' की तोड़ती पत्थर कविता प्राप्त कर पढ़ें।

### शिक्षक-प्रवृत्ति

● 'साक्षारता अभियान' पर बच्चों को निबंध लिखवाइए।

●

# 10 अजन्ता

**भगवान शरण उपाध्याय**

(जन्म : सन् 1910 इ, मृत्यु : सन् 1982)

डॉ. भगवान शरण उपाध्याय का जन्म बलिया (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। निधन मॉरीशस में हुआ। साहित्यकार के रूप में देश-विदेश की अनेक महत्वपूर्ण संस्थाओ से सक्रिय रूप से संबद्ध रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय मनीषा का प्रतिनिधित्व किया। जीवन के अंतिम संमय में वे मोरीशस में भारत के राजदूत थे। उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी विश्वकोश' के चार खंडों का संपादन किया। 'भारतीय संस्कृति के स्रोत', 'गुप्तकालीन संस्कृति' भारतीय इतिहास के आलोक स्तंभ आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत प्रवास वर्णन में अजन्ता की गुफाओं का परिचय मिलता है। चट्टानों को काटकर बनाई गई बौद्ध गुफा अजन्ता गाँव के समीप उत्तर - मध्य महाराष्ट्र में स्थित हैं। जो अपनी चित्रकारी के लिए पूरे विश्व में सुविख्यात हैं। अजन्ता की गुफाएँ बौद्ध धर्म द्वारा प्रेरित और उनकी करुणामय भावनाओं से भरी हुई शिल्प कला और चित्रकला से ओतप्रोत हैं। जो भारतीय इतिहास में कला के उन्कृष्ट ज्ञान को दर्शाती हैं। यूनेस्को ने अजन्ता को विश्व धरोहर घोषित किया है।

---

जिन्दगी को मौत के पंजों से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए आदमी ने पहाड़ काटा है। किस तरह इन्सान की ख़ूबियों क कहानी सदियों बाद आनेवाली पीढ़ियों तक पहुँचायी जाय, इसके लिए, आदमी ने कितने ही उपाय सोचे और किये। उसने चट्टानों पर अपने संदेश खोदे, ताड़ों-से-ऊँचे, धातुओं-से-चिकने पत्थर के खम्भे खड़े किये, ताँबे और पीत्तल के पत्तरों पर अक्षरों के मोती बिखेरे और उसके जीवन-मरण की कहानी सदियों के उतार पर सरकती चली आयी, चली आ रही है, जो आज हमारी अमानत-विरासत बन गयी है।

इन्हीं उपायों में एक उपाय पहाड़ काटना भी रहा है। सारे प्राचीन सभ्य देशों में पहाड़ काटकर मन्दिर बनाये गये हैं और उनकी दीवारों पर एक से एक अभिराम चित्र लिख़े गये हैं।

आज से कोई सवा दो हजार साल पहले से ही हमारे देश में पहाड़ काटकर मन्दिर बनाने की परिपाटी चल पड़ी थी। अजन्ता की गुफाएँ पहाड़ काटकर बनायी जानेवाली देश की सबसे प्राचीन गुफाओं में से हैं, जैसे एलोरा और एलीफैंटा की सबसे पिछले काल की। देश की गुफ़ाओं या गुफा-मन्दिरों में सबसे विख्यात अजन्ता के हैं, जिनकी दीवारों और छतों पर लिखे चित्र दुनिया के लिए नमूने बन गए हैं। चीन के तुन-हुआँग और लंका के सिमिरिया की पहाड़ी दीवारों पर उसी के नमूने के चित्र नकल कर लिए गये थे और जब अजन्ता के चित्रों ने विदेशों को इस प्रकार अपने प्रभाव से निहाल किया, तब भला अपने देश के नगर-देहात उनके प्रभाव से कैसे निहाल न होते ? बाघ और सित्तनवसल की गुफाएँ उसी अजन्ता की परम्परा में हैं, जिनकी दीवारों पर जैसे प्रेम और दया की एक दुनिया ही सिरज गयी है।

और जैसे संगसाजों ने उन गुफाओं पर रौनक बरसायी है, चितेरे जैसे रंग और रेखा में दर्द और दया की कहानी लिखते गये हैं, कलावन्त छेनी से मूरतें उभारते-कोरते गये हैं, वैसे ही अजन्ता पर कुदरत का नूर बरस पड़ा है, प्रकृति भी वहाँ थिरक उठी है। बम्बई (मुम्बई) के सूबे में बम्बई और हैदराबाद के बीच, विध्याचल के पूरब-पश्चिम दौड़ती पर्वतमालाओं से निचौंधे पहाड़ों का एक सिलसिला उत्तर से दक्खिन चला गया है, जिसे सह्याद्रि कहते हैं। अजन्ता के गुफा मन्दिर उसी पहाड़ी जंजीर को सनाथ करते हैं।

अजन्ता गाँव से थोड़ी ही दूर पर पहाड़ों के पैरों में साँप-सी लोटती बाधुर नदी कमान-सी मुड़ गयी हैं। वही पर्वत का सिलसिला एकाएक अर्द्धतचन्द्राकार हो गया है, कोई दो-सौ पचास फुट ऊँचा हरे वनों के बीच मंच पर मंच की तरह उठते पहाड़ों का यह सिलसिला हमारे पुरखों को भा गया है और उन्होंने उसे खोदकर भवनों-महलों से भर दिया। सोचिये जरा ठोस पहाड़ की चट्टानी छाती और कमजोर इन्सान का उन्होंने मेल जो किया, तो पर्वत का हिया दरकता चला गया और वहाँ एक-से-एक बरामदे, हाल और मंन्दिर बनते चले गये।

पहले पहाड़ काटकर उसे खोखला कर दिया गया, फिर उसमें सुन्दर भवन बना लिए गये, जहाँ खम्भों पर उभारी मूरतें विहँस उठीं। भीतर की समूची दीवारें और छतें रगड़ कर चिकनी कर ली गयीं और तब उनकी जमीन पर चित्रों की एक दुनिया बसा दी गयी। पहले पलस्तर लगाकर आचार्यों ने उन पर लहराती रेखाओं में चित्रों की काया सिरज दी। फिर उनके चेले कलावन्तों ने उनमें रंग भरकर प्राण फूँक दिये। फिर तो दीवारें उमंग उठीं पहाड़ पुलकित हो उठे।

कितना जीवन बरस पड़ा है इन दिवारों पर; जैसे फसाने अजायब का भण्डार खुल पड़ा हो। कहानी से कहानी टकराती चली गयी है। बन्दरो की कहानी, हाथीयों की कहानी। हिरनों की कहानी क्रूरता और भय की, दया और त्याग की। जहाँ बेरहमी है वही दया का भी समुद्र उमड़ पड़ा है। जहाँ पाप है, वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कंगाल, विलासी और भिक्षु, नर और नारी, मनुष्य और पशु सभी कलाकारों के हाथों सिरजते चले गये हैं। हैंवान की हैवानी को इन्सान की इन्सानियत से कैसे जीता जा सकता हैं, कोई अजन्ता में जाकर देखे। बुद्ध का जीवन हजार धाराओं में होकर बहता है। जन्म से लेकर निर्वाण तक उनके जीवन की प्रधान घटनाएँ कुछ ऐसे लिख दी गयी हैं कि आँखें अटक जाती हैं, हटने का नाम नहीं लेती।

यह हाथ में कमल लिये बुद्ध खड़े है, जैसे छवि छलकी पड़ती हैं, उभरे नयनों की जोत पसरती जा रही है। और यह यशोधरा है, वैसे ही कमल नाल धारण किये त्रिभंग में खड़ी। और यह दृश्य है। महाभिनिष्क्रमण का– यशोधरा और राहुल निद्रा में खोये, गौतम दृढ़ निश्चिय पर धड़कते हिया को संभालते। और यह नन्द हैं, अपनी पत्नी सुन्दरी का भेजा, द्वारा पर आये बिना भिक्षा के लौटे भाई बुद्ध को लौटाने जो आया था और जिसे भिक्षु बन जाना पड़ा था। बार–बार वह भागने को होता है, बार–बार पकड़कर संघ में लौटा लिया जाता है, उधर फिर वह यशोधरा है बालक राहुल के साथ। बुद्ध आये है, पर बजाय पति की तरह आने के भिखारी की तरह आये हैं और भिक्षापात्र देहली में चढ़ा देते हैं, यशोधरा क्या दे, जब उसका स्वामी भिखारी बनकर आया है ? क्या न दे डाले ? पर हैं ही क्या अब उसके पास, उसकी मुकुटमणि सिद्धार्थ के खो जाने के बाद ? सोना–चाँदी, मणि–मानिक, हीरा–मोती तो उस त्यागी जगत्राता के लिए मिट्टी के मोल नहीं। पर हाँ हैं कुछ उसके पास उसका बचा एकमात्र लाल –उसका राहुल। और उसे ही वह अपने सरबस की तरह बुद्ध को दे डालती हैं।

और उधर वह बन्दरों का चित्र है कितना सजीव कितना गतिमान। उधर सरोवर में जल–विहार करता वह गजराज कमल–दण्ड तोड़–तोड़कर हथिनियों को दे रहा है। वहाँ महलों में वह प्यालों के दौर चल रहे हैं, उधर वह रानी अपनी जीवन–यात्रा समाप्त कर रही हैं, उसका दम टूटा जा रहा है। खाने–खिलाने, बसने–बसाने, नाचने–गाने, कहने–सुनने, वन नगर, ऊँच–नीच, धनी–गरीब के जितने नजारे हो सकते हैं, सब आदमी अजन्ता की गुफाओं की इन दीवारों पर देख सकते हैं।

बुद्ध के इस जन्म की घटनाएँ तो इन चित्रित कथाओं में हैं ही, उनके पिछले जन्मों की कथाओं का भी इसमें चित्रण हुआ है, पिछले जन्म की ये कथाएँ 'जातक' कहलाती हैं। उनकी संख्या 555 है और इनका संग्रह 'जातक' नाम से प्रसिद्ध है, जिनका बौद्धों में बड़ा मान हैं। इन्हीं जातक कथाओं में से अनेक अजन्ता के चित्रों में विस्तार के साथ लिख दी गयी हैं। इन पिछले जन्मों में बुद्ध ने गज, कपि, मृग आदि के रूप में विविध योनियों में जन्म लिया था और संसार के कल्याण के लिए दया और त्याग का आदर्श स्थापित करते वे बलिदान हो गये थे। उन स्थितियों में किस प्रकार पशुओं तक ने मानवोचित व्यवहार किया था, किस प्रकार औचित्य–का पालन किया था, यह सब उन चित्रों में असाधारण खूबी से दर्शाया गया है। और उन्हीं को दर्शाते समय चितेरों ने अपनी जानकारी की गाँठ खोल दी है, जिससे नगरों और गाँवों, महलों और झोपड़ियों, समुद्रों और पनघटों का संसार अजन्ता के उस पहाड़ी जंगल में उत्तर पड़ा है। और वह चित्रकारी इस खूबी से सम्पन्न हुई है कि देखते ही बनता है। जुलूस के जुलूस हाथी घोड़े दूसरे जानवर जैसे सहसा जीवित होकर अपने–अपने समझाये हुए काम जादूगर के इशारे पर संभालने लग जाते हैं।

इन गुफाओं का निर्माण ईसा से करीब दो सौ साल पहले ही शुरू हो गया था और वे सातवीं सदी तक बनकर तैयार भी हो चुकी थीं। एक–दो गुफाओं में करीब दो हजार साल पुराने चित्र भी सुरक्षित हैं। पर अधिकतर चित्र भारत के इतिहास के सुनहरे युग गुप्तकाल (पाँचवीं सदी) और चालुक्य काल (सातवीं सदी) के बीच बने।

अजन्ता संसार की चित्रकलाओं में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इतने प्राचीनकाल के इतने सजीव, इतने गतिमान, इतने बहुसंख्यक कथा प्राण चित्र कहीं नहीं बने। अजन्ता के चित्रों ने देश-विदेश सर्वत्र की चित्रकला को प्रभावित किया। उसका प्रभाव पूर्व के देशों की कला पर तो पड़ा ही, मध्य-पश्चिमी एशिया भी उसके कल्याणकारी प्रभाव से वंचित न रह सका।

**शब्दार्थ-टिप्पणी**

**नूर** रोशनी, सौंदर्य **अजायब** अद्‌भुत **पसरती** फैलाती, प्रवाहमान **निर्वाण** मोक्ष, मृत्यु, अंत **जगत्राता** विश्व का उद्धार करने वाला **कालावन्त** कलाकार **पुरखों** पूर्वज

**स्वाध्याय**

**1. दिए गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) हमारे देश में पहाड़ काटकर मन्दिर बनाने की परिपाटी कितनी पुरानी हैं ?

(क) दो हजार वर्ष (ख) सवा दो हजार वर्ष (ग) सवा तीन हजार वर्ष (घ) तीन हजार वर्ष

(2) अजन्ता की गुफाएं किस पर्वतमाला में स्थित हैं ?

(क) सह्याद्रि (ख) अरावल्ली (ग) सतपुड़ा (घ) पूर्वीघाट पहाड़

(3) अजन्ता की गुफा के समीप कौन-सी नदी है?

(क) नर्मदा (ख) बाधूर (ग) सरयू (घ) विश्वामैत्री

(4) अजन्ता की गुफा में किसके जीवन की घटनाओं के चित्र हैं ?

(क) शीव (ख) महावीर (ग) कृष्ण (घ) बुद्ध

(5) अजन्ता की गुफाओं के चित्र किस काल के हैं?

(क) गुप्तकाल (ख) रीतिकाल (ग) मुगलकाल (घ) आदिकाल

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) आदमी ने जिन्दगी को अमर बनाने के लिए क्या किया ?

(2) अजन्ता के चित्रों की नकल कहाँ मिलती है ?

(3) यशोधरा ने बुद्ध को भिक्षा में क्या दिया ?

(4) 'जातक' कथा किसे कहते हैं ?

(5) अजन्ता की गुफाओं का निर्माण कब शुरू हुआ था ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो -दो वाक्यों में लिखिए :**

(1) अजन्ता की गुफाओं का निर्माण किस प्रकार हुआ ?

(2) अजन्ता के चित्रों में कौन-सी कहानियाँ हैं ?

(3) महाभिनिष्क्रमण चित्र में कौन-सा दृश्य अंकित है ?

(4) अजन्ता की जातक चित्रकथा की क्या विशेषता है ?

**4. निम्नांकित पश्नों के उत्तर पाँच-छः पंक्तियों में लिखिए :**

(1) अजन्ता की गुफाओं के शिल्पों का वर्णन कीजिए ।

(2) अजन्ता के चित्रो की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- अजन्ता के चित्रों की चित्रपोथी बनाइए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- 'अजन्ता परिचय' पर पावर पोइन्ट प्रेजन्टेशन तैयार कीजिए।

●

# स्ववृत्त

**स्ववृत्त (Bio-data) :**

नौकरी के लिए आवेदन करने के साथ स्ववृत्त साथ में जोड़ा जाता है तथा साक्षात्कार देने से पूर्व स्ववृत्त की प्रति जमा करनी होती है। स्ववृत्त में संबंधित व्यक्ति का पूरा विवरण होता है, जिससे उसकी अपनी स्पष्ट छवि उभरकर सामने आती है। आजकल स्ववृत्त तैयार करना तथा उसे समय-समय पर अद्यतन करते रहना समय की माँग है जिससे संबंधित व्यक्ति के सामाजिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक, अनुभव की समस्त जानकारी अद्यतन रूप में एक साथ उपलब्ध हो। स्ववृत्त में सामान्यत: निम्नलिखित बिंदु होने आवश्यक होते हैं :

(1) नाम :

(2) पिता का नाम :

(3) माता का नाम :

(4) जन्म तिथि :

(5) राष्ट्रीयता :

(6) पत्राचार का पता :

(7) स्थायी पता :

(8) मोबाइल नं. :

(9) ई.मेल पता :

(10) रक्त वर्ग **(Blood Group)**:

(11) शैक्षणिक योग्यता :

फोटो

| **उपाधि** | **वर्ष बोर्ड/युनि.** | **रोल नं.** | **विषय** | **पूर्णांक** | **प्राप्तांक** | **प्रतिशत** | **विशेष** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | |
| | | | | | | | |
| | | | | | | | |

(12) व्यावसायिक योग्यता :

(13) अनुभव :

(14) रुचियाँ :

(15) अन्य :

स्थान — हस्ताक्षर

दिनांक — (

)

(पूरा नाम)

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :**

(1) स्व-वृत्त किसे कहते हैं ?

(2) व्यवसायिक योग्यता किसे कहते हैं ?

(3) स्व-वृत्त को समय-समय पर अद्यतन करने की क्या आवश्यक्ता है ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए :**

(1) स्व-वृत्त में शैक्षिक योग्यताएँ किस तरह से लिखी जाती हैं ?

(2) स्व-वृत्त में कौन-सी जानकारी दी जाती है ?

### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

● अपना स्व-वृत्त तैयार कीजिए।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

● अपने शिक्षकों ते स्व-वृत्तों का संकलन करके 'स्व-वृत्त' पोथी बनाइए।

●

# व्यावहारिक पत्राचार-2

**( 2 ) कार्यालय ज्ञापन (Office Memorandum) :**

कार्यालय ज्ञापन का प्रयोग मंत्रालयों/विभागों एवं कर्मचारियों को सूचना देने अथवा सूचना माँगने के लिए तथा संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों के साथ पत्र व्यवहार करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग दो मंत्रालयों के बीच नहीं किया जाता। विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों से सूचना माँगने या उन्हें सूचना भेजने के लिए तथा सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों के साथ पत्र-व्यवहार के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

कार्यालय ज्ञापन अन्य पुरुष में लिखा जाता हैं। इसकी भाषा सरकारी पत्र के समान आदेशात्मक नहीं होती है और न ही अर्ध सरकारी पत्र की तरह मित्रतापूर्ण। इसकी भाषा में अनुरोध आदि शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।

कार्यालय ज्ञापन के प्रारूप के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं :

(1) कार्यालय ज्ञापन में सबसे ऊपर मध्य में संख्या लिखी जाती है तथा उसके नीचे भारत सरकार, फिर उसके नीचे मंत्रालय का नाम तथा सबसे नीचे विभाग का नाम लिखा जाता है।

(2) प्रारूप के दाईं ओर खाली स्थान में जगह का उल्लेख किया जाता है। इसके नीचे दिनांक लिखा जाता है जिसमें कार्यालय ज्ञापन भेजने की तारीख लिखी जाती है।

(3) प्रारूप के मध्य में 'कार्यालय ज्ञापन' लिखा जाता है।

(4) प्रारूप के बाईं ओर विषय लिखा जाता है जिसमें कार्यालय ज्ञापन का विषय संक्षेप में लिखा जाता है।

(5) कार्यालय ज्ञापन के पहले अनुच्छेद पर क्रमांक नहीं लिखा जाता परंतु दूसरे अनुच्छेद के प्रारंभ में '2' लिखा जाता है। इसी प्रकार अगले अनुच्छेदों पर क्रमश: संख्या लिखी जाती हैं।

(6) कलेवर के पश्चात् प्रारूप के दाईं ओर भेजने वाले अधिकारी का नाम कोष्ठक के अंदर लिखा जाता है। इसके ऊपर हस्ताक्षर के लिए पर्याप्त स्थान छोड़ना अनिवार्य होता है। उसके पश्चात् अधिकारी का पदनाम लिखा जाता है तथा इसके नीचे टेलीफोन नम्बर लिखा जाता है।

**कार्यालय ज्ञापन का नमूना**

संख्या : 1 (1)/2015

भारत सरकार

राजस्व विभाग

आयकर कार्यालय

राजस्व भवन, नई दिल्ली

दिनांक : 15/09/2015

**कार्यालय ज्ञापन**

विषय : अध्ययन हेतु अनुमति प्रदान करने के संबंध में।

श्री रामजस शर्मा, आयकर अधिकारी को सूचित किया जाता है कि उन्हें निम्नलिखित शर्त पर विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय से एल.एल.बी करने की अनुमति प्रदान की जाती है :

(1) इस अध्ययन के दौरान कार्यालय के कार्य में कोई बाधा उत्पन्न न हो।

(2) इसकी तैयारी के लिए किसी प्रकार का कोई अवकाश स्वीकृत नहीं किया जाएगा।

(3) दी गई अनुमति जनहित में कभी भी वापस ली जा सकती है।

हस्ता /-

(क.ख.ग)

आयकर आयुक्त

011-22687945

सेवा में

श्री रामजस शर्मा

आयकर अधिकारी

आयकर विभाग

क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली

**(3) कार्यालय आदेश (Office Order)**

कार्यालय आदेश का प्रयोग आंतरिक प्रशासन संबंधी अनुदेश जारी करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग अधिकारियों और कर्मचारियों दोनों के लिए किया जा सकता है।

इसे अन्य पुरूप में लिखा जाता हैं तथा सूचनापरक भाषा का प्रयोग किया जाता है।

कार्यालय आदेश का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :

(1) कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं दो अनुभागों के बीच काम के वितरण के लिए।

(2) अधिकारियों/कर्मचारियों का एक कार्यालय या अनुभाग से दूसरे कार्यालय या अनुभाग में स्थानांतरण या तैनाती के लिए।

(3) आकस्मिक अवकाश या प्रतिबंधित अवकाश को छोड़कर सभी प्रकार की छुट्टियों की मंजूरी के साथ-साथ नियमित प्रशासनिक कार्यों के लिए।

कार्यालय आदेश के प्रारूप के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं :

(1) कार्यालय आदेश के प्रारूप में सबसे ऊपर मध्य में संख्या (फाइल संख्या का संक्षिप्त रूप) लिखी जाती हैं। उसके बाद भारत सरकार लिखा जाएगा तथा उसके नीचे मंत्रालय और विभाग का नाम लिखा जाएगा।

(2) प्रारूप के दाईं ओर खाली दी हुई जगह में स्थान के उल्लेख के बाद कार्यालय आदेश जारी करने की तारीख लिखी जाएगी।

(3) प्रारूप के मध्य में 'कार्यालय आदेश' लिखा जाता है।

(4) कार्यालय आदेश में संबोधन और अधोलेख का प्रयोग नहीं होता। विषय और संदर्भ भी कार्यालय आदेश में नहीं लिखे जाते। प्रथम अनुच्छेद को छोड़कर अन्य अनुच्छेदों में क्रमश: संख्या लिखी जाती है।

(5) प्रारूप के दाईं ओर भेजने वाले अधिकारी का नाम कोष्ठक में लिखा जाता है तथा उसके ऊपर हस्ताक्षर के लिए पर्याप्त स्थान छोड़ा जाता है। उसके नीचे पदनाम और टेलीफोन नम्बर लिखा जाता है।

(6) नीचे बाईं ओर उन लोगों का उल्लेख रहता है जिन्हें यह कार्यालय आदेश दिया जाता है या जिन्हें इसकी प्रतिलिपि भेजी जाती है। प्रतिलिपि में स्पष्ट रूप से संबंधित अधिकारी कर्मचारी का नाम, पदनाम, विभाग आदि का उल्लेख करना अनिवार्य है।

## कार्यालय आदेश का नमूना

सं. : 20301 /20/के.अ.ब्यू/2015

भारत सरकार

गृहमंत्रालय

राजभाषा विभाग

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो

नई दिल्ली

दिनांक : 20/09/2015

### कार्यालय आदेश

विषय : अध्ययन हेतु अनुमति प्रदान करने के संबंध में।

श्री राम धनी राम, प्रशिक्षण अधिकारी प्रशिक्षण अनुभाग, नई दिल्ली का दिनांक : 25/09/2015 से 30/09/2015 तक 6 दिन का अर्जित अवकाश मंजूर किया जाता है और उन्हें छुट्टी के बाद में पड़ने वाले रविवार आदि अवकाशों को जोड़ने की भी अनुमति दी जाती है।

यह प्रामाणित किया जाता है कि श्री राम धनी राम के छुट्टी की समाप्ति पर उसी स्थान पर लौटने की संभावना है जहाँ से वे छुट्टी पर गए थे।

हस्ता /-

(क.ख.ग)

प्रशासनिक अधिकारी

011-24563210

प्रतिलिपि सूचनार्थ प्रेषित :

(1) श्रीराम धनी राम

प्रशिक्षण अधिकारी

प्रशिक्षण अनुभाग

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो

नई दिल्ली

(2) संबंधित अनुभाग

(3) रोकड़िया

(4) कार्यालय आदेश रजिस्टर

### ( 4 ) आदेश (Order)

आदेश का प्रयोग आमतौर पर कार्यालयों में वित्तीय मंजूरियों एवं अनुशासनिक मामलों में संबंधित कर्मचारियों को सरकारी आदेशों की सूचना देने के लिए किया जाता है। मंत्रालय/कार्यालय अपने आधीनस्थ विभागों एवं अधिकारियों कर्मचारियों दोनों को सूचना देने के लिए आदेश का प्रयोग करते हैं। इसका प्रयोग नए पदों के सृजन की सूचना देने, कुछ विशिष्ट प्रकार की मंजूरियों की सूचना देने, अनुशासनिक मामलों में संबंधित कर्मचारी को सरकारी आदेश की सूचना देने तथा शक्तियों के प्रत्यायोजन की सूचना देने आदि के लिए किया जाता है।

आदेश की भाषा आदेशात्मक होती है; जैसे– आदेश दिया जाता है, सूचित किया जाता है, की जाए, की जाएगी आदि। इसमें अन्यरूप का प्रयोग किया जाता है।

आदेश के प्रारूप के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

(1) आदेश का प्रारूप सीधा और सरल होता है।

(2) इसके प्रारूप में सबसे ऊपर मध्य में फाइल संख्या देकर भारत सरकार एवं संबंधित मंत्रालय/ कार्यालय/ विभाग का नाम लिखा जाता है।

(3) नीचे दाईं ओर कार्यालय का पूरा पता तथा तारीख लिखी जाती है।

(4) शीर्षक के रूप में मध्य में 'आदेश' लिखा जाता है।

(5) आदेश में विषय एवं संदर्भ नहीं लिखा जाता।

(6) इसमें संबोधन तथा अधोलेख भी नहीं होता।

(7) इसके पश्चात् आदेश का कलेवर आता है।

(8) आदेश के प्रारूप के पहले अनुच्छेद को क्रम संख्या नहीं दी जाती लेकिन अगले अनुच्छेदों में क्रमशः क्रम संख्या लिखी जाती है।

**आदेश का नमूना**

संख्या. : 1 (1)/2015

भारत सरकार

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल

सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली

दिनांक : 29/09/2015

**आदेश**

श्रीराम भरोसे लाल, लेखाकार राजस्व अनुभाग को चेतावनी दी गई थी कि वे अपने कार्य और आचरण के बारे में सुधार करें और भविष्य में शिकायत का अवसर न दें लेकिन इसके बाद भी उनके आचरण और काम की अनियमितता के बारे में शिकायतें मिली हैं। अत: वे अपनी कार्यपद्धति में सुधार करें। यह उनके और कार्यालय दोनों के हित में है कि वे कार्यालय में अनुशासन का पालन करें।

2. यदि श्रीराम भरोसे लाल ने इसके बाद भी अपनी कार्य पद्धति और आचरण में सुधार न किया तो उनके बिरुद्ध सख्त अनुशासनिक कार्रवाई की जाएगी। इसे अंतिम चेतावनी समझा जाए।

हस्ता /–

(क.ख.ग)

उपमहानिरीक्षक

सेवा में,

श्रीराम भरोसे लाल

लेखाकार

के. औ.सु.ब.

लोदी रोड, नई दिल्ली

प्रतिलिपि सूचनार्थ प्रेषित :

(1) लेखा अधिकारी, लेखा अनुभाग

(2) सहायक उपमहा निरीक्षक (प्रशासन)

(3) निजी फाइल

**( 5 ) परिपत्र (Circular)**

यदि किसी मंत्रालय या विभागीय कार्यालय को अपने अधीनस्य कार्यालयों या कर्मचारियों से कोई सूचना माँगनी हो या उन्हें किन्हीं सरकारी आदेशों या अनुदेशों की सूचना देनी हो तो परिपत्र का प्रयोग किया जाता है।

यह प्राय: आंतरिक होता है अर्थात् इसका प्रयोग उसी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय तक सीमित रहता है। एक मंत्रालय/विभाग/कार्यालय के परिपत्र में दी गई हिदायतों को मानने के लिए अन्य मंत्रालय/कार्यालय बाध्य नहीं होते। यदि जारी परिपत्र के अनुदेशों को दूसरे विभाग /कार्यालय को अपने कर्मचारियों पर लागू करना हो तो दूसरे विभाग/कार्यालय को अलग से परिपत्र जारी करना आवश्यक होता है।

परिपत्र का प्रयोजन सरकारी नियमों या अनुदेशों को आवश्यकतानुसार कार्यालय के आधीनस्थ कर्मचारियों को सामान्य रूप से सूचित करना होता है। इसीलिए इसे पत्राचार का रूप नहीं माना जाता क्योंकि परिपत्र से किसी प्रकार के उत्तर की अपेक्षा अनिवार्यत: नहीं की जाती। यदि किसी व्यक्ति को कोई अनुदेश देने हों या उत्तर प्राप्त करना हो तो परिपत्र का प्रयोग न करके आदेश का प्रयोग किया जाता है।

(1) परिपत्र के मसौदे में सबसे ऊपर बीच में संख्या, मंत्रालय, विभाग का नाम, दाहिनी ओर कार्यालय का पता और दिनांक लिखा जाता हैं।

(2) इसमें सम्बोधन और अधोलेख नहीं होता। बीचोंबीच में 'परिपत्र' लिखा जाता हैं।

(3) इसमें विषय व संदर्भ लिखा जा सकता है। अंत में दाहिनी ओर जारी करने वाले अधिकारी के हस्ताक्षर के नीचे पदनाम लिखा जाता है।

(4) बाईं ओर 'सेवा में' लिखकर जिन-जिन को भेजा जाता है, उनका उल्लेख किया जाता है।

(5) यदि सूचना पूर्णत: सामान्य हो तो नीचे 'संबंधित' सभी अधिकारी/ कर्मचारी लिखा जाता है।

## परिपत्र का नमूना

सं. : 1 (1) /3/2015
भारत सरकार
गृहमंत्रालय
राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
पर्यावरण भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003
दिनांक : 20/09/2015

**परिपत्र**

विषय : अंतरविभागीय फुटबॉल प्रतियोगित के संबंध में।

दिनांक : 22/10/2015 को अंतर विभागीय फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन केंन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के मैदान में भोजनावकाश के बाद किया जाएगा। खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन हेतु समस्त अधिकारी/ कर्मचारी भोजनावकाश के पश्चात् खेल के मैदान में उपस्थित रहें। प्रतियोगिता के आयोजन के फलस्वरूप कार्यालय दिनांक 22/10/2015 को अपराह्न बंद रहेगा।

हस्ता /-

(क.ख.ग)

सेवा में,

(1) कार्यालय में कार्यरत समस्त अधिकारी/ कर्मचारी

(2) सूचना पट्ट

### स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :**

(1) व्यावहारिक पत्राचार किसे कहते हैं ?

(2) व्यावहारिक पत्राचार के प्रकार दर्शाएँ।

(3) व्यावहारिक पत्राचार की उपयोगिता स्पष्ट करें।

**2. निम्नांकित पश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :**

(1) कार्यालय ज्ञापन का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

(2) कार्यालय आदेश किसे कहते हैं ?

(3) परिपत्र की विशेषताएँ लिखिए।

### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अपने अध्यापक से व्यावहारिक पत्राचार के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें।

### शिक्षक-प्रवृत्ति

- किसी सरकारी कार्यालय का दौरा करवाते हुए विभिन्न पत्राचार प्रत्यक्ष दिखाएँ तथा उसकी सूची बनवायें।

●

# 11 नीति के दोहे

**रहीम**

(जन्म : सन्. 1556 मृत्यु : सन् 1627)

रहीम का पूरा नाम अबदुर्रहीम खानखाना था। इनका जन्म लाहौर में हुआ था। वे अकबर बादशाह के संरक्षक बैरम खाँ के पुत्र थे। उन्होंने सम्राट अकबर और जहाँगीर के दरबार में प्रशासनिक, राजनैतिक एवं सैन्य संचालन की कुशलता सिद्ध करके उच्च स्थान प्राप्त किया था। वे अकबर के दरबारी नवरत्नों में से एक थे।

रहीम कलम तथा तलवार दोनों के धनी थे। वे हिन्दी, संस्कृत अरबी, फारसी, तुर्की, अवधी, ब्रजभाषा, फ्रैंच तथा अंग्रेजी भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। रहीम सतसई, शृंगार सतसई, मदनाष्टक, रासपंचाध्यायी,रहीम रत्नावली, बैरवै नायिका भेद आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

यहाँ 'नीति के दोहों' में आचरण की शुद्धता पर बल दिया है। जीवन का सत्य उजागर करनेवाले इन संकलित दोहों में शक्ति की महत्ता, मैत्री, संगति का फल, वाणी का प्रभाव, योग्यता, बड़े-छोटे का भेद दरिद्रता, कृपण, जिह्वा की विशेषता, एवं उदारता का मार्मिक चित्रण है।

---

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष चून॥

जे गरीब पर हित करैं, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग॥

कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसो ही फल दीन॥

दोनों रहिमन एक से, जौ लौं बोलत नाहिं।
जानि परत हैं काक-पिक, ऋतु वसंत के माँहिं॥

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारौ लगै, बढ़ै अँधेरो होय॥

ओछो काम बड़े करै, तौ न बड़ाई होय।
ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरधर कहै न कोय॥

दीन सबन को लखत हैं, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय॥

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछु न देत॥

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गई सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात केपाल॥

तासों ही कुछ पाइए, कीजै जाकी आस।
रीते सरवर पर गए, कैसे बुझै पियास॥

## शब्दार्थ-टिप्पणी

**पानी** शक्ति, सत्व, तेज **सून** शून्य **उबरै** निखरे **हित** मित्र **लाभ** फायदा **बापुरो** बेचारा, कमजोर **मिताई** मित्रता **जोग** योग्य **सीप** छीप के अंदर रहनेवाला जीव **स्वाति** एक नक्षत्र **जौ-लौ** जब-तक **कपूत** कुपुत्र **गति** दशा, चाल **सोय** वही **नाद** आवाज **रीझि** खुश होकर **जिहवा** जबान, जीभ **बावरी** पागल **सरग-पताल** अच्छा बुरा **आपु** स्वयं, खुद **कपाल** मस्तक **तासौ** उससे **आस** आशा, उम्मीद **रीते** खाली, **पियास** प्यास

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) बिना पानी के सब कैसा होता है ?

(क) भयानक (ख) सूना (ग) व्याकुल (घ) सुखा

(2) वसंतऋतु का नाता किसके साथ है ?

(क) मोर (ख) आम (ग) पिक (घ) पपीहा

(3) रहीम जिह्वा की तुलना किससे करते हैं ?

(क) पागल (ख) जूती (ग) पाताल (घ) धरती

(4) रहीम के अनुसार पशु से नीचा कौन है ?

(क) तम देता है (ख) मन देता है (ग) धन देता है (घ) कुछ नहीं देता है

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) रहीम के अनुसरार बड़ा कौन है ?

(2) कवि दीप के दृष्टांत द्वारा क्या कहना चाहते हैं ?

(3) कवि के अनुसार दीनबन्धु कौन है ?

(4) रहीम ने किन लोगों को पशु से भी बदतर बताया है ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो - दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) संगति का नतीजा कैसा होता है ?

(2) रहीम किन्हें बड़ा आदमी कहते हैं ?

(3) रहीम जिह्वा को बावरी क्यों कहते हैं ?

(4) कौआ और कोयल का भेद कब खुलता है ?

**4. भावार्थ स्पष्ट कीजिए :**

(1) पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष चून।

(2) ओछो काम बड़े करैं, तौ न बड़ाई होय।

ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरधर कहै न कोय॥

(3) बारे उजियारौ लगै, बढ़ै अँधेरो होय॥

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गई सरग पताल।

(4) आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल॥

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- बिहारी तथा कबीर के नीति विषयक दोहों का संकलन कीजिए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- रहीम के दोहों को भिन्न-भिन्न रागों में गाकर या गवाकर सुनाइए।

●

# 12 दुःख

**यशपाल**

(जन्म : सन्. 1903 मृत्यु : सन् 1976)

यशपाल का जन्म (फरोजपुर छावनी) पंजाब के काँगड़ा जिले में हुआ था। पिता हीरालाल तथा माता प्रेमादेवी सामान्य परिवार के थे। प्रारंभिक शिक्षा काँगड़ी गुरुकुल में हुई। उच्च शिक्षा नेशनल कॉलेज लाहौर में। वे सरदार भगतसिंह तथा सुखदेव के क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित होकर क्रान्तिकारी दल के सदस्य बने तथा कारावास भोगा। इन मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक थे।

यशपाल एक सफल उपन्यासकार तथा कहानीकार हैं। 'देशद्रोही', 'दादाकामरेड', 'दिव्या', 'अमिता', 'झूठासच' आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। इनके अतिरिक्त 'ज्ञानदान', 'अभिशप्त', 'भस्मावृत्त', 'चिनगारी', 'पिंजरे की उड़ान', 'उत्तम की माँ', 'फूलों का कुर्ता', 'तर्क का तूफान' आदि कहानी संग्रह हैं। 'न्याय का संघर्ष', 'देखा सोचा समझा', 'सिंहावलोकन' आदि निबंध उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। यशपाल जी को देव पुरस्कार, सोवियत लैन्ड नहेरू पुरस्कार तथा भारत सरकार का 'पद्मभूषण' सम्मान प्राप्त हुआ था।

प्रस्तुत दुःख कहानी आपकी ठोस यथार्थवादी रचना है। इनमें एक ओर अभावग्रस्त लोगों की दारुण गरीबी का यथार्थ चित्रण हैं। आर्थिक विपन्नता के कारण बेहाल बेबस परिवार की हृदय विदारक कंगाली का वर्णन है। दूसरी तरफ उच्चमध्यम वर्गीय परिवार की औरत सब कुछ होते हुए भी, संतुष्ट न होकर अपने आपको दुःखी समझती हैं। दोनों ओर की 'दुःख' भरी परिस्थितियों का तुलनाकार कहानी का नायक है।

---

जिसे मनुष्य सर्वापेक्षा अपना समझ भरोसा करता है, जब उसी से अपमान और तिरस्कार प्राप्त हो, तब मन वितृष्णा से भर जाता है; एकदम मर जाने की इच्छा होने लगती है; इसे शब्दों में बता सकना सम्भव नहीं।

दिलीप ने हेमा को पूर्ण स्वतंत्रता दी थी। वह उसका कितना आदर करता था, कितनी आन्तरिकता से वह उसके प्रति श्रनुरक्त था। बहुत-से लोग इसे 'अति' कहेंगे। इस पर भी जब वह हेमा को संतुष्ट न कर सका और हेमा केवल दिलीप के उसकी सहेली के साथ सिनेमा देख आने के कारण दिन-भर रूठी रहकर दूसरे ही दिन माँ के घर चली गई, तब दिलीप के मन में क्षोभ का अन्त न रहा।

सितम्बर का अन्तिम सप्ताह था। वर्षा की ऋतु बीत जाने पर भी दिन-भर पानी बरसता रहा। दिलीप बैठक की खिड़की और दरवाजों पर पर्दे डाले बैठा था। वितृष्णा और ग्लानि में समय स्वयं यातना बन जाता है। एक मिनट गुजरना मुश्किल हो जाता है। समय को बीतता न देख दिलीप खीझकर सो जाने का यत्न करने लगा। इसी समय जीने पर से छोटे भाई के धम-धम कर उतरते चले आने का शब्द सुनाई दिया। अलसाई हुई आँख को आधा खोल उसने दरवाजे की ओर देखा।

छोटे भाई ने पर्दे को हटाकर पूछा, "भाईजी, आपको कहीं जाना न हो तो मैं मोटर-साइकिल ले जाऊँ ?"

इस विघ्न से शीघ्र छुटकारा पाने के लिए दिलीप ने हाथ के इशारे से इजाज़त दी, आँखें बन्द कर लीं।

दीवार पर टंगे क्लाक ने कमरे को गुंजाते हुए छः बज जाने को सूचना दी। दिलीप को अनुभव हुआ- क्या देह यों ही कैद में पड़ा रहेगा। उठकर खिड़की का पर्दा हटाकर देखा, बारिश थम गई थी। अब उसे दूसरा भय हुआ, कोई भी बैठेगा और अप्रिय चर्चा चला देगा।

वह उठा। भाई की साइकिल ले, गली के कीचड़ से बचता हुआ और उससे अधिक लोगों की निगाहों से छिपता हुआ वह मोरी दरवाजे से बाहर निकल, शहर की पुरानी फसील के बाग से होता हुआ मिंटो पार्क जा पहुँचा। उस लम्बे-चौड़े मैदान में पानी से भरी घास पर पछुवा के तेज झोंकों में ठिठुरने के लिए उस समय कौन आता!

उस एकांत में एक बेंच के सहारे साइकिल खड़ी कर वह बैठ गया। सिर से टोपी उतार बेंच पर रख दी। सिर में ठण्ड लगने से मस्तिष्क की व्याकुलता कुछ कम हुई।

ख़्याल आया, यदि ठण्ड लग जाने से वह बीमार हो जाए, उसकी हालत खराब हो जाए, तो वह चुपचाप शहीद की तरह अपने दु:ख को अकेला ही सहेगा। 'किसी को ' अपने दु:ख का भाग लेने के लिए न बुलाएगा। एक दिन मृत्यु दबे पाँव आएगी और उसके रोग के कारण, हृदय की व्यथा और रोग को ले, उसके सिर पर सांत्वना का हाथ फेर उसे शांत कर चली जाएगी। उस दिन जो लोग रोने बैठें, उनमें हेमा भी होगी। उस दिन उसे खोकर हेमा अपने नुकसान का अन्दाजा कर अपने व्यवहार के लिए पछताएगी। यही बदला होगा। दिलीप के चुपचाप दु:ख सहते जाने का विचार कर उसने सन्तोष का एक दीर्घ नि:श्वास लिया। करवट बदल ठंडी हवा खाने के लिए वह बैठ गया।

समीप तीन फर्लांग तक मुख्य रेल्वे लाईन से कितनी ही गाड़ियाँ गुजर चुकी थीं, उधर दिलीप का ध्यान न गया था। अब जब फ्रंटियर मेल तूफान तीव्र वेग से कोलाहल करती हुई गुज़री तो दिलीप ने उस और देखा। लगातार फर्स्ट और सेकण्ड के डिब्बों से निकलने वाले तीव्र प्रकाश से वह समझ गया फ्रंर्टियर मेल जा रही है, साढ़े नौ बज गए।

स्वयं सहे अन्याय के प्रतिकार की एक सम्भावना देख उसका मन हल्का हो गया था। वह लौटने के लिए उठा। शरीर में कुछ शैथिल्य बाकी रहने के कारण साइकिल पर न चढ़ वह पैदल-पैदल बागोबाग, बादशाही मस्जिद से टकसाली दरवाजे और टकसाली से भाटी दरवाजे पहुँचा। मार्ग में शायद ही कोई व्यक्ति दिखाई दिया हो। सड़क-किनारे स्तब्ध खड़े बिजली के लैम्प निष्काम और निर्विकार भाव से अपना प्रकाश सड़क पर डाल रहे थे। मनुष्यों के अभाव की कुछ भी परवारह न कर लाखों पतंगे गोले बांध-बांधकर, इन लैम्पों के चारों ओर नृत्य कर रहे थे। और जगत् के यह अद्‌भुत नमूने थे। प्रत्येक पतंगा एक नक्षत्र की भांति अपने मार्ग पर चक्कर काट रहा था। कोई छोटा, कोई बड़ा दायरा बना रहा था कोई दायें को, कोई बायें को, कोई आगे को, कोई विपरीत गति में निरंतर चक्कर काटते चले जा रहे थे। कोई किसी से टकराता नहीं। वृक्षों के भीगे पत्ते बिजली के प्रकाश में चमचमा रहे थे।

एक लैम्प के नीचे से आगे बढ़ने पर उसकी छोटी परछाई उसके आगे फैलती चलती। ज्यों-ज्यों वह लैम्प से आगे बढ़ता, परछाइ पलटकर पीछे हो जाती। बीच-बीच में वृक्षों की टहनियों की परछाई उसके ऊपर से होकर निकल जाती। सड़क पर पड़ा प्रत्येक भीगा पत्ता लैम्पों की किरणों का उत्तर दे रहा था। दिलीप सोच रहा था - मनुष्य के बिना भी संसार कितना व्यस्त और रोचक है।

कुछ कदम आगे बढ़ने पर सड़क-किनारे नीबू के वृक्षों की छाया ने कोई श्वेत-सी चीज़ दिखाई दी। कुछ और बढ़ने पर मालूम हुआ, कोई छोटा-सा लड़का सफेद कुर्ता पायजामा पहिरे एक थाली सामने रखे कुछ बेच रहा है।

बचपन में गली-मुहल्ले के लड़कों के साथ उसने अक्सर खोमचेवाले से सौदा खरीदकर खाया था। अब वह इन बातों को भूल चुका था। परन्तु इस सर्दी में सुनसान सड़क पर, जहाँ कोई आनेवाला नहीं, यह खोमचा बेचनेवाला कैसे बैठा है ?

खोमचेवाले से क्षुद्र शरीर और आयु ने भी उसका ध्यान आकर्षित किया । उसने देखा, रात में सौदा बेचने निकलने वाले इस सौदागर के पास मिटटी के तेल की ठिबरी तक नही। समीप आकर उसने देखा, वह लड़का सर्द हवा में सिकुड़कर बैठा था। दिलीप के समीप आने पर उसने आशा की एक निगाह उसकी ओर डाली ओर फिर आँखें झुका लीं।

दिलीप ने और ध्यान से देखा। लड़के के मुख पर खोमचा बेचनेवालों की चतुरता न थी, बल्कि उसकी जगह थी एक कायरता। उसकी थाली भी खोमचे का थाल न होकर घरेलू व्यवहार की एक मामूली हल्की मुरादाबादी थाली थी। तराजू भी न थी। थाली में कागज़ के आठ टुकड़ों पर पकौड़ो की बराबर-बराबर ढेरियां लगाकर रख दी गई थी।

दिलीप ने सोचा, इस ठण्डी रात में हमी दो व्यक्ति बाहर हैं। वह उसके पास जाकर ठिठक गया। मनुष्य-मनुष्य में कितना

भेद होता है ! परन्तु मनुष्यत्व एक चीज है जो कभी–कभी भेद की सब दीवारों को लांघ जाती है। दिलीप को समीप खड़े होते देख लड़के ने कहा :

''एक–एक पैसे में एक–एक ढेरी।''

एक क्षण चुप रहकर दिलीप ने पूछा ''सबके कितने पैसे ?''बच्चे ने उँगली से ढेरियों को गिनकर जवाब दिया, ''आठ पैसे।''

दिलीप ने केवल बात बढ़ाने के लिए पूछा ''कुछ कम नहीं कर लेगा ?''

सौदा बिक जाने की आशा से जी प्रफुल्लता बालक के चेहरे पर आ गई थी, वह दिलीप के इस प्रश्न से उड़ गई। उसने उत्तर दिया, ''माँ बिगड़ेगी।''

इस उत्तर से दिलीप द्रवित हो गया और बोला ''क्या पैसे माँ को देगा ?'' बच्चे ने हामी भरी।

दिलीप ने कहा, ''अच्छा, सब दे दो।''

लड़के की व्यस्तता देख दिलीप ने अपना रूमाल निकालकर दे दिया और पकौड़े उसमें बंधवा लिए।

आठ पैसे का खोमचा बेचने जो इस सर्दी में निकला है उसके पर की क्या आवस्था होगी ? यह सोचकर दिलीप सिहर उठा। उसने जेब से एक रुपया निकाल लड़के की थाली में डाल दिया। रुपये की खनखनाह्ट से वह सुनसान रात गूंज उठी। रुपये को देख लड़के, ''मेरे पास तो पैसे नही हैं ?''

दिलीप ने पूछा, ''तेरा घर कहा हैं ?''

''पास ही गली में हैं।'' लड़के ने जवाब दिया।

दिलीप मन में उसका घर देखने का कुतूहल जाग उठा। बोला, ''चलो, मुझे भी उधर ही जाना हैं। रास्ते में तुम्हारे घर से पैसे ले लूँगा।''

बच्चे ने घबराकर कहा, ''पैसे तो घर पर भी नहीं होंगे।''

दिलीप सुनकर सिहर उठा, परंतु उत्तर दिया, ''होंगे, तुम चलो।''

लड़का खाली थाली को छाती से चिपटा आगे–आगे चला और उसके पीछे बाईसिकल को थामे दिलीप।

दिलीप ने पूछा, ''तेरा बाप क्या करता है ?''

लड़के ने उत्तर दिया, ''बाप मर गया है।''

दिलीप चुप हो गया। कुछ और दूर जा उसने पूछा, ''तुम्हारी माँ क्या करती है ?''

लड़के ने उत्तर दिया, ''माँ एक बाबू के यहाँ चौका–बर्तन करती थी; अब बाबू ने हटा दिया।''

दिलीप ने पूछा, ''क्यों हटा दिया बाबू ने ?''

लड़के ने जवाब दिया, ''माँ अढ़ाई सौ रुपया महीना लेती थी, जगतू की माँ ने बाबू से कहा कि वह दो सौ रुपय में सब काम कर देगी। इसलिए बाबू की घरवाली ने माँ को हटाकर जगतू की माँ को रख लिया।''

दिलीप फिर चुप हो गया। लड़का नंगे पैर गली के कीचड़ में छपछप करता चला जा रहा था। दिलीप को कीचड़ से बचकर चलने में असुविधा हो रही थी। लड़के की चाल की गति को कम करने के लिए दिलीप ने फिर प्रश्न किया, ''तुम्हें जाड़ा नही मालूम होता!''

लड़के ने शरीर की गरम करने के लिए चाल को और तेज करते हुए उत्तर दिया, ''नहीं।''

दिलीप ने फिर प्रश्न किया ''जगतू की माँ क्या करती थी ?''

लड़के ने कहा, ''जगतू की माँ स्कूल में लड़कियों को घर से बुला लाती थी। स्कूल वालों ने लड़कियों को घर से लाने के लिए मोटर रख ली है उसे निकाल दिया।''

गली के मुख पर कमीटी का बिजली का लैम्प जल रहा था। ऊपर की मंजिल की खिड़कियों से भी गली में कुछ प्रकाश पड़ रहा था। उससे गली का कीचड़ चमककर किसी कदर मार्ग दिखाई दे रहा था।

संकरी गली में एक बड़ी खिड़की के आकार का दरवाजा खुला था ? उसका धुंधला लाल-सा प्रकाश सामने पुरानी ईंटों की दीवार पर पड़ रहा था, इसी दरवाजे में लड़का चला गया।

दिलीप ने झांककर देखा, मुश्किल से आदमी के कद की ऊँचाई की कोठरी में – जैसी प्राय: शहरों में ईंधन रखने के लिए बनी रहती हैं – धुआँ उगलती मिट्टी के तेल की ढिबरी अपना धुंधला लाल प्रकाश फैला रही थी। एक छोटी चारपाई, जैसी कि श्राद्ध में महाब्राह्मणों को दान दी जाती है, काली दीवार के सहारे खड़ी थी। उसके पाये से दो-एक मैले कपड़े लटक रहे थे। एक क्षीणकाय, आधेड़ उम्र की स्त्री मैली-सी धोती में शरीर लपेटे बैठी थी।

बेटे को देख स्त्री ने पूछा, ''सौदा बिका बेटा ?''

लड़के ने उत्तर दिया, ''हाँ माँ,'' और रुपया मां के हाथ में देकर कहा, ''बाकी पैसे बाबू को देने हैं।''

रुपया हाथ में ले माँ ने विस्मय से पूछा, ''कौन बाबू, बेटा ?''

बच्चे ने उत्साह से कहा, ''बाइसिकल वाले बाबू ने सब सौदा लिया हैं। उसके पास छुट्टे पैसे नहीं थे। बाबू गली में खड़ा है।''

घबराकर माँ बोली, ''रुपये के पैसे, कहाँ मिलेंगे बच्चा ?'' सिर के कपड़े को संभाल दिलीप को सुनाने के अभिप्राय से मां ने कहा, ''बेटा, रुपया बाबूजी को लौटाकर घर का पता पूछ ले, पैसे कल आना।''

लड़का रुपया दिलीप को लौटाने आया। दिलीप ने ऊँचे स्वर से, ताकि माँ सुन ले, कहा, ''रहने दो रुपया, कोई परवाह नहीं, फिर आ जाएगा।''

सिर के कपड़े को आगे खींच स्त्री ने कहा, ''नहीं जी, आप रुपया लेते जाइए, बच्चा पैसे कल ले आएगा।''

दिलीप ने शरमाते हुए कहा, ''रहने दीजिए, यह पैसे मेरी तरफ से बच्चे को मिठाई खाने के लिए रहने दीजिए।''

'स्त्री नहीं-नहीं करती रह गई।' दिलीप अँधेरे में पीछे हट गया।

स्त्री के मुरझाए, कुम्हलाए, पीले चेहरे पर कृतज्ञता और प्रसन्नता की झलक छा गई। रुपया आपनी चादर की खूंट में बांध एक ईंट पर रखे पीतल के लोटे से बाँह के इशारे से पानी ले उसने हाथ धो लिया और पीतल के एक बेले के नीचे से मैले अंगोछे में लिपटी रोटी निकाल, बेटे का हाथ धुला उसे खाने को दे दी।

बेटा तुरन्त की कमाई से पुलकित हो रहा था। मुँह बनाकर कहा, ''उं-उं, रूखी रोटी!''

माँ ने पुचकारकर कहा, ''नमक डाला हुआ है, बेटा।''

बच्चे ने रोटी जमीन पर डाल दी और ऐंठ गया, सुबह भी रूखी रोटी-हाँ, रोज़-रोज़ रूखी।''

हाथ आँखों पर रख बच्चा मुँह फैलाकर रोना ही चाहता था, माँ ने उसे गोद में खींच लिया और कहा, ''मेरा राजा बेटा, सुबह जरूर दाल खिलाऊँगी। देख, बाबू तेरे लिए रुपया दे गए हैं। शाबाश!''

''सुबह मैं तुझे खूब सौदा बना दूँगी, फिर तू रोज दाल खाना।''

बेटा रीझ गया। उसने पूछा, ''माँ, तूने रोटी खा ली ?''

खाली अंगोछे को तहाते हुए माँ ने उत्तर दिया, ''हाँ बेटा मुझे भूख नहीं है, तू खा ले!''

भूखी माँ का बेटा बचपन के कारण रूठा था। परन्तु माँ की बात के बावजूद घर की हालत से परिचित था। उसने अनिच्छा से एक रोटी माँ की ओर बढ़ाकर कहा, ''एक रोटी तू खा ले।''

माँ ने स्नेह से पुचकारकर कहा, ''नहीं बेटा, मैंने सुबह देर से खाई थी, मुझे अभी भूख नहीं, तू खा।''

दिलीप के लिए और देख सकना सम्भव न था। दांतों से होंठ दबा वह पीछे हट गया।

मकान पर आकर वह बैठा ही था, नौकर ने आ, दो भद्रपुरुषों के नाम बताकर कहा, आए थे, बैठकर चले गए। खाना तैयार होने की सूचना दी। दिलीप ने उसकी ओर बिना देखे ही कहा, ''भूख नहीं।'' उसी समय उसे लड़के की माँ का 'भूख नहीं' कहना याद आ गया।

नौकर ने विनीत स्वर में पूछा, ''थोड़ा दूध ले आऊँ?''

दिलीप को गुस्सा आ गया। उसने विद्रूपता से कहा, ''क्यों, भूख न हो तो दूध पिया जाता है ?.... दूध ऐसी फालतू चीज़ है ?''

नौकर कुछ न समझ विस्मित खड़ा रहा।

दिलीप ने खीझकर कहा ''जाओ जी।''

मिट्टी के तेल की ढिबरी के प्रकाश में देखा वह दृश्य उसकी आँखों के सामने से हटना न चाहता था।

छोटे भाई ने आकर कहा, ''भाभी ने यह पत्र भेजा है।'' और लिफाफा दिलीप की ओर बढ़ा दिया।

दिलीप ने पत्र खोला। पत्र की पहली लाइन में लिखा था, ''मैं इस जीवन में दु:ख ही देखने के लिए पैदा हुई हूँ...''

दिलीप ने आगे न पढ़, पत्र फाड़कर फेंक दिया। उसके माथे पर बल पड़ गए। उसके मुंह से निकला:

''काश! तुम जानती, दु:ख किसे कहते हैं।.... तुम्हारा यह रसीला दु:ख तुम्हें न मिले तो जिन्दगी दूभर हो जाए।''

### शब्दार्थ-टिप्पणी

**वितृष्णा** विरक्ति, वैराग्य **यातना** कष्ट, पीड़ा **फसील** कोट **दुर्ग** किला **सौदा** सामान **ढिबरी** दीपक, दीया **ठिठक जाना** रुकजाना **द्रवित होना** दया आना **सिहर उठना** काँप उठना **जाड़ा** ठंड, सर्दी **अंगोछा** गमछा **बेला** चौका **ऐंठ जाना** अक्कड़ जाना **तहना** लपेटना, **विनीत** विनयी, नम्र **विद्रूपता** उपहास, मजाक उड़ाना **दूभर** कष्टदायक

### मुहावरे

**आँखें झुकाना** – शर्मिंदा होना, **माथे पर बल पड़ना** – आघात लगना, **दांतों से होठ दबाना** – चुप रहना, **मन हलका होना** – शान्ति मिलना

### स्वाध्याय

**1. सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :**

(1) अपमान और तिरस्कार होने पर मन . . . . . . . से भर जाता है।

(क) त्याग (ख) वैराग्य (ग) वितृष्णा (घ) ग्लानि

(2) दिलीप चुपचाप . . . . . . . की तरह अपने दुख को सहेगा।

(क) वीर (ख) बहादुर (ग) शहीद (घ) योद्धा

(3) वृक्षों के भीगे पत्ते बिजली के प्रकाश में . . . . . . . रहे थे।

(क) चमचमा (ख) चमक (ग) टिमटिमा (घ) जगमगा

(4) स्त्री मैली-सी . . . . . . . में शरीर लपेटे बैठी थी।

(क) साड़ी (ख) धोती (ग) चादर (घ) कंबल

(5) दिलीप ने . . . . . . . फाड़कर फेंक दिया।

(क) पत्र (ख) लिफाफा (ग) पन्ना (घ) अर्जी

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) हेमा अपनी माँ के घर क्यों चली गई ?

(2) बिजली के लैम्प किस भाव से प्रकाश डाल रहे थे ?

(3) दिलीप को समीप खड़ा देख लड़के ने क्या कहा ?

(4) लड़के की माँ बाबू के यहाँ क्या करती थी ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) मनुष्य का मन वितृष्णा से कब भर जाता है ?

(2) जगतू के अद्‌भुत नमूने क्या हैं ?

(3) बाबू ने लड़के की माँ को काम से क्यों हटा दिया ?

(4) स्कूल वालों ने जगतू की माँ को क्यों निकाला ?

(5) दिलीप ने पत्र फाड़कर क्यों फेंक दिया ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच - छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) दिलीप के मन में क्षोभ का अंत न रहा, क्यों ?

(2) नृत्य करते पतंगे कैसे दिख रहे थे ?

(3) लड़के की कोठरी कैसी थी ?

(4) दिलीप के लिए क्या देखना असंभव था ?

**5. आशय स्पष्ट कीजिए।**

(1) मनुष्य के बिना भी संसार कितना व्यस्त और रोचक है।

(2) ''काश ! तुम जानती, दु:ख किसे कहते हैं ।.... तुम्हारा यह रसीला दु:ख तुम्हें न मिले तो जिन्दगी दूभर हो जाए।''

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- मन्नू भंडारी की कहानी 'दो कलाकार' प्राप्त करके पढ़िए।
- प्रेमचंद की कफन कहानी प्राप्त करके पढ़िए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- दरिद्र सम दु:ख जग नाहीं..... तुलसीदास की इस पंक्ति को उदाहरण सहित समझाइए।
- अभावग्रस्त लोगों की मुलाकात की योजना बनाकर छात्रो वहाँ ले जाइये।

# 13 कदम मिलाकर चलना होगा

**अटल बिहारी वाजपेयी**

(जन्म : सन्. 1926)

भारतरत्न से सम्मानित हमारे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1926 के रोज मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर में हुआ था। माता का नाम कृष्णा देवी तथा पिता का नाम कृष्णबिहारी वाजपेयी था। आपने बी. ए. तक की पढ़ाई ग्वालियर से तथा एम.ए., एल. एल. बी. की पढ़ाई कानपुर में की। बचपन से साहित्य के रसिक वाजपायी जी कई बार स्वंतंत्रता प्राप्ति के लिए जेल गये। पत्रकारिता के क्षेत्र में आगे रहकर इन्होंने राष्ट्रधर्म, पांचजन्य, स्वदेश तथा अर्जुन पत्रिकाओं का संपादन किया। बाजपेयी एक उत्तम कवि, गीतकार भी हैं। प्रखर वक्ता थे उनके विरोधी भी उनकी प्रसंशा करते थे। उन्होंने चार दशक तक भारतीय संसद का प्रतिनिधित्व किया। वे तीन बार भारत के प्रधानमंत्री बने। आपको पद्मभूषण, हिन्दी गौरव, लोकमान्य तिलक सर्वश्रेष्ठ सासंद जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

उनकी रचनाओं मे 'मृत्यु या हत्या', 'अमर बलिदान'. 'अमर आग', 'मेरी इक्यावन कविताएँ', 'सेक्युलरवाद', 'मेरी संसदीय यात्रा', 'सुवासित पुष्प', 'विचार बिन्दु', 'शक्ति से शान्ति', 'न दैन्यं न पलायनम्', 'नई चुनौती नया अवसर' आदि प्रमुख हैं।

प्रस्तुत रचना एक आह्वान गीत हैं। इस गीत में वे हम सब भारतवासियों को उन्नति की राह पर आगे बढ़ने के लिए कदम मिलाकर चलने का आह्वान करते हैं। माना कि इसमें बहुत कठिनाइयाँ हैं फिर भी सभी को साथ मिलकर चलना होगा। उस रास्ते पर चलते-चलते अपना सबकुछ न्यौछावर करने के लिए आगे बढ़ने की सीख देते हैं।

---

बधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पावों के नीचे अंगारे
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों में हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रुदन में तूफानों में,
अगर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कहार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को ढलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

सम्मुख फैला अगर ध्येय पथ,
प्रगति चिरंतन कैसा इति अथ,
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल, सफल समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न मांगते,
पावस बनकर ढलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

कुछ काँटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुबन,
परहित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

### शब्दार्थ-टिप्पणी

**सदन** सलाई, रोना, **उद्यान** बाग **वीरान** सुनसान **चिरंतन** शाश्वत **इति** समाप्ति, अंत **श्लथ** थका, ढीला, नरम **अथ** आंरभ **प्रखर** तेज **आहुति** यज्ञ का दव्य

### मुहावरे

**आग लगाकर गलना** - स्वयं नष्ट होना, **पीड़ाओं में पड़ना** दु:ख सहकर बड़ा होना

### स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित दिए गये विकल्पों में से सही चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) कवि किसमें पलने की बात करता है ?

(क) अरमानों (ख) तूफानों (ग) वीरानों (घ) पींड़ाओ

(2) सब कुछ न्योछावर करके कुछ न मांगना कैसा गुण है ?

(क) पावक (ख) संत (ग) पावन (घ) पावस

(3) हमें दूसरों के लिए क्या अर्पण करना होगा ?

(क) प्यार (ख)यौवन (ग) जीवन (घ) तन-मन

(4) कवि ने मनोरथों को कैसा मानने के लिए कहा है ?

(क) समान (ख)मसमान (ग) उत्रम (घ)निम्न

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) प्रलय की घोर घटाओं का क्या अर्थ है ?

(2) हमे पीड़ाओं से मुक्ति पाने के लिए क्या करना होगा ?

(3) क्षणिक जीत या दीर्ध हार से कवि का क्या तात्पर्य हे ?

(4) यात्री का ध्येय क्या है ?

(5) परोपकार के लिए हमे जीवन को कहाँ गलाना-जलाना होगा ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) पँवो के तले अंगारे का अर्थ बताइए ?

(2) कवि अरमानों के बारे मे क्या कहता है ?

(3) प्रगति के बारे में क्या कहते हैं ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) कवि कदम मिलाकर चलने के लिए क्यों कहते हैं ?

(2) 'पावस बनकर ढलना होगा' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(3) काव्य में व्यक्त राष्ट्र-प्रेम का वर्णन कीजिए।

(4) कदम मिलाकर चलन में कौन सी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती है ?

**योग्यता-विस्तार**

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- इसी कविता की तुलना कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'एकला चलो रे.' से कीजिए।

●

| 14 | # नन्हा-सा पौधा |
|---|---|

**लक्ष्मीनारायण लाल**

(जन्म : सन्. 1927, मृत्यु सन् 1987)

आधुनिक नाटटकार लक्ष्मीनारायण लाल का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनकी रचनाओं में 'अंधाकुआँ', 'मादा कैक्टसं' सूखा सरोवर', 'नाटक बहुरंगी', 'सबरंग', 'मोहमंत्र' तथा 'बंदर का खेल' आदि नाटक हैं। 'छोटी चंपा बड़ी चंपा', 'बया का घोंसला', 'अनारकली' उपन्यास हैं तथा एक बूंद जल तथा एक और कहानी उनके कहानी संग्रह हैं।

प्रस्तुत एकांकी 'नन्हा - सा पौधा' में राष्ट्रीय एकता का संदेश है, हमारा देश विविधता में एकता का संजोये है, हमारी भाषाएँ, वेशभूषा, खान-पान अलग-अलग हैं फिर भी हम सब एक हैं, इसे मिटाना असंभव है।

---

**पात्र**

(1) एक पुरुष

(2) मुन्ना

(3) मुन्नी

(4) एक स्त्री तथा चार अन्य लड़के

(1) अहमद

(2) गोखले

(3) सुब्बाराव

(4) चौधरी

*( सूना मंच। बाहर से एक स्त्री आती है। किनारे नन्हा-सा एक पौधा उगा देखकर रुक जाती है। उसे देखती है।.फिर उसे उखाड़कर फेंक देना चाहती है। पर संभव नहीं होता। फिर पुकारती है।)*

**स्त्री :** अरे ! सुनते हो जी, देखो, तो यहाँ किसने क्या कर दिया ? हमारी जमीन का सत्यानाश, किसने की यह बदमाशी ?

***( पुरुष भीतर से निकलता है )***

**स्त्री :** देखो, यहाँ पेड़ लगा दिया किसी ने।

**पुरुषः** अरे, बच्चे ने खेल किया होगा। इतना नन्हा-सा पौधा तो है।

**स्त्री :** नहीं नहीं, उखाड़कर फेंक दो, बेवजह बखेड़ा करेंगे लोग।

**पुरुषः** अपने बच्चे भी तो यही खेलते हैं।

**स्त्री :** सारी भाषा और संस्कार चौपट हो रहे हैं हमारे बच्चों के। एक इल्ल-दुल्ल, दूसरे अब उखाड़कर फेंक दो ना।

***( पुरुष पौधे को उखाड़कर फेंक देने की कोशिश करता है)***

**पुरुषः** अरे। यह तो उखड़ता ही नहीं ? यह है क्या चीज़ ?

**स्त्री :** यही तो कहती थी – उन्हीं लड़कों की करामात हैं।

**पुरुष :** (सहसा) ओ रहा बंगाली छोकरा। सबसे ज्यादा बदमाश ओ चौधरी ! ओ मोनी चौधरी !

***( चौधरी आता हैं।)***

**चौधरी :** नमस्कार

**पुरुष :** क्या नमस्कार ? यहाँ यह पौधा किसने लगाया ?

**चौधरी :** हमने ही लगाया है। हम सब माछखेल कर रहा था। यह जमीन के भीतर से अपने आप निकल आया।

**स्त्री :** अब सम्भालो। और खेलने दो दुनिया के सारे ऊल–जलूल लड़कों को अपने अहाते में।

**पुरुषः** क्यों रे, जमीन से अपने आप कैसे निकल आया ?

**स्त्री :** झूठ बोलता है।

**चौधरी :** अरे, पौधा जमीन के भीतर से नहीं निकलता ?

**पुरुष :** हाँ निकलता तो है। पर वह तुम लोगों ने लगाया है। अपने हाथों से लगाया है।

**चौधरी :** (इस पौधे के बारे में) हम सब ने मिलकर एक स्वप्न देखा था।

**स्त्री :** (डर जाती हैं) हाय राम ? तो सबने मिलकर साजिस की हैं। हमारी जमीन हड़पने

**चौधरी :** नहीं, नहीं, हस सब खेलते हैं।

**स्त्री :** खबरदार। अब यहाँ कोई नहीं खेलेगा। लाओ फावड़ा। इसे खोदकर फेंक दूँ।

**चौधरी :** नहीं, नहीं, ऐसा मत कीजिए।

**पुरुष :** भागता है कि.......।

***( दौड़ाते हैं चौधरी भागता है ? )***

**पुरुष :** रुको, मैं एक रस्सी लाता हूँ। इसमें बांधकर हम दोनो खींचकर उखाड़ देंगे।

(पुरुष रस्सी लाता है। पौधे में बांधता है। स्त्री पुरुष मिलकर रस्सी खींचते है। स अहमद, गोखले, सुब्बाराव, मुन्ना, मुन्नी, चौधरी मंच के किनारे से दोड़े हुए आते हुए उन्हें देखकर हंसने लगते हैं।)

**पुरुष :** पकड़ लो। घेर लो।

**स्त्री :** जाने न पाएँ।

***( दोनों बच्चों को पकड़ना चाहते हैं। बच्चे मंच पर चारों ओर देखते हैं।)***

**सुब्बाराव :** यह पौधा हमारा है।

**अहमद :** यह हमें छाया देगा।

**गोखले :** हम इसके साथ खेलेंगे।

**पुरुष :** न जाने कैसा पौधा है ?

**स्त्री :** वह अपनी तरफ नहीं है।

**पुरुषः** आज हम दोनों मिलकर उखाड़ेंगे।

***( दोनों उखाड़ने के प्रयत्न में गिर-गिर पड़ते हैं। भीतर से मुन्ना और मुन्नी हंसने लगते हैं।***

**स्त्री :** यह क्या तमाशा है ?

**पुरुषः** यह कैसा पौधा है ?

**स्त्री :** किसने लगाया यहाँ ?

**पुरुषः** बोलते क्यों नहीं ?

**मुन्ना :** हमने लगाया है पिता जी।

**स्त्री :** हमने मानी ?

**मुन्नी :** अब्दुल, अहमद, गोखले, सुब्बाराव, चौधरी और हमने।

**पुरुषः** तुम्हें पता है, यह हमारी जमीन है। इसके मालिक हम हैं। अहमद, गोखले, सुब्बाराव और चौधरी के माँ-बाप किसी दिन कह सकते हैं कि यह उनका पेड़ है। इसलिए यह जमीन उनकी है।

**मुन्ना :** नहीं, नहीं, हमेने खेल किया है। ऐसा कुछ भी नहीं।

**मुन्नी :** कल हम सबने एक पेड़ का खेल खेला था। पेड़-पेड़ भाई-भाई।

**मुन्ना :** पेड़ पर बैठा तोता भाई

**मुन्नी :** तोता भाई, आम गिराओ। हम और तुम्हीं खाई।

**मुन्ना :** पेड़ पर बैठा तोता भाई।

**दोनों :** झूठ-मूठ के दुलहिन लाओ पेड़ तरे बैठाई।

*(दोनों प्रसन्नता से गाते हुए दौड़ने लगते हैं। माता-पिता उन्हें चुप करने, पकड़ लेने के लिए दौड़ते हैं। ये दोनों भाग*

*निकलते हैं।)*

**पुरुष :** ठीक हैं, जाने दो। बच्चों ने खेल किया है। याद है तुम्हें, सुब्बाराव ने एक दिन यहां समुद्र बनाया था और उसके तट पर वह मंदिर जिसका नाम रखा था – 'मोनाक्षीटेम्पुल'।

**स्त्री :** बस बस, रहने दो अपनी। गोखले ने यहां गणेश की तस्वीर खीचीं थी, उसी दिन मुझे बुरा लगा था। कौन मुँह लगाने जाय इन गुजराती, मराठी, साउथ इण्डियन और बंगालियों से।

**पुरुष :** अच्छा, बस माली से कहकर इसे खत्म करा देंगे।

**स्त्री :** अरे! यह तो बढ़ रहा है।

**पुरुष :** अरे! सचमुच बढ़ रहा है। यह किसका पौधा है। मुन्ना! ओ मुन्नी!

**स्त्री :** पता नहीं, कहाँ गए दोनों बच्चे ?

(सारे बच्चे गा-गाकर शुरू करते हैं।)

पेड़ पेड़ भाई भाई

हम सब उसके भाई

पेड़ पै बैठा तोता भाई

तोता भाई आम गिराओ

हम और तुम्हीं खाई

झूठ I मूठ के दुलहिन लाओ

पेड़ तरे बैठाई

**स्त्री :** अरे, यह तो हमारी तरफ का खेलगाना है।

**पुरुष :** हम भी अपने बचपन में यही खेलते थे।

**स्त्री :** तुम सब एक–दूसरे की भाषा समझते हो।

**सब :** नहीं।

**स्त्री :** फिर ये पौधा क्या है ?

**सब :** हम हैं। हमारा सपना हैं।

**स्त्री :** क्या तुम लोग इस पौधे को यहाँ से उखाड़ सकते हो।

**सब :** हाँ।

**मुन्ना :** हमारे कहते ही यह पौधा हमारे हाथों में आ जाएगा।

मुन्नी : यह हमें प्यार करता है।

**मुन्ना :** हम इसे प्यार करते हैं।

**पुरुष :** अच्छा, चलो उखाड़ो।

**स्त्री :** देखें, तो भला।

*(मन्नी बढ़कर पौधे को उखाड़कर अपने हाथो में ले लेती है। बच्चे प्रसन्न हैं।)*

**स्त्री :** अरे। यह कैसे हुआ मुन्नी ?

**पुरुष :** यह कैसा चमत्कार ?

**स्त्री :** हम इसे टस से मस नहीं कर पाये।

**पुरुष :** इसका कुछ भी न बिगाड़ सके।

**चौधरी :** यह हमारा सपना है।

**मुन्ना :** हम सब मिलकर खेलेंगे।

**मुन्नी :** यह कितना सुन्दर है।

**पुरुष :** हम इसे फावड़े से खोद डालेंगे।

**स्त्री :** हम इसे यहाँ नहीं रहने देंगे।

*(पुरुष फावड़ा ले आता हैं। पौधे को खोदना शुरू करता हैं। बच्चे फिर हँसना शुरू करते हैं।)*

**पुरुष :** पता नहीं कितनी गहरी जड़ है इसकी ।

**स्त्री :** सह इन लोगों की बदमाशी है।

**पुरुष :** भागते हो या नहीं, यहाँ से।

**सुब्बाराव :** हम यहाँ खेलते हैं।

**मुन्ना :** पिताजी, हमारा पौधा मत खोदिए।

**मुन्नी :** हम सब मिलकर यहाँ खेतले हैं ।

**स्त्री :** मैंने कितनी बार कहा है–अपन लोगों के साथ खेलो।

**मुन्ना :** ये अपने लोग नहीं हैं ?

**स्त्री :** कहाँ हैं ? यह बंगाली है। यह साउथ इंण्डियन, यह मराठी।

**मुन्ना :** यह सब क्या कह रहे हैं आप ?

**मुन्नी :** आपकी यह बात हमारी समझ में नहीं आती।

**अहमद :** नहीं, नहीं। हमारे पौधे को मत तोड़िए।

**पुरुष :** अरे! यह तो टूटता भी नहीं।

**स्त्री :** ंयह कहाँ का है ? इसका क्या नाम है ?

**मुन्ना :** इसका कोई नाम नहीं।

**मुन्नी :** हमारा दोस्त है यह।

**चौधरी :** यह हमें कहानियाँ सुनाता है ।

**अहमद :** हम सब मिलकर इसके साथ खाते–पीते हैं ।

**सुब्बाराव :** यह हमसे बातें करता है ।

**गोखले :** यह हमारी भाषा समझता है।

**मुन्ना :** हम इसकी समझते हैं ।

**पुरुष :** क्या है इसकी भाषा ?

**स्त्री :** हम भीं तो सुनें।

***( बच्चे पौधे के चारों ओर नाचते हुए गाने लगते हैं ।)***

यह पौधा सना है
यह पौधा अपना हैं
नये तन मन का
नये जन गन का
यह पौधा सबका है।
यह पौधा उनका है
बंधे जो एक डोर में
जागते नये भोर में
यह पौधा सपना है
यह पौधा अपना है

***( पौधे को लिए हुए बच्चे गाने लगते हैं।)***

**स्त्री :** मुन्नी। फिर से लगा दो इस पौधे को यहीं।

**पुरुष :** आओ यहीं खेलो।

***( बच्चे पास आते हैं।)***

**स्त्री :** मुझे दो। जरा मैं देखूँ।

**पुरुष :** कितना खूहसूरत है।

**स्त्री :** बच्चों की तरह हंस रहा है।

**पुरुष :** हम सबको निहार रहा है।

**स्त्री :** मै इसे यहीं अपने हाथों से लगाऊँगी।

*( कहाँ जमीन में पौघा लगा देती है। सारे बच्चों के साथ स्त्री पुरुष उस पौंधे ते चारों ओर नाचते हुए गाते हैं।)*

*यह पौधा सपना है*

यह पौंधा अपना है।

*( परदा गिरता हैं।)*

**शब्दार्थ- टिप्पणी**

**सत्यानाश** सर्वनाश **बेजह**-अकारण **बखेडा** झगड़ा **चौपट** खतम नष्ट **दुलहिन** नववधू **गाछखेला** पौधा लगाने का खेल **उल-जलूल** बेकार, फिजूल की **अहाता** चारों ओर से घिरा हुआ मैदान **साजिस** षडयंत्र **इल्ल-दुल्ल** इक्का - दुक्का

**मुहावरे**

**टस से मस न होना** अडिग रहना, मुँह लगना

**स्वाध्याय**

**1. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :**

(1) बच्चे में संस्कार . . . . . . . हो रहे हैं।

(क) नदारद (ख) चौपट (ग) गायब (घ) नष्ट

(2) मुन्नी तोते से गिराने को कहती है।

(क) मिरची (ख) टहनी (ग) अनार (घ) आम

(3) पुरुष पौधे को . . . . . . . के जरिए उखाड़ना चाहता है।

(क) रस्सी (ख) फावड़ा (ग) कुल्हाडी (घ) हँसिया

(4) औरत अपने बच्चों को . . . . . . . लागो के साथ खेलने की राय देती है।

(क) अच्छे (ख) अपने (ग) संस्कारी (घ) शिक्षित

(5) पौधा . . . . . . . की तरह हँसता है।

(क) चाँद (ख) फलों (ग) बच्चों (घ) बादलों

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) स्त्री नन्हें पौधे को क्यों उखाड़ फेंकना चाहती है ?

(2) सुब्बाराव ने क्या खेल किया था ?

(3) पौधे की क्या विशेषता है ?

(4) आखिर में औरत क्या करना चाहती है ?

(5) पौधा किसका प्रतीक है ?

(6) इस एकांकी से हमे क्या संदेश मिलता है ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) पुरुष को किस बात का डर है ?

(2) पौधा कब निकल आया ?

(3) सब बच्चे क्या देखकर हँसने लगे ?

(4) मुन्नी के पिता किसे चमत्कार मानते हैं ?

(5) एकाकी के पात्र राष्ट्रीय एकता के प्रतीक कैसे बन गए हैं ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) मुन्नी को कौन-सी बात समझ में नहीं आई ?

(2) बच्चों द्वारा गाये गये गीत का भावार्थ लिखिए।

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

● 'बँधे जो एक डोर में..... जागते नये भोर में' आशय स्पष्ट कीजिए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

● प्रस्तुत एकांकी का वर्गखंड में भावात्मक पाठ करवाइए।

● 'पर्यावरण संवर्धन : राष्ट्र की सेवा' पर: चर्चा कीजिए।

●

# निमंत्रण पत्र

आज निमंत्रण केवल महत्त्वपूर्ण सामाजिक या धार्मिक अनुष्ठानों तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि अब तो चाय, जलपान, कवि सम्मेलन, नाटक आदि के लिए भी निमंत्रण भेजे जाने लगे हैं। विवाह, जन्मदिन, मुंडन, यज्ञोपवीत संस्कार आदि में तो निमंत्रण – पत्र भेजे ही जाते हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने पर, समारोह मनाए जाने के लिए भी निमंत्रण पत्र भेजकर लोगों को आमंत्रित किया जाता है ।

निमंत्रण पत्र के प्रकार : (i) व्यक्तिगत निमंत्रण पत्र

(ii) पारिवारिक निमंत्रण पत्र

(iii) सार्वजनिक या सामाजिक निमंत्रण पत्र

**निमंत्रण पत्र तथा अन्य पत्रों में अंतर :**

1. निमंत्रण पत्र में सामान्य पत्र की तरह भेजने वाले का नाम, पदनाम अंत में पूरा पद न लिखकर संक्षिप्त रूप में लिखते हैं।
2. निमंत्रित करने वाले व्यक्ति एक से अधिक हो सकते हैं।
3. संबोधन और अभिवादन निमंत्रण पत्र में होना अनिवार्य नहीं है।
4. सामान्य पत्र में तिथि और स्थान पत्र के आरंभ में दिए जाते हैं जबकि निमंत्रण पत्र के अंत में दिए जाते हैं।
5. पत्र में नाम, पदनाम तथा पता विस्तार से देना होता है जबकि निमंत्रण पत्र में केवल नाम लिखते हैं।
6. निमंत्रण पत्र में भेजने वाले के हस्ताक्षर नहीं होते। निमंत्रण पत्र छपे हुए रूप में होते हैं, केवल पाने वाले का नाम ही स्याही से लिखा जाता है या कंप्यूटर से छापा जाता है।
7. पत्र सामान्य काग़ज पर लिखे जाते हैं जबकि निमंत्रण पत्र विभिन्न आकर्षक रूपों, रंगीन कागज, या रंगीन चिकने मोटे कागज पर भी हो सकते हैं और ये हजारों की संख्या में छापे जाते हैं।

**व्यक्तिगत निमंत्रण पत्र**

प्रिय बहन/भाई................,

सहर्ष सूचित हों कि मैंने कुमारी रेखा के साथ 1 अक्टूबर 2015 को विवाह करने का निश्चय किया है। विवाह पंजीयन के पश्चात् अपने निकटस्थ मित्रों तथा रिश्तेदारों के लिए मेरे घर पर एक प्रीतिभोज का आयोजन उसी दिन शाम को 6–00 बजे किया गया है।

इस अवसर पर आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

99, टंकशाल रोड — आपका,

पीलीभीत — विकास

**सरकारी निमंत्रण पत्र**

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष एवं सचिव

हिंदी दिवस समारोह, 14 सितंबर, 2015 के पावन अवसर पर

दोपहर 12–00 बजे समिति के सभागृह में आपको सादर आमंत्रित करते हैं। समय पर उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएँ।

– अध्यक्ष

## स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

   (1) निमंत्रण पत्र किसे कहते हैं ?

   (2) निमंत्रण पत्र के प्रकार लिखिए।

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :**

   (1) निमंत्रण पत्र का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

   (2) सार्वजनिक निमंत्रण पत्र का पारूप प्रस्तुत कीजिए ?

### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- आपके घर आए हुए विभिन्न निमंत्रण पत्रों का संग्रह करें।
- आपके जन्मदिवस का निमंत्रण पत्र तैयार कीजिए।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- विभिन्न प्रकार के निमंत्रण पत्रों का छात्रों द्वारा अलबम तैयार करवायें।

●

| 15 | बाज़ लोग |
|---|---|

# 15 बाज़ लोग

**अनामिका**

(जन्म, सन् 1961 )

समकालीन हिन्दी कवयित्री अनामिका का जन्म मुजफ्फरपुर (बिहार) में हुआ। उनका बचपन घर में अकेले रहने के कारण पुस्तकालय और पुस्तकों के बीच बीता। उन्होंने स्थानीय स्कूल में प्रारंभिक शिक्षा तथा पटना विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं दिल्ली विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। संप्रति वे सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में रीडर हैं। 'खुरदरी हथेलियाँ' , 'गलत पते की चिठ्ठी', 'दूब-धान', 'बीजाक्षर', 'अनुष्टुप', 'समय के शहर में', 'कविता में औरत' आदि इनके प्रसिद्ध कविता संग्रह हैं। 'प्रति नायक' कहानी संग्रह, 'दस द्वारे का पिंजरा' उपन्यास और 'स्त्रीत्व का मानचित्र', 'मन माँजने की जरूरत है', 'पानी जो पत्थर पीता है' आदि विमर्श हैं। अनामिकाजी अनेक राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार से सम्मानित हो चुकी हैं।

उनकी रचनाओँ मे यथास्थिति के चित्रण के साथ-साथ जन-चेतना का स्वर भी सुनाई पड़ता हैं।

यहा संकलित कविता 'बाज़ लोग' में कवयित्री ने उन सामान्य लोगों को बाजीगर कहा है जो समाज में हर महत्वपूर्ण चीजों का निर्माण करते हैं, सुंदर घर बनाते हैं, सड़कें, पुल, गगनचुंबी इमारतें और बाँधों का निर्माण करते हैं। वे बेहद गरीब और कठोर परिश्रम करनेवाले मज़दूर होते हैं। इसलिए समाज में उन्हें कोई महत्व नहीं दिया जाता है। किन्तु यह उन्हीं कठोर परिश्रम करनेवाले लोगों के परिश्रम का परिणाम है कि धरती पर अभी भीं आग, पानी और अन्न सब को उपलब्ध हैं। ये मजदूर अपने बेड़ौल और खुरदरे हाथों से दुनिया के हर चमत्कार का सृजन करते हैं।

---

बाज़ लोग जिनका कोई नहीं होता,
और जो कोई नहीं होते,
कहीं के नहीं होते।
झुण्ड बनाकर बैठ जाते हैं कभी-कभी
बुझते अलावों के चारों तरफ।
फिर अपनी बेडोल खुरदरी अश्वस्त्र
हथेलियां पसार कर,
वे सिर्फ आग नहीं तापते,
आग को देते हैं आशीष
कि आग जिए
जहाँ भी बची है, वह जीती रहे
और खूब जिए।
बाज़ लोग जिनका कोई नहीं होता
और जो कोई नहीं होते,
कहीं के नहीं होते

झुण्ड बनाकर चलाते हैं फावड़े
और देखते - देखते उनके
ऊबड़-खाबड़ पैरो तक
धरती की गहराइयों से
एकदम उमड़ आते हैं
पानी के सोते।
बाज़ लोग सारी बाजियाँ हार कर भी
होत हैं अलमस्त बाजीगर!!

### शब्दार्थ-टिप्पणी

**अलाव** तापने की आग **बेडौल** भद्दा, **खुरदरी** जो चिकना न हो

### स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित दिए गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) बाज़ लोग झुण्ड बनाकर किसके पास बैठते हैं ?

(क) पानी (ख) अलाव (ग) मिट्टी के ढग (घ) पत्थर

(2) बाज़ लोग किसे आशिष देते हैं ?

(क) जलको (ख) दूधको (ग) आगको (घ) बच्चोंको

(3) बाज़ लोग फावड़ा कैसे चलाते हैं ?

(क) अकेले (ख) झुंडमें (ग) धीरे-धीरे (घ) रो-रोकर

(4) बाज़ लोग के उबड़-खाबड़ पैंरों तक धरती की गहराइयों से क्या उमड़ आते हैं ?

(क) पानी का सोते (ख) तेल के सोते (ग) दूध के सोते (घ) बारिश के सोते

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) कवयित्री किन्हें बाज़ लोग कहती है ?

(2) बाज़ लोग किसको आशिष देते हैं ?

(3) सारी बाजियाँ हाकर बाज़ लोग कैसे रहते हैं ?

(4) बाज़ लोग झुण्ड बनाकर कहाँ बैठते हैं ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) प्रस्तुत कविता में किस समाज का वर्णन किया गया है ?

(2) 'जहाँ भी बची है, वह जीती रहे' से क्या तात्पर्य है ?

(3) पानी के सोते कहाँ से निकलते हैं ? कैसे ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) 'बाज़ लोग कहीं के नहीं होते' यह कहने के पीछे कवयित्री का आशय क्या है ?

(2) सारी बाजियाँ हारकर भी बाज़ लोग अलमस्त क्यों कहलाते हैं ?

* **आशय स्पष्ट कीजिए :**

(2) 'बाज़ लोग सारी बाजियाँ हारकर भी होते हैं अलमस्त बाज़ीगर'

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी -प्रवृत्ति**

- 'खुरदरी हथेलियाँ' कविता संग्रह प्राप्त करके पढ़ें।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- फूलचंद गुप्ता की कविता 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' पढ़कर छात्रों को सुनाएँ।

●

| 16 | कल्पना-शक्ति |
|---|---|

**बालकृष्ण भट्ट**

(जन्म : सन् 1884 मृत्यु सन् 1914)

आधुनिक हिन्दी साहित्य के शीर्ष निर्माताओं में से एक बालकृष्ण भट्ट का जन्म इलाहबाद (उ. प्र) में हुआ। इन्हें प्रारंभ में घर पर ही 15-16 वर्ष तक संस्कृत की शिक्षा मिली फिर स्थानीय मिशन स्कूल में दसवीं कक्षा तक अध्ययन किया। ते जमुना मिशन स्कूल प्रयाग में संस्कृत के अध्यापक के रूप में रहे। वे एक सफल नाटककार, पत्रकार, उपन्यासकार और निबंधकार थे। 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका का संपादन किया। उन्होंने विचार-प्रधान निबंध लिखे हैं।

'कल्पना-शक्ति ' सिर्फ मनुष्य के पास होती है। अन्य कोई प्राणी कल्पना नहीं कर सकता, क्योंकि वह सोच नहीं सकता। प्रस्तुत निबंध में लेखक ने कल्पना-शक्ति के महत्व को दर्शाने की कोशिश की है। वे कहते हैं कि कल्पना-शक्ति व्यक्ति की प्रतिभा का परिचायक होती है। कवि और लेखक अत्यंत कल्पनाशील होते हैं। अपनी कल्पना के आधार पर ही वे दुनिया के अमर साहित्य का सृजन करते हैं। कल्पना सृजन के लिए अनिवार्य तत्व हैं। किन्तु लेखक व्यंग्यपूर्ण भाषा में हमें यह भी बताने से नहीं चूकते कि सिर्फ कल्पना करना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि अभ्यास ज्यादा महत्वपूर्ण होता है।

---

मनुष्य की अनेक मानसिक शक्तियों में कल्पना-शक्ति भी एक अद्‌भुत शक्ति है। यद्यपि अभ्यास से यह शतगुण अधिक ही सकती हैं, पर इसका सूक्ष्म अंकुर किसी-किसी के अंत:करण में आरंभ ही से रहता हैं, जिसे प्रतिभा के नाम से पुकारते हैं और जिसका कवियों के लेख में पूर्ण उद्‌गार देखा जाता है। कालिदास, श्रीहर्ष, शेक्सपीयर, मिल्टन प्रभृति कवियों की कल्पना शक्ति पर चित्त चकित और मुग्ध हो, अनेक तर्क-वितर्क भूल-भलैया में चक्कर मारता, टकराता, अंत की इसी सिद्धान्त पर आकर ठहरता है कि वह कोई प्राक्तन संस्कार का परिणाम है या ईश्वर-प्रदत्त शक्ति (जीनियस) है। कवियों का अपनी कल्पना-शक्ति के द्वारा ब्रह्मा के साथ होड़ करना कुछ अनुचित नहीं है, क्योंकि जगत्-स्रष्टा तो एक ही बार जो कुछ बन पड़ा, सृष्टि-निमाण-कौशल दिखलाकर आकल्पांत फ़रागत हो गए; पर कविजन नित्य नई-नई रचना के गढंत न-जाने कितनी सृष्टि-निर्माण-चातुरी दिखलाते रहते हैं।

यह कल्पना-शक्ति कल्पना करने वाले के हृद्‌गत भाव या मन के परखने की कसौटी या आदर्श है। शांत या वीर प्रकृति वाले से श्रृंगार-रस-प्रधान कल्पना कभी न बन पड़ेगी। महाकवि मतिराम और भूषण इसके उदाहरण हैं। श्रृंगार-रस में पगी जयदेव की रसीली तबियत के लिए दाख और मधु से भी अधिकाधिक मधुर गीतगोविन्द ही की रचना विशेष उपयुक्त थी। राम-रावण या कर्णार्जुन युद्ध का वर्णन कभी उनसे न बन पड़ा। यावत्-मिथ्या और दरीग़ की क़िबलेगाह इस कल्पना-पिशाचिनी का कहीं ओर छोर किसी ने पाया है। अनुमान करते-करते हैरान गौतम मुनि ''गौतम'' हो गए। कणाद किनका खा-खाकर तिनका बीनने लगे; पर उन्होंने मन की मनभावनी कन्या-कल्पना का पार न पाया। कपिल बेचारे पच्चीस तत्त्वों को कल्पना करते-करते ''कपिल'' अर्थात् पीले पड़ गए। व्यास ने इन तीनों महादार्शनिकों की दुर्गति देख मन में सोचा, कौन इस भूतनी के पीछे दौड़ता फिरे; यह संपूर्ण विश्व जिसे हम प्रत्यक्ष देख-सुन सकते हैं, सब कल्पना -ही-कल्पना, मिथ्या, नाशवान् और क्षण-भंगुर है, अतएव हेय है। उन्हीं की देखादेखी बुद्धदेव ने भी अपने बुद्धत्व का यही निष्कर्ष निकाला कि जो कुछ कल्पना-जन्य है, सब क्षणिक और नश्वर है, ईश्वर तक को उन्होंने इस कल्पना के अंतर्गत ठहराकर शून्य अथवा निर्वाण ही को मुख्य माना। रेखागणित के प्रवर्तक उक्लैदिस (यूक्लिड) ज्यामिति की हरेक शकल में बिन्दु और रेखा की कल्पना करते-करते हमारे सुकुमार-मति इन दिनों के छात्रों का दिमाग ही चाट कए। कहाँ तक गिनावें संपूर्ण भारत-का-भारत इसी कल्पना के पीछे गारत हो गया, जहाँ कल्पना (थियरी) के अतिरिक्त करके दिखाने योग्य (प्रैक्टिस), कुछ रहा ही नहीं। यूरोप के अनेक वैज्ञानिकों की कल्पना की शुष्क कल्पना से कर्तव्यता (प्रैक्टिस) मे परिणत होते देख यहाँ वालों को हाथ मल-मल पछताना और 'कलपना' पड़ा।

प्रिय पाठक़! यह कल्पना बुरी बला हैं। चौकस रहो, इसके पेच में कभी न पड़ना, नहीं तो पछताओगे। आज हमने भी इस कल्पना की कल्पना में पड़ बहुत-सी झूठी-मूठी कल्पना कर आपका थोड़ा-सा समय नष्ट किया, क्षमा करियेगा।

## शब्दार्थ-टिप्पणी

**प्रतिभा** बुद्धि **प्राक्तन** प्राचीन **फरागत** छुट्टी, मुक्ति **प्रदत्व** दिया हुआ **यावत-मिथ्या** सब असत्य,सब झूठ **दरोग** असत्य, झूठ **क़िबलेगाह** काबा, सम्माननीय व्यक्ति **हेय** त्याज्य, छोड़ने योग्य, तुच्छ, खराब **नश्वर** नष्ट हो जानेवाला **निर्वाण** मुक्ति **गारत** नष्ट, बरबाद **पगीहुई** डूबी हुई **प्रभृति** इत्यादि **आकल्पांत** कल्प के अंत तक के लिए (कल्प-चारों युग हरबार बीत जाएँ उतना समय) **फ़ारगत** अलग, मुक्त

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित दिए गये विकल्पो में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) कल्पना-शक्ति किस संस्कार का परिणाम है ?

(क) पाश्चानीत्व (ख) प्राचीन (ग) भारतीय (घ) गणितिक

(2) मतिराम और भूषण कैसी कविता लिखते थे ?

(क) रौद्र रस से परिपूर्ण (ख) शृंगार रस से परिपूर्ण (ग) वीर रस से परिपूर्ण (घ) करुण रस से परिपूर्ण

(3) कपिल ने कितने तत्त्वों की चर्चा की है ?

(क) 23 (ख) 25 (ग) 27 (घ) 28

(4) लेखक कल्पना को लेकर कैसे रहने के लिए कहते हैं ?

(क) चौकस (ख) निश्चिंत (ग) अनिश्चिंत (घ) भुलक्कड़

(5) लेखक ने कल्पनाजन्य को क्या बताया ?

(क) सुखदायक (ख) दुखदायक (ग) क्षणिक और नश्वर (घ) भावनामय

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) गीतगोविंद किसकी रचना है ?

(2) लेखक ने कल्पना की कैसी बला कहा है ?

(3) रेखागणित के प्रवर्तक कौन हैं ?

(4) मनुष्य में सबसे बड़ी अद्‌भुत शक्ति कौन-सी है ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) कविजन नई-नई रचनाओं के जरिए क्या दिखलाते हैं ?

(2) लेखक किन कवियों की कल्पना-शक्ति पर चित्त-चकित और मुग्ध है ?

(3) कवि अपनी कल्पना-शक्ति के द्वारा किसके साथ होड़ करना अनुचित समझते हैं ?

(4) 'कल्पना-शक्ति' में किनको परखने की कसौटी है ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) बालकृष्ण भट्ट के निबंध-लेखन पर प्रकाश डालिए ।

(2) लेखक ने कल्पना-पिशाचिनी अथवा भूतनी किस भाव से कहा है ?

**5. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) यह कल्पना बुरी बला है।

(2) मनुष्य की अनेक शक्तियों में कल्पना-शक्ति भी एक अद्‌भुत शक्ति है।

**6. सविग्रह समास भेद बताइए :**

तर्क-वितर्क, सृष्टि-निर्माण-कौशल, महादार्शनिक

**7. लेखक ने निम्नलिखित शब्दों का व्यंग्य के लिए किस तरह उपयोग किया हैं ?**

गौतम, कपिल, कल्पना

**8. दिए गए विकल्पों में रिक्त-स्थान की पूर्ति उचित विकल्प चुनकर कीजिए :**

(1) कल्पना-शक्ति . . . . . . . शक्ति हैं।

(क) ईश्वरप्रदत्त (ख) भावप्रदत्त (ग) कल्पनाप्रदत्त (घ) अनुभव-प्रदत्त

(2) कल्पना-शक्ति को . . . . . . .के नाम से पुकारते हैं।

(क) शक्ति (ख) प्रतिभा (ग) ज्ञान (घ) प्रभा

(3) कल्पना-शक्ति के द्वारा . . . . . . .के साथ होड़ करना कुछ अनुचित नहीं है।

(क) विष्णु (ख) ब्रह्मा (ग) महेश (घ) शंकर

**योग्यता-विस्तार**

- ग्रीस के आर्किमिडीज की कल्पना-शक्ति ते विषय पर वर्ग-चर्चा का आयोजन कीजिए।

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- छात्रों मे कल्पना-शक्ति के विषय करने के लिए काव्य-पूर्ति करवाइए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- इस निबंध में प्रस्तुत 'कल्पना-शक्ति' के बारे में कुछ उदाहरण देकर विस्तृत जानकारी दे।

●

# 17 गज़ल

**विजय तिवारी**

(जन्म : सन् 19563)

विजय तिवारी का जन्म गुजरात के अहमदाबाद में 1963 में हुआ था। इन्होंने गुजरात विश्वविद्यालय से अनुस्तनातक तथा बी.एड. की उपाधि प्राप्त की और अध्यापन कार्य से जुड़ गए। अपने अध्ययपन काल से ही इन्हें लेखन का शौक था।

ये मूलत: कवि तथा गज़लकार हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं प्रकाशित हैं। 'निर्झर' तथा 'फल खाए शज़र' इनके प्रसिद्ध गज़ल संग्रह हैं। ये कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से सम्मानित हैं। जिनमें 'कविवर मैथिलीशरण गुप्त सम्मान', 'साहित्य शिरोमणि', 'साहित्य श्री सम्मान' आदि प्रमुख हैं। इनके द्वारा संपादित 'धरा से गगन तक' संभवत: विश्व का सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी काव्य संकलन है।

प्रस्तुत गज़ल 'फल खाए शज़र' से उद्धत की गई है। जीवन की विषम परिस्थितियों से जूझते हुए भी कवि अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्षरत है। इसके लिए वह मौत से दो-दो हाथ करने को तैयार है। हर परिस्थिति में पाठक को संघर्षरत रहकर जीते की प्रेरणा देती है।

---

राह में काँटे बिछा दो फिर भी मैं चलता रहूँगा,
आँधियों में भी दिया बन के मैं जलता रहूँगा।

तान पर सीना हमेशा मौत से लड़ता रहूँगा,
शान से मरकर दिलों में तो सदा पलता रहूँगा।

मुश्किलों से डर के जो मर जाएँ वो तो और होंगे,
जीत हो या हार पर संघर्ष मैं करता रहूँगा।

मैने अपना घर जलाकर रोशनी दुनिया को दी हैं,
मिल सके सुख इस जहाँ को इसलिए मरता रहूँगा।

हाथ से मेरे क़लम भी छीन ले चाहे ज़माना,
फिर भी अपने खून से तो गीत मैं लिखता रहूंगा।

सोचता हूँ मौत से भी आज दो-दो हाथ कर लूँ,
मिट गया तो भी सदा इतिहास मैं बनता रहूँगा।

चाहता हूँ बस यही बन जाऊँ गर मैं भी 'विजय'-सा,
तो मुसीबत में भी फिर मदमस्त हो हँसता रहूँगा।

**शब्दार्थ-टिप्पणी**

**राह** रास्ता, पथ **मुश्किल** परेशानी, मुसीबत **संघर्ष** स्पर्धा प्रयत्न, होड़, चेष्टा **रोशनी** प्रकाश, ज्योति **जहां** जमाना, संसार, दुनिया, जगत, विश्व **मदमस्त** निश्चिंत

## मुहावरे

**सीना तानना** – स्वाभिमान से भरपूर होना, मुकाबले को तैयार

**दिलों में पलना** – बेहद प्यार पाना, बेहद सम्मान पाना

**दो-दो हाथ करना** – युद्ध करना, लड़ना।

**इतिहास होना** – अमर होना, अद्वितीय काम करना

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित दिए गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) कवि कैसे रास्ते पर भी चलते रहने की बात करता है ?

(क) पथरीले रास्ते (ख) काँटेवाले रास्ते (ग) चिकने रास्ते (घ) टेढ़े रास्ते

(2) जीत हो या हार लेकिन कवि क्या करने को हमेशा तत्पर है ?

(क) पर्यटन (ख) देशाटन (ग) परामर्श (घ) संघर्ष

(3) कवि ने दुनिया को रोशनी देने के लिए क्या जला दिया है ?

(क) घर (ख) खेत (ग) मशाल (घ) कपड़े

(4) कवि किससे दो-दो हाथ करने की सोचता है ?

(क) दुश्मन (ख) आंतकवादी (ग) मौत से (घ) चोर से

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) लोगों के दिलों में पलने के लिए कवि क्या कर सकता है ?

(2) मौत के भी सामने आने पर क्या करना चाहिए ?

(3) कलम छिन जाने पर कवि क्या करेगा ?

(4) मुसीबत में भी किस करह हँसते रहना चाहिए ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिए :**

(1) सुख, शान्ति के लिए कवि क्या करना चाहता है ?

(2) 'मनुष्य का जीवन संघर्ष से भरा है' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

**4. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) आँधियों में भी दिया बनकर के मैं जलता रहूँगा ।

(2) जीत हो या हार पर संघर्ष मैं करता रहूँगा।

**5. काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :**

(1) मैंने अपना घर जलाकर.....................

.............................इसलिए मरता रहूँगा।

(2) हाथ से मेरे कलम भी .......................

............................गीत मैं लिखता रहूँगा।

**6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

काँटा, दिया, हमेशा, डर, जीत, हार

**7. विलोम शब्द लिखिए :**

डर, हमेशा, काँटा, रोशनी, मुश्किल

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- हिन्दी के प्रतिष्ठित गज़लकारों के संकलन पढ़िए।
- हिन्दी और गुजराती की पाँच-पाँच गज़लों का संकलन तैयार कीजिए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- इस गज़ल को वर्ग में गाकर सुनाएँ।
- विद्यार्थियों को पुस्तकालय में ले जाकर हिन्दी और गुजराती के गज़ल संग्रह दिखाएँ।

●

# 18 पहली चूक

**श्रीलाल शुक्ल**

(जन्म : सन् 1925, मृत्यु : सन् 2011)

प्रसिद्ध व्यंग्यकार – कथाकार श्रीलाल शुक्ल का जन्म 31 दिसम्बर, 1925 ई. में लखनऊ के पास अतरौली नामक गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा लखनऊ तथा इलाहाबाद में हुई। 1950 में वे भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई. ए. एस) के लिए चुने गए। उत्तर प्रदेश शासन में उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया।

श्रीलाल शुक्ल ने साहित्य रचना 1955 में आरंभ की। इन्होंने अपने व्यंग्लेखन में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की। श्रीलाल शक्ल की सबसे प्रसिद्ध रचना 'राग दरबारी' उपन्यास है। इस व्यंग्यपूर्ण अपन्यास पर उन्हें 1970 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन्होंने जन-जीवन से जुड़ी भाषा का प्रयोग किया है। आप ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानति हुए हैं।

शुक्लजी की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं – 'अंगद का पाँव, यहाँ से, वहाँ', 'सूनी घाटी का सूरज', 'अज्ञातवास', ' 'सीमाएँ टूटती हैं', 'आदमी का ज़हर', इत्यादि।

प्रस्तुत पाठ 'पहली चूक' में लेखक ने एसे लोगों पर व्यंग्य किया हैं जो शहर में रहते हैं और गाँव के वातावरण से बिलकुल अपरिचित होते है। वे पुस्तकों और सिनेमा से प्राप्त जानकारी के आधार पर मन में कल्पना का गाँव बनाते हैं। पर गाँव के यथार्थ जीवन से सामना होने पर उनका कल्पना का गाँव टूट जाता है।

---

**उत्तम खेती, मध्यम बान,**

**अधम चाकरी, भीख निदान।**

यह कहावत पहले मैं कई बार सुन चुका था। अब हुआ यह कि बी. ए. पास करने के बाद मुझे अधम चाकरी मिली ही नहीं। इसलिए उसे भीख निदान समझकर मैंने खेती के उत्तम व्यवसाय में हाथ लगाना चाहा और अपने गाँव चला आया।

मेरे चाचा ने मुझे समझाया कि खेती का काम है तो बड़ा उत्तम, पर फारसी पढ़कर जिस प्रकार तेल नहीं बेचा जा सकता वैसे ही अंग्रेज़ी पढ़कर खेत नहीं जोता जा सकता। इस पर मैंने उन्हें बताया कि यह सब कुदरत का खेल है क्योंकि फारस में तेल बेचने वाले संस्कृत नहीं बोलते, खेत जोतते हैं।

चचा बोले, ''बेटा यह खेती का पेशा तुमसे नहीं चलेगा। यह तो हम जैसे जाहिलों के लिए है। इसमें तो दिन-रात पानी और पसीना, मिट्‌टी और गोबर से खेलना पड़ता है।''

इस पर मैंने जवाब दिया कि यह शरीर ही मिट्‌टी का बना हुआ है और यह गोबर तो परम पवित्र वस्तु हैं। मिट्‌टी का स्थान यदि पंचभूत में हैं तो गोबर का स्थान पंचगव्य में है।

मेरे मुँह से पवित्रता की बात सुनते ही चचा दंग रह गए। आस-पास बैठे हुए लोगों में ''धन्य है'' का नारी लग गया। तब मैंने फिर कहना शुरू किया, ''और चचा, यह खेती जाहिलों का पेशा नहीं है। बड़ों-बड़ों ने इसकी प्रशंसा की है। कार्लाइल ने इस पर लेख लिखे हैं, टॉलस्टाय तो स्वयं किसान ही हो गया था, बाल्टेयर खुद बागवानी करता था, ग्लैड्स्टन लकड़ी चीरता था। अपने देश में भी गौतम जैसे ऋषि गेहूँ बोते थे। वैस तो, कंद-मूल-फल खाने के कारण उनकी दिलचस्पी हॉर्टिकल्चर में थी और, वे ज्यादातर फल और शकरकंद ही पैदा करते थे, इसलिए खेती को उत्तम मानना ही चाहिए। मैं कल से खेती करूँगा। मेरा यही फैसला है।''

मेरे चाचा मेरी बात से प्रभावित तो हुए पर बोले ''बेटा, खेती करोगे पर इतना समझ लो कि खेतों के आस-पास न तो कॉफी हाउस होते हैं न क्लब। सिनेमाघरों की गद्‌देदार कुर्सियों की जगह अरहर की ठूँठियों पर घूमना-फिरना होता है।''

यहाँ मैं आपको बता दूँ कि मुझे सिनेमा का बड़ा शौक है। यह इसलिए कि सिनेमा खेती की उन्नति का एक अच्छा साधन है। सिनेमा द्वारा खेती का बड़ा प्रचार हुआ है। बडे-बड़े हीरो खेत जोतने जाते हैं और गाते जाते हैं। हीरोइन खेत पर टोकरी में रोटी लेकर आती है। हरी-भरी फ़सल में आँखमिचौनी का खेल होता है। फ़सल काटते समय हीरोइन के साथ बहुत-सी लड़कियाँ नाचती हैं, और गाती भी हैं। वे नाचती जाती हैं और फ़सल अपने-आप कटती जाती है। ऐसे ही मधुर दृश्यों को देखकर पढ़े-लिखे आदमी गाँवों में आने लगते हैं और खेतों के चककर काटने लगते हैं। इस प्रकार सिनेमा द्वारा खेती की शिक्षा मिलती है। सच पूछिए तो खेती करने की सच्ची शिक्षा मुझे भई सिनेमा से ही मिली थी।

दूसरे दिन चचा ने मुझसे खेतों पर जाकर काम करने के लिए कहा। मैंने पूछा, ''खेत कहाँ पर हैं।''

उन्होंने कहा, ''गाँव के दक्खिन की ओर, रमेसर की बाग के आगे से गलियारा जाता है। गलियारे से पश्चिम एक राह फूटती हैं। राह से उत्तर एक मेंड़ जाती है। मेंड़ के पूरब गन्ने का एक खेत है। गन्ने के खेत के पास बाजरा खड़ा है। वहीं अपने खेत जोते जा रहें हैं। तुम जाकर काम देखो।''

मैं चल पड़ा। कुवार का महीना था। आसमान पर हल्के-हल्के बादल थे। ताड़ और खजूर के पेड़ हिल-हिलकर एक-दूसरे के गले मिल रहे थे। सब कुछ सिनेमा-जैसा लग रहा था। तभी आगे एक कुआँ दीख पड़ा। सिनेमा में हीरोइन कुएँ पर पानी भरती है और हीरो खेत की ओर जाते हुए उससे बातें करता है। मैंने रुककर सीटी बजाई पर कुआँ सुनसान था। किसी के पायल नहीँ झनके, न कोई घड़ा फूटा। इसी तरह पूरा रास्ता कट गया। न खेतों में आँखमिचौनी का दृश्य दीख पड़ा, न हीरो ने कोरस गाए। मुझे देहात से बड़ी निराशा हुई। चुपचाप अपने रास्ते पर चलता गया।

अब मैं ऐसी जगह पहुँचा जहाँ मेरे खेत होने चाहिए थे। चाचा ने बताया था कि वहीं गन्ने का खेत है और वहीं बाजरा खड़ा है। मैं गन्ने के बारे में ज्यादा नहीं जानता था। इसलिए बाजरे का सहारा लेना पड़ा। एक मेंड़ पर एक अधेड़ किसान खड़ा हुआ था। उसके पास जाकर अपना गाना बन्द करते हुए मैंने पूछा, ''आपका नाम बाजरा तो नहीं है ?''

किसान ने मेरी ओर घूरकर देखा, फिर घबराहट के साथ पूछा ''यह आप पूछ क्या रहे हैं ? मेरा नाम तो रामचरन है।''

मैंने रामचरन के कन्धे पर हाथ रखकर सार्वभौमिक मित्रता के भाव से कहा, ''तो भाई रामचरन, मुझे बताओं ओह बाजरा कौन है ?'' मेरी बात सुनते ही रामचरन ज़ोर से हँसने लगा। आस-पास काम करते हुए किसानों को पुकारकर उसने कहा, ''यह देखो, ये भैया तो बाजरा को आदमी समझ रहे हैं।'' दो-तीन किसान हँसते हुए वहीं आ गए। मैं समझ गया कि मुझसे चूक हो गई। इसलिए बात पलटते हए मैंने कहा, ''ओ, मैं तो हँसी कर रहा था दरअसल मैं तो बाजरे के पेड़ की छाँह ढूँढ़ रहा हूँ। उसी पेड़ के पास मेरे चचा के खेत हैं।''

इस बार वे किसान कुछ और ज़ोर से हँसे। मुझे भई झेंप-सी लगी। पर मैंने हँसकर इस बात को टाल दिया।

दूसरे दिन से ही मुझे इस बात की चिन्ता हुई कि ऐसी चूक मुझसे कहीं दुबारा न हो जाए। इसलिए कृषि-शास्त्र की मोटी-मोटी किताबें मँगवाकर मैंने, उनका अध्ययन आंरम्भ कर दिया। गाँव से मैं हताश हो गया था। वहाँ वह था ही नहीं जो मैंने रुपहले पर्दे पर देखा था। फिर भी मैं अध्ययन करता रहा। अध्ययन करते-करते मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि आदर्श खेती गाँव में हो ही नहीं सकती, वह शहर में ही होती है। यह सब इस प्रकार से हुआ।

मुझे बीज और खाद खरीदन के लिए बीजगोदाम जाना पड़ा। बीज गोदाम के कर्मचारी शहर गए हुए थे। इसलिए मैं भी शहर चला गया। दूसरे दिन मुझे अपने खेतों में अच्छे हलों से जोताई करानी थी। अच्छे हल शहर में मिलते हैं। इसलिए मैं फिर शहर पहुँचा। तीसरे दिन मुझे नहर में एक नया पाइप लगवाने की ज़रूरत आने पड़ी। उसके लिए नहर के बड़े इन्जीनियर का हुक्म लेना पड़ता है। वे शहर में रहते हैं। इसलिए मैं फिर शहर गया। चौथे दिन कुछ कीटाणुनाशक दवाइयाँ खरीदने के लिए मुझे शहर का चक्कर लगाना पड़ा। फिर मुझे कृषि-विभाग के एक कर्मचारी की शिकायत करने के लिए शहर जाना पड़ा। उसके बाद मैं जितना ही खेती की समस्याओं को समझता गया उतना ही शहर जाने की आवश्यकता बढ़ती गई। इसलिए एक दिन मैंने कृषि-शास्त्र की सब किताबें एक बैग मे बंद की और अपनी कार्डराय की पतलून और रंग-बिरंगी छापेदार बुश शर्ट पहनी, बेल्ट, कैप लगाई और, चचा से कहा, ''देखिए,

यह खेती का काम ऐसा है कि बिना शहर गए उसे साधना कठिन है। इसलिए मैं शहर जा रहा हूँ। वही रहूँगा और वहीँ से वैज्ञानिक ढंग की खेती करूँगा।''

चचा ने प्रसन्नता पूर्वक हँसकर कहा, ''जैसे खूँटे से छुटी हुई घोड़ी भूसे के ढेर पर मुँह मारती है, जैसे धूप में बँधी हुई भैंस तालाब की ओर दौड़ती हैं, वैसे ही तुम्हारा शहर की ओर जाना बड़ा स्वाभाविक और उचित हैं। मैं आदमी पहचानने में कभी चूक नहीं करता, पर तुम्हें पहचानने में ही मुझसे पहली चूक हुई। जाओ, शहर ही में रहकर खेती करो।''

मैंने भी प्रसन्न मुद्रा में कहा, ''नहीं चचा। चूक आपसे नहीं हुई, पहली चूक तो मुझी से हुई थी जो मैंने बाजरे को पहले आदमी समझा और बाद में उसे छायादार पेड़ समझता रहा। पर कोई बात नहीं। अब मैं शहर में रहकर बाजरे के विषय में अपनी रिसर्च करूँगा और बताऊँगा कि किस खाद के प्रयोग से बाजरे की लताओं में मीठे और बड़े-बड़े फल लाए जा सकते हैं।''

इस प्रकार हम दोनों ने प्रसन्नतापूर्वक एक-दूसरे से विदा ली। मैं सीटी बजाता हुआ स्टेशन की ओर चल दिया और वे बैलों की पूँछ उमेठते हुए खेत की ओर चले गए।

## शब्दार्थ-टिप्पणी

**जाहिल** निकम्मा, अनपढ़ **मेंड** खेत के बीच मिट्टी की सीमा **कुवार** क्वार **कोरस** समूह गान **अधम** निष्कृष्ट, निम्न, नीची **चाकरी** नौकरी **पंचभूत** पंचतत्व क्रांतिकारी भूमि, जल, अग्नि, आकाश और हवा **कार्लाइव** अंग्रेजी लेखक, सूची लेखक **वोल्टेयर** फैंचलेखक **कार्डरोय** एक तरह का मोटा सूती कपड़ा

## मुहावरे

**आँख मिचौली खेलना** - लुका-छिपी का खेल खेलना **राह फूटना** रास्ता निकलना **बात पलटना** बात बदलना

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित दिए गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) लेखक ने किस व्यवसाय को उत्तम व्यवसाय कहा है ?

(क) खेती का व्यवसाय (ख) कपड़े का व्यवसाय (बनाई) (ग) लोहे का व्यवसाय (घ) पशुपालन का व्यवसाय

(2) इनमें से गोबर का स्थान कहाँ है ?

(क) पंचभूत (ख) पंचगव्य (ग) पंचवटी (घ) पंचदेव

(3) लेखक किसका शौकीन है ?

(क) खेल खेलने का (ख) पढ़ने का (ग) सिनेमा देखने का (घ) घूमने का

(4) लेखक ने बाज़रा को क्या समझा था ?

(क) आदमी (ख) पेड़ (ग) जानवर (घ) पक्षी

(5) लेखक शहर जाकर क्या करना चाहते थे ?

(क) व्यवसाय (ख) अध्यापन (ग) खेती (घ) रिसर्च

**2. निम्नलिखित दिए गये विधानों की पूर्ति उचित विकल्प चुनकर कीजिए :**

(1) बेटा यह खेती का पेशा तुमसे नहीं चलेगा। यह तो हम जैसे . . . . . . . है।

(क) जाहिलों के लिए (ख) समझदारों के लिए (ग) अनपढ़ों के लिए (घ) शिक्षित लोगों के लिए

(2) अध्यपन करते-करते मैं इस नतीजे पर पँहुचा कि आदर्श खेती गाँव में . . . . . . . ।

(क) हो सकती है (ख) नहीं हो सकती है (ग) आसानी से हो सकती है (घ) तीनों मे से एक भी नहीं

(3) मेरे मुँह से पवित्रता की बात सुनते ही चचा . . . . . . .

(क) आश्चर्य चकित रह गए। (ख) दंग रह गए। (ग) भौचक्के रह गए। (घ) सोचते रह गए।

(4) दूसरे दिन से ही मुझे इस बात की चिंता हुई कि ऐसी चूक मुझ से कहीं . . . . . . .।

(क) तीसरी बार न हो जाय। (ख) वापस न हो जाय। (ग) दुबारा न हो जाये। (घ) फिर से न हो जाए।

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) लेखक कौन-सी कहावत कई बार सुन चुके थे ?

(2) लेखक को बीज और खाद खरीदने कहाँ जाना पड़ा ?

(3) लेखक ने बाजरे को क्या-क्या समझा ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के दो -तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) लेखक के चाचा ने लेखक को क्या समझाया ?

(2) लेखक के चाचा का खेत कहाँ पर स्थित हैं ?

(3) कुआँ देखकर लेखक ने क्या किया ?

(4) रामचरन जोर-जोर से क्यों हँसने लगा ?

**5. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिए :**

(1) चाचा को खेती का महत्त्व बताने के लिए लेखक ने कौन-कौन से उदाहरण दिए ?

(2) सिनेमा द्वारा किस प्रकार की खेती की शिक्षा मिलती है ?

(3) लेखक को देहात से क्यों निराशा हुई ?

(4) लेखक को बार-बार शहर क्यों जाना पड़ा ?

(5) पहली चूक किससे हुई, और कैसे ?

**6. ( 1 ) विलोम शब्द लिखिए :**

प्रशंसा, उन्नति, सुनसान, निराशा

**( 2 ) प्रत्यय अलग करके मूल शब्द लिखिए :**

प्रभावित, लड़कियाँ, मित्रता, वैज्ञानिक, प्रसन्नतापूर्वक

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- नजदीक के किसी गाँव की मुलाकात कर अपने अनुभव कक्षा मे सुनाएं। अथवा अपने गाँव का वर्णन कक्षा में सुनाएं।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- छात्रों को ग्रामीण जीवन से परिचित कराने के लिए किसी गाँव में शिबिर का आयोजन करें।

●

# बैंक - पत्राचार

बैंकों तथा डाकघरों में कार्यालयी पत्राचार सरकारी पत्राचार प्रणाली के माध्यम से होता है। जिसके संबंध में व्यावहारिक पत्राचार -1 तथा व्यावहारिक पत्राचार - 2 में विभिन्न पत्रों के प्रकार तथा उनके नमूनों के साथ स्पष्ट किया गया है। बैंकों एवं डाकघरों का प्रत्यक्ष रूप से संबंध आम जनता के साथ होता है अत: बैंकों एवं डाकघरों के परस्पर, बैंको एवं डाकघरों में सरकारी पत्राचार के साथ निजी रूप से आम जनता की समस्याओं के समाधान हेतु भी पत्राचार का एक-एक नमूना प्रस्तुत है:

**बैंक पत्राचार**

प्रेषक एस. एम. अग्रवाल

91, आजादनगर

दिल्ली

दिनांक : 20/08/2015

सेवा में,

प्रबंधक

भारतीय स्टेट बैंक

लालदरवाजा, अहमदाबाद

विषय : ड्राफट संख्या AB/12356 दिनांक 21/07/2015 के भुगतान को रोकने के संबंध में।

महोदय,

निवेदन है कि मैंने भारतीय स्टेट बैंक आजाद नगर, दिल्ली शाखा से पचास हजार रुपए का उपर्युक्त विषयक ड्राफ्ट बरसाती लाल, आश्रम रोड, अहमदाबाद के नाम बनवाकर भिजवाया था। जिसका भुगतान आपकी शाखा से होना था परंतु आज मुझे श्री बरसाती लाल से सूचना मिली है कि उनसे वह ड्राफ्ट कहीं खो गया है। अत: निवेदन है कि उस ड्राफ्ट का भुगतान तुरंत रोक दें तथा किसी को भी उसका भुगतान न करें। संबंधित ड्राफ्ट की फोटोप्रति संलग्न है।

सधन्यवाद

भवदीय

(एस. एम. अग्रवाल)

**स्वाध्याय**

**1. संक्षिप्त उत्तर लिखिए :**

(1) बैंक तथा डाकघर का प्रत्यक्ष संबंध किसके साथ होता है ?

(2) बैंक पत्राचार का प्रयोग किसलिए अधिक किया जाता है ?

**योग्यता विस्तार**

**छात्र प्रवृत्ति**

(1) राहुल शर्मा की चेकबुक कहीं खो गई है। चेकबुक को निरस्त करवाने तथा नयी चेकबुक जारी करवाने के लिए भारतीय स्टेट बैंक के प्रंबधक को पत्र लिखिए।

(२) फातिमां शेख का ATM रेल्वे में सफर करते समय कहीं खो गया। पता कीजिए ATM को तत्काल बंद करवाने के लिए उन्हें किन फोन नंबरों पर संपर्क करना पड़ेगा।

•

| 19 | डंका |
|---|---|

# डंका

**सुब्रह्मण्य भारती**

(जन्म : सन् 1882, मृत्यु : सन् 1921)

मूलतः तमिल कवि, रचनाकार सुब्रह्मण्य भारती का जन्म तामिलनाडु के एहियपुरम गाँव में हुआ था। उन्हें महाकवि भरतियार के नाम से भी जाना जाता हैं। अतः आपको 'भारती' उपनाम से ही पुकारा जाने लगा। भारती एक जुझारु शिक्षक, देशप्रेमी नागरिक और महान कवि थे। आपकी देश प्रेम की कविताएँ सर्वश्रेष्ठ हैं। उन्होंने गद्य और पद्य की 400 रचनाओं का सृजन किया। जिसमें 'स्वदेश मित्रम्', 'चक्रवर्तिनी', 'इण्डिया', 'सूर्योदय', 'कर्मयोगी' आदि तथा 'बाल भारत' अंग्रेजी साप्ताहिक के संपादन में सहयोग किया।

प्रस्तुत काव्य तमिल से अनूदित है। इसमें कवि ने शहरों को रहने योग्य बनाने की कामना की हैं। जाति व्यवस्था की निर्दयता को खत्म करना चाहा है। रोजी-रोटी तथा औरतों के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण प्रगट किया है। ईश्वर एक ही हैं, अतः संघर्ष व्यर्थ हैं। कवि वसुधैव कुटुम्बम् एवं विश्वबन्धुत्व की भावना का सन्देश देते हैं।

---

मुझे बताने दो वह बात जो सारे शहर के लिए अच्छी है।
मुझे बताने दो सच की जिसे मैं जानता हूँ।
इस काम में भगवान मेरी मदद करेंगे।

जाति - व्यवस्था की निर्दयताओं को आओ खत्म करें।
दुनिया रहने के लिए खुशहाल हो जाएगी।
एक दूसरे की रोज़ी रोटी में आओ मदद करें,
और तरह - तरह के धंधों को उत्कृष्ट बनाएँ।

परमात्मा ने स्त्रियों को विवेक बुद्धि दी
पर दुनिया में किसी मूर्ख ने उनकी राह रोक दी।

यह कहाँ की बुद्धिमानी है कि एक आँख बंद कर ली जाए
और सारी दर्शनीयता की ख़राब कर ली जाए ?
औरतों की मेघा को यदि बढ़ावा दिया जाए
तो वे संसार से अज्ञान के अंधकार को भगा देंगी।

सभी जन उसी ईश्वर की स्तुति करते हैं,
जो विश्व ब्रह्मांड को चलाता है।
सर्वत्र, पूरे विश्व में एक ही ईश्वर व्याप्त है,
इस बात को लेकर संघर्ष की कहाँ गुंजाइश है।

सभी लोग भाइयों की तरह रहें इस दुनिया में।
इतनी बड़ी दुनिया है सभी को अच्छी तरह बसाने के लिए।
फिर क्यों करें हम युद्ध एक दूसरे से बिना वजह ?

आओ देखें दुनियां के, हर आदमी के लिए
खाने को काफी है या नहीं।
लोगों को शिक्षित करो, अपनी जमीन जोतो

और अच्छा जीवन बिताओ।
कभी भी दूसरे की हक न मारो।
दुनिया के हर - इंसान को समानता मिलने पर
किसी का नुकसान न होगा, बल्कि दुनिया मुक्त होगी।

**शब्दार्थ-टिप्पणी**

**उत्कृष्ट** उत्तम **मेघा** बुद्धि **गुंजाइश** अवकाश

**मुहावरे**

**आँख बंद करना** ध्यान न देना, न देखना **राह रोकना** बाधक बनना

**स्वाध्याय**

**1. निम्नलिखित दिए गए विकल्पो में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) कवि किस व्यवस्था की निदर्यताओं को खत्म करना चाहते हैं ?

(क) अर्थ व्यवस्था (ख) ज्ञाति व्यवस्था (ग) धर्म व्यवस्था (घ) समाज व्यवस्था

(2) कवि तरह - तरह के धंधे को कैसा बनाना चाहते हैं ?

(क) उत्कृष्ट (ख) समान (ग) निम्न (घ) मध्यम

(3) कवि के विचार से ब्रह्मांड को कौन चलाता है ?

(क) एक ईश्वर (ख) धर्म के अनुयायी (ग) सूर्य (घ) चंद्र

(4) हर इन्सान को क्या मिलने से दुनिया मुक्त हो जायेगी ?

(क) धन (ख) शिक्षा (ग) समानता (घ) मकान

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) कवि कौन-सी बात बताना चाहते है ?

(2) कवि किस व्यवस्था को खत्म करना चाहते हैं ?

(3) स्त्रियों की राह किसने रोक ली हैं ?

(4) ईश्वर के बारे में संघर्ष की गुंजाइश क्यों नहीं हैं ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो -दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) भगवान कवि को किस काम के लिए मदद करेंगे ?

(2) दुनिया खुशहाल कब होगी ?

(3) संसार से अज्ञान के अंधकार को औरतें कैसे भगा देंगी ?

(4) दुनिया इतनी बड़ी क्यों हैं ?

(5) कवि आदमी के हक के बारे में क्या कहते हैं ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः पंक्तियों में उत्तर दीजिए :**

(1) 'डंका' काव्य के आधार पर कवि क्या सीख देना चाहते हैं ?

(2) अच्छा जीवन किसे कहते हैं ?

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

● 'कोई नहीं पराया' का काव्य गान कीजिए।

● भारत की समस्याएँ विषय पर निबंध लिखिए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

● प्रगतिवादी विचारधारा की प्रसिद्ध कविताओं का संग्रह तैयार करके पठन कीजिए। (पाँच-छः काव्य)

●

| 20 | # दो लघु-कथाएँ |
|---|---|

**संकलित**

**बलाईचाँद मुखोपाध्याय 'बनफूल'**

(जन्म : सन् 1899, मृत्यु : सन् 1979)

बंगाली के प्रसिद्ध लेखक बलाईचाँद मुखोपाध्याय की शिक्षा पटना विश्वविद्यालय और कलकत्ता मेडिकल कॉलेज से हुई। वे एक अच्छे कवि, फिल्म राइटर एवं फिजीशियन थे। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं पर काम किया। कई नाटको में अभिनय भी किया। 'भुवन सोम', 'होते बाज़ारे' एवं व 'अर्जुन पंडित' जैसी फिल्मों का लेखन-कार्य किया उनको फिल्मफेयर एवोर्ड भी मिला। उनको विभिन्न राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया गया।

यहाँ संकलित लघु-कथा 'बनफूल' की कहानियाँ में से लिया गया है। संकलित 'फर्क' लघु-कथा में भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद बार-बार होने वाले दंगों की मानसिकता और हिन्दू और मुस्लिम दोनों संप्रदायों में माननेवाले लोगों के मन में उत्पन्न अविश्वास और आशंका को रेखांकित किया गया है। मनुष्य ही हर प्रकार के भेद-भाव को मानता हैं जब कि पशु और पक्षी सोच नहीं सकते अत: उनके लिए किसी देश की कोई सीमारेखा नहीं होती।

'आत्ममंथन' एक बेहद मार्मिक लघु-कथा है जो पाठक की संवेदना को झकझोर कर उसे सोचने के लिए बाध्य करती है। हम पशुओं और पक्षियों को ही नहीं दूसरे मनुष्यों की पीड़ा की बहुत महत्व नहीं देते। किन्तु जब हम स्वयं उस पीड़ा का अनुभव करते हैं। तब हमें सच्चाई का अहसास होता है। इस लघु-कथा में पक्षी के चूज़े की मृत्यु के पश्चात् पक्षियों का आर्तनाद कितना हृदयविदारक है इसका पता अपने बेटे के मृत्यु के पश्चात् कथानायक को चलता है।

---

## फ़र्क

उस दिन उनके मन में इच्छा हुई कि भारत और पाक के बीच की सीमारेखा को देखा जाए। जो कभी एक देश था, वह अब दो होकर कैसा लगता है। दोनों देश एक-दूसरे के प्रति शंकालु थे। दोनों ओर पहरा था। बीच में कुछ भूमि होती है जिस पर किसी का अधिकार नहीं होता। दोनों उस पर खड़े हो सकते हैं। वह वहीं खड़ा था। लेकिन अकेला नहीं था - पत्नी थी और थे अठारह सशस्त्र सैनिक और उनका कमांडर भी। दूसरे के सैनिकों के सामने वे उसे अकेला कैसे छोड़ सकते थे।

इतना ही नहीं, कमांडर के उसके कान में कहा, ''उधर के सैनिक आपको चाय के लिए बुला सकते हैं, जाइएगा नहीं। पता नहीं क्या हो जाए! आपकी पत्नी साथ में हैं और फिर कल हमने उनके तस्कर मार डाले थे।''

उसने उत्तर दिया, ''जी नहीं, मैं उधर कैसे जा सकता हूँ ?''

और मन-ही-मन कहा, ''मुझे आप इतना मूर्ख कैसे समझते हैं ? मैं इनसान हूँ, अपने-पराए में भेद करना मैं जानता हूँ। इतना विवेक मुझमें है।''

वह यह सब सोच ही रहा था कि सचमुच उधर के सैनिक वहाँ आ पहुँचे। रोबीले पठान थे। बड़े तपाक से हाथ मिलाया। उस दिन ईद थी। उसने उन्हें मुबारकबाद दी। बड़ी गरमजोशी के साथ एक बार फिर हाथ मिलाकर वे बोले, ''इधर तशरीफ़ लाईए। हम लोगों के साथ एक प्याला चाय पीजिए।''

इसका उत्तर उसके पास तैयार था। अत्यंत विनम्रता से मुसकराकर उसने कहा, ''बहुत-बहुत शक्रिया। बड़ी खुशी होती आपके साथ बैठकर लेकिन मुझे आज ही वापस लौटना है और वक्त बहुत कम है। आज तो माफ़ी चाहता हूँ।''

इसी प्रकार शिष्टाचार की कुछ और बातें हुईं कि पाकिस्तान की ओर से कुलाँचे भरता हुआ बकरियों का एक दल उसके पास से गुज़रा और भारत की सीमा में दाखिल हो गया। एक साथ सबने उनकी ओर देखा। एक क्षण बाद उसने पूछा, ''ये आपकी हैं ?''

उनमें एक सैनिक ने गहरी मुसकराहट के साथ उत्तर दिया, ''जी हाँ जनाब ! हमारी हैं। जानवर हैं, फ़र्क करना नहीं जानते।''

**परिंदे हमसे बेहतर हैं, जो आपस में नहीं लड़ते**

**कभी मंदिर पै जा बैठे, कभी मस्ज़िद पै जा बैठे।**

## आत्म-मंथन

सारे दिन मेहनत कर, दोपहर को दक्षिण ओर के बारामदे में बिस्तर बिछाकर लेटा था। ज्यों ही नींद आई... तभी एक चीज़ मुंह पर थप से आ गिरी। जल्दी से उठ बैठा। देखा एक बदसूरत कुत्सित पक्षी का चूजा। न बाल, न पर... अत्यंत ही विभत्स। मैंने क्रोध और घृणा से उठाकर उसे सामने आंगन में फेंक दिया। पास ही एक बिल्ली मानो इसी क्षण की इंतजारी में घात लगाए बैठी थी। उसने झपटकर बच्चे को उठाया और भागी। मैनों का झुंड आर्तनाद करने लगा। पक्षियों का हाहाकार देर तक सुनाई पड़ता रहा। थोड़ी देर तक करवटें बदलने के बाद में सो गया।

चाप पांच साल बीत गए।

अचानक एक दिन हमारा इकलौता, आँखों का तारा, हमरा बेटा सचिन सांप के काटने से मर गया। डॉक्टर, वैद्य, ओझा कोई भी उसे बचा न सका। हमेशा-हमेशा के लिए हमें छोड़कर सचिन चला गया।

घर में रोना - पीटना शुरू हो गया। मेरी पत्नी भीतर मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। कुछ महिलाएं उन्हें संभालने मे लग गई बाहर आया तो देखा बच्चे को ले जाने की तैयारी हो रही थी। हाहाकार मचा हुआ था।

उसी वक्त मुझे बहुत दिनों बाद, न जाने क्यों, उसी चिड़िया के बच्चे का ध्यान आया।

उसी चार-पांच साल पहले, निस्तब्ध दोपहर में, बिल्ली के मुंह में असहाय पक्षी का छौना और उसके चारों और चीखती-चिल्लाती पक्षी माता तथा अन्य पक्षियों का झुंड।

सहसा एक अनकहे इशारे ने मुझे भीतर तक हिला दिया।

## शब्दार्थ-टिप्पणी

**तस्कर** चोर **मुबारकबाद** बधाई **तशरीफ** इज्जत, महत्व **गरमजोश** जोश में, ऊष्मा से **बदसूरत** कुरूप, बेडौल **चूजा** पक्षी का बच्चा **घृणा** नफ़रत **धात** प्रहार, वध **आर्तनाद** रोना, **निस्तब्ध** जड़वत, संपूर्ण शांत,

## मुहावरे

**कुलाँचे भरना** चौकड़ी मारना **आँखों का तारा** बहुत प्रिय होना, **मूर्छित होकर गिरना** बेहोश होकर गिरना

## स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित दिए गए विकल्पो में से सही विकल्पों चुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) कौन-से त्यौंहार के दिन कथा-नायक भारत-पाकिस्तान सीमारेखा देखने के लिए गए ?

(क) मोहरम (ख) रमजान (ग) ईद (घ) बकरीद

(2) कथा-नायक किसके साथ भारत और पाक के बीच की सीमारेखा देखने गया था ?

(क) परिवार (ख) पत्नी (ग) बहन (घ) मित्रों

(3) पाकिस्तान की ओर से भारत की सीमा में किसका दल घुस आया ?

(क) गायों का दल (ख) बकरियों का दल (ग) घोड़ों का दल (घ) खच्चरों का दल

(4) पठान सैनिक देखने में कैसे थे ?

(क) रोबीले (ख) रसीले (ग) मृदु (घ) जोशीले

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) पठान सैनिकों ने कथा-नायक के साथ कैसा बर्ताव किया ?

(2) नींद में लेखक के मुँह पर क्या गिरा ?

(3) कथा नायक के बेटे की मृत्यु कैसे हुई थी ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो -दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) भारत-पाक एक दूसरे के प्रति शंकालु क्यों थे ?

(2) भारतीय कमांडर ने कथा-नायक के कान में क्या कहा ?

(3) मैनों का झुण्ड क्यों आर्तनाद करने लगा ?

(4) कथा-नायक की पत्नी मूर्छित होकर क्यों गिर पड़ी ?

**4. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः पंक्तियों में उत्तर दीजिए :**

(1) पाकिस्तान पठान सैनिक के निमंत्रण को सुनकर कथा-नायक ने क्या कहा ?

(2) मनुष्य की अपेक्षा परिंदे क्यों बेहतर होते हैं ?

(3) कथा-नायक को किस पीड़ा ने भीतर तक झकझोर दिया ?

*** आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) जी हाँ जनाब ! हमारी हैं । जानवर हैं, फ़र्क करना नहीं जानते।

(2) मुझे आप इतना मूर्ख कैसे समझते हैं ? मैं इनसान हूँ, अपने-पराए में भेद करना मैं जानता हूँ। इतना विवेक मुझमें है ।

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- राष्ट्रीय एकता के प्रसंग प्राप्त कर पढ़े।
- राष्ट्रीय एकता विषय पर एक लघु निबंध लिखें।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- यशपाल कृत 'झूठा-सच' उपन्यास पढ़कर बच्चों के बीच राष्ट्रीय एकता पर चर्चा करें।
- किसी अविस्मरणीय घटना का वर्णन छात्रों से सुने।

●

# फीचर लेखन

फीचर या रूपक आधुनिक लेखन विधा है। किसी भी समाचार पत्र एवं पत्रिका को उभारने के लिए उसमें प्रकाशित फीचर का विशेष योगदान होता हैं। जो समाचार पत्र/पत्रिकाएँ जितने अच्छे आकर्षक, समसामायिक, समस्यामूलक, ज्ञानवर्धक एवं रमणीय फीचर प्रकाशित करती हैं, पाठकों को वह उतना ही अधिक अपनी और आकृष्ट करती हैं। फीचर लेखन में आँख, कान, भाव, अनभूतियों, मनोवेगों और अन्नवेषण की सहायता लेनी होती है । अत: किसी क्रांति की फीचर में थोड़े से शब्दों में रोचकता एवं प्रभावपूर्ण ढंग से कहा जाता है । फीचर मज़ेदार, दिलचस्प और मनमोहक होना चाहिए। फीचर में हास्य एवं कल्पना का मिश्रण होत है।

**फीचर के प्रकार :**

(1) घटनामूलक फीचर

(2) विशिष्टता मूलकफीचर

(3) विचित्रता मूलक फीचर

(4) चिंतनमूलक फीचर

(5) समाचारों पर आधारित फीचर

(6) सांस्कृतिक फीचर

(7) विशिष्ट घटनाओं (अकाल, दुर्घटना, सूखा, बाढ़ आदि) पर आधारित फीचर

(8) राजनीतिक घटनाओं पर आधारित फीचर

(9) वाद-विवाद संबंधी चिंतात्मक फीचर

(10) व्यक्ति विशेष पर आधारित फीचर आदि

**सफल फीचर लेखन के लिए इन मुदों का ज्ञान जरूरी है :**

1. स्वाध्याय, 2. संदर्भ, 3. संपन्न शब्द भंडार, 4. सरल लेखन, 5. सम्मोहक प्रस्तुति, 6. सार्थक चित्र - सज्जा और 7. संपर्क। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर सफल रूप फीचर लिखा जा सकता हैं। रेडियो फीचर एवं फीचर फिल्मों ने आज अपनी आम जनता में भी स्वतंत्र पहचान बना ली है। फीचर लेखन एक कला है जो निरंतर अभ्यास से और अधिक परिपुष्टित की जा सकती है।

**स्वाध्याय**

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) पत्र-पत्रिकाओं को उभारने में किसका योगदान है ?

(2) फीचर लेखन में किनका सहयोग अपेक्षित है ?

(3) फीचर लेखन में किन बातों का ध्यान रखा जाता है ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिए :**

(1) फीचर के कुल कितने प्रकार हैं ? कौन-कौन से ?

(2) फीचर लेखन के लिए किन बातों का ज्ञान होना आवश्यक हैं ?

●

# विज्ञापन

विज्ञापन =वि + ज्ञापन से बना है। जिसमें वि का अर्थ है विशेष तथा ज्ञापन का अर्थ है – सूचना। अत: अर्थ हुआ विशिष्ट सूचना। विज्ञापन विभिन्न माध्यमों द्वारा विचार, कार्य, माँग–पूर्ति अथवा उत्पादित वस्तु आदि के संबंध में सूचनाओं को प्रचारित करने तथा विज्ञापन दाता की इच्छा व मंशा के अनुरूप कार्य करता है। अत: विज्ञापन वह शक्ति है जिसके अंतर्गत मुद्रित, प्रसारित शब्दों एवं दृश्य श्रव्य माध्यमों द्वारा विक्रय वृद्धि में सहायता मिलती है, ख्याति होती है तथा साख बढ़ती है। विज्ञापन का उद्देश्य विज्ञापनदाता की वस्तुओं का विक्रय करना तथा सार्वजनिक विचारधाराओ को व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से विज्ञापन दाता के हित में प्रभावित करना होता है।

**विज्ञापन माध्यमों के प्रकार :**

विज्ञापनदाता जिन माध्यमों के आधार पर अपने विज्ञापनों को प्रचारित करता हैं, उनके निम्नलिखित प्रकार होते हैं:

**( क ) प्रसारण माध्यम :** (1) आकाशवाणी (2) दूरदर्शन (3) फिल्म (4) इंटरनेट (5) पत्रिकाएँ

**( ख ) प्रेस विज्ञापन :** (1) समाचार, (2) पत्रिकाएँ

**( ग ) बाह्य विज्ञापन (Out door) :** दिवारों, बसों, ट्रेनों, कारों, आदि पर

**( घ ) अन्य विज्ञापन माध्यम :** (1) डाक विज्ञापन (2) चर्चा (3) प्रदर्शनियाँ (4) बैनर (5) स्टीकर (6) भेंट, उपहार, डायरी तथा (7) कलेंडर आदि

**विज्ञापन के तत्व : विज्ञापन के प्रभावशाली रूप में प्रस्तुतीकरण हेतु उसमे निम्नलिखित तत्व होने चाहिए :**

(1) आकर्षण, (2) स्मरणतत्व, (3) विश्वसनीयता, (4) सुरुचिपूर्णता, (5) पठनीयता, (6) विक्रयशीलता, (7) सरलता और सुबोधता, (8) रचनात्मकता, (9) साजसज्जा और (10) नवीनता

**विज्ञापन की भाषा :** आज विज्ञापन हमारी जरूरतों को सुनिश्चित करने का काम करने का भी काम करते हैं। चूँकि विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य विज्ञापित वस्तु के संबंध में उपभोक्ता की वस्तु की और आकर्षित करके उसका ग्राहक बनाने हेतु अपील करना होता है। अत: इस अपील का भाषायी प्रस्तुतीकरण चित्ताकर्षण, हृदयहारी और प्रभावशाली होना लाजिमी है, विज्ञापन की भाषा भी आकर्षक, स्मरणीय, पठनीय, प्रभावी और विक्रय शक्तियुक्त होगी ही। तुकबंदी के साथ–साथ अंलकारों, सूत्रात्मक वाक्यों आदि को अपनाकर विज्ञापन की भाषा को आकर्षक रमणीय, चित्ताकर्षक और लुभावना बनाया जाता है और कथ्य मे तुकबंदी, पद्यात्मक, मुहावरों, सूत्रात्मक और क्रियारहित वाक्यों का प्रयोग करके कथ्य को स्मरणीय बनाकर उसमें चार चाँद लगाए जाते हैं। विज्ञापन की भाषा सरल, सरस, लच्छेदार और लुभावनी होती है और अपने इन गुणों के कारण ही वह उपभोक्ता के चित को बाँधकर विज्ञापित वस्तु को खरीदने के लिए उसे प्रेरित कर पाती है। अत: विज्ञापन की भाषा संक्षिप्त किंतु पूर्ण होनी चाहिए। उसमें सरल बोलचाल की भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

**विज्ञापन के कुछ उदाहरण :**

(1) जिद्दी से जिद्दी मैल को भी धो डाले। (सर्फ एक्सल)

(2) लक्मे –झुर्रियों का दुश्मन।

(3) मारुति सबसे अच्छी कार – करे आपके सपने साकार।

(4) पड़ोसियों की जले जान, आपकी बढ़े शान। (ओनीडा)

(5) पंजाब नेशनल बैंक – विश्वास का दूसरा नाम।

(6) बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर – हमारा बजाज।

(7) दूसरे सारे डाई एक तरफ - गोदरेज खुद-ब-खुद।

(8) जीवन बीमा निगम - सबसे पहले, सबसे आगे।

(9) जीवन बीमा का कोई विकल्प नहीं। (एलआईसी)

(10) जोरदार खबर, लीक का नहीं डर (नोविनो)

(11) अच्छे लोग, अच्छी पसंद (यूनियन बैंक ऑफ इंडिया)

**स्वाध्याय**

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) विज्ञापन शब्द का अर्थ स्पष्ट करें।

(2) विज्ञापन के प्रकार कौन-कौन से हैं ?

(3) विज्ञापन के तत्वों को उजागर करें।

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के तीन-चार वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) ''विज्ञापन'' शब्द को समझाते हुए उसके माध्यमों के प्रकार के नाम बताएँ।

(2) विज्ञापन के तत्त्वों के नाम बताकर उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालें।

**योग्यता-विस्तार**

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

● विज्ञापन के अर्थ और तत्त्वों को ध्यान में रखते हुए विज्ञापन को व्यावहारिक रूप से अनुभव करें।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

● वर्तमान समय में विज्ञापन को स्वरूप, उपयोग, समझाकर छात्रों को कुछ विज्ञापनों का वर्गीकरण कर विस्तृत जानकारी और प्रत्यक्षीकरण करवाएँ।

●

# पारिभाषिक शब्दावली

हिंदी में 'पारिभाषिक शब्दावली' शब्द अंग्रेजी के 'टेक्निकल टर्मिनॉलॉजी शब्द' के पर्याय के रूप में प्रचलित है, पारिभाषिक शब्दावली या पारिभाषिक शब्द का अर्थ है – वह शब्द जो परिभाषा या विशिष्ट संदर्भ से जुड़ा हो या जिसकी परिभाषा अपेक्षित हो अथवा जिसका प्रयोग किसी सीमित अर्थ में किया गया हो। पारिभाषिक शब्द उन शब्दों को कहते हैं जिनकी सीमाएँ बाँध दी गई हो। अत: जिन शब्दों की सीमा बाँधी दी जाती हैं, वे पारिभाषिक शब्द होते हैं तथा जिन शब्दों की सीमा अनिवार्यत: आवश्यकता के रूप में मूलक रूपों में। प्रत्येक प्रयोजनमूलक क्षेत्र के अपने स्वतंत्र पारिभाषिक शब्द होते हैं तथा प्रयोग का अपना स्वतंत्र धरातल होता है। हिंदी भाषा के प्रयोजनमूलक रूपों में कार्यालयी या प्रशासनिक भाषा की प्रशासनिक शब्दावली, कानून की भाषा की विधि शब्दावली, बैंकिंग हिंदी की बैंकिंग शब्दावली, तकनीकी क्षेत्र की तकनीकि शब्दावली आदि का निर्माण भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग नई दिल्ली द्वारा किया गया है।

हिंदी में पारिभाषिक शब्द विभिन्न स्रोतों से ग्रहण किए गए हैं; जैसे– संस्कृत से आगत पारिभाषिक शब्द अर्हता, पदोन्नति आदि तत्सम रूप में तथा पंचायत घर, आँकड़े आदि तद्भाव रूप में लिए गए हैं। हिंदी में अनेक पारिभाषिक शब्द भारतीय भाषाओं से लिए गए हैं; जैसे तमिल से चिल्लर (रेजगारी के लिए) गुजराती से नवलिका मराठी से साजगृह (Theatre), कन्नड़ से प्रतिष्ठान (Establishment) आदि।

पाश्चात्य स्रोत से भी बहुत से पारिभाषिक शब्द हिंदी में लिए गए हैं; अंग्रेजी से डॉक्टर, कॉलेज, फोटा, जेल, परमिट, भैंस , रेल, रडार आदि लिए गए हैं। अनुकूलित रूप में भी कुछ शब्द बनाए गए हैं; जैसे – तकनीकी (Technical), अकादेमी (Academy), त्रासदी (Tragedy), कामेडी (Comedy), अंतरिम (Interim), आदि। बहुत सारे शब्द अनूदित रूप में लिए गए हैं; जैसे – काला बाजार (Blackmarket), श्वेतपत्र (White Paper), पद टिप्पणी (Footnote), आदि। कुछ शब्द थोड़े बहुत परिवर्तित रूप में अपनाए गए हैं; जैसे– फीस (Fee), अस्पताल (Hospital), आदि।

अरबी–फारसी से भी कुछ शब्द लिए गए हैं; जैसे बर्खास्त (Dismiss), मुकद्दमा (case), कचहरी (Court), जमानत (Bail), दीवानी (Civil), फौजदारी (Criminal), दस्तावेज (Document), आदि, देशी बोलियों से भी शब्द लिए गए हैं; जैसे – पावती (Acknowledgement), घुसपैठिया (Infiltrator), भत्ता (Allowance), छूट (Exemption), आदि, बहुत से शब्द मिश्रित रूप में भी बनाए गए हैं; जैसे – जिलाधीश = फारसी + संस्कृत, सम्मान गारद = हिंदी + अंग्रेजी, माँगपत्र – उर्दू + हिंदी, जेलमंत्री = हिंदी + अंग्रेजी,

**कुछ पारिभाषिक शब्द के उदाहरण :**

| | | | |
|---|---|---|---|
| स्मरण पत्र | – Reminder | आपका | – Yours Sincerely |
| पृष्ठांकन | – Endorsement | भवदीया | – Yours Fiathfully |
| निविदा | – Tender | मंजरी | – Sanction |
| प्रारूप/ढांचा | – Format | मसौदा | – Draft |
| मसौदा लेखन | – Drafting | अपक्रम | – Undertaking |
| हाशिया | – Margin | निगम | – Corporations |
| अनुदेश | – Instruction | सहमति | – Concurrence |
| पावती | – Receipt | सतर्कता | – Vigilance |
| कलेवर | – Content | कार्यान्वयन | – Implementation |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सक्षम अधिकारी | - Competent anthority | तैनात | - Posted |
| निदेश | - Direction | अनुमादन | - Approval |
| कार्रवाई | - Action | महोदय | - Sir |
| पदनाम | - Designation | | |

### स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) पारिभाषिक शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(2) हिंदी में पारिभाषिक शब्द स्रोतों का उल्लेख कीजिए।

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) पारिभाषिक शब्द की विशेषताएँ क्या हैं ?

(2) अंग्रेजी, संस्कृत से लिए पारिभाषिक शब्दों की एक सूची बनाइए।

### योग्यता-विस्तार

#### विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- पारिभाषिक शब्द की सूची बनाकर उनके अर्थ लिखिए।

#### शिक्षक-प्रवृत्ति

- भाषा विषयक पारिभाषिक शब्दावली तैयार करवाइएँ।

●

# पूरक वाचन

## 1 | गुड गुड माय सन

**रवीन्द्र अंधारिया**

[जन्म : सन्. 1945]

डॉ. रवीन्द्र अंधारिया का जन्म भावनगर (गुजरात) में हुआ था। शिक्षा-दीक्षा भावनगर, लोकभारती सणोसरा एवं वल्लभवद्यिानगर में हुई। भावनगर में शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय में आप सेवारत रहे। आपने उच्च शिक्षा से संबंधित कई लेखन कार्य किये। 'वर्तन विश्लेशण', 'शिशु संदर्भ', 'बालकथा संग्रह', 'प्रश्न कथाएँ', 'विज्ञान कथा संग्रह', 'रोमांचक विज्ञान कथाओ', जैसी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। रवीन्द्र अंधारियाजी अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किये गए हैं।

''गुड गुड माय सन'' विज्ञान कथा हैं। प्रो. रमण के द्‌वारा आविष्कृत रोबोट के जीवन व्यवहारों के कार्यों का अद्‌भुत वर्णन हैं। वर्तमान समय में रोबोट के लाभ और सीमाओं का हास्य के साथ वर्णन किया हैं।

---

जमुनादास ने दरवाजे पर दस्तक दी। प्रा. रमण ने दरवाजा खोला।

आइए... आइए... जमनाकाका... वेलकम... कहिए कैसे आना हुआ? रमण ने खुशी व्यक्त की। सोफा पर बैठ कर जमनकाका ने घर भर का निरीक्षण कर लिया। नोट किया कि घर में किसी भी प्रकार की चहल-पहल नहीं है। उन्होंने पूछा, 'बेटा रमण! इस प्रकार कब तक अपनी रोटी आप ही सेंकता रहेगा?'

लेकिन मैं कहाँ अपनी रोटी आप सेंकता हूँ ?

मतलब? क्या तुमने शादी कर ली ? - जमुनादास जी का चेहरा विस्मयबोधक चिह्‌न बन गया।

'शादी-वादी की बात को मारो गोली... बताइए... घर पर सब कुछ खैरियत तो है ?' जमनकाका कोई उत्तर दें इसके पूर्व ही रमणलाल ने पुकारा टें टु टी, माय सन !

पलभर में ही रोबोट हाथ में चाय की ट्रे लेकर उपस्थित हो गया। अचानक इस प्रकार रोबोट को सम्मुख देख कर जमनाकाका के आश्चर्य की कोई सीमा ही नहीं रह गई। रमण तो चुपचाप यह सब कुछ देख रहा था और मन ही मन मुस्कुरा रहा था। जमनाकाका की परेशानी को कम करने को इरादे से रमणलाल ने सफाई देते हुए कहा, 'काकाजी ! यह आप को चाय दे रहा है, ले लीजिए।' जमनाकाका को तसल्ली हुई। उसने चाय का कप ले लिया तो रोबोट ने कहा, 'थैंक्यू! फिर वह किचन में लौट गया।'

चाय की चुस्की लेते ही जमनादास जी के मुँह से निकल गया, 'वाह! चाय तो बड़ी टेस्टी है भाई!! ओए... रमणा यह सब क्या है?'

आपने जो देखा ! - और रमणलाल हँसी नहीं रोक पाए। जमनाकाका अपने साथ कई प्रश्नों को लेकर विदा हुए। इधर रोबोट को प्रोत्साहित करने के हेतु प्रा. रमण ने कहा, 'गुड.. गुड.. माय सन!' 'थैंक्यू! रोबोट ने उत्तर दिया।'

इस प्रकार रोबोट प्रा. रमण के घर में सभी प्रकार के कार्य सुचारु ढंग से करने लगा। इस के अतिरिक्त प्रा. रमण ने निजी कार्यों में भी वह उसकी सहायता करता था। घर आये हुए प्रा. रमण के मित्रों को किसी पुस्तक की आवश्यकता हो तो रोबोट ही आलमारी से निकालकर वह पुस्तक ले आता था। अरे ! प्रयोगशाला में भी वह प्रा. रमण की मदद करने लगा था। यदि कभी-कभार प्रा. रमण बीमार हो जाते तो वह छोटी-मोटी दवाइयाँ भी दे देता था। प्रा. रमण अपने इस सर्जन से काफी खुश थे। इस खुशी

में प्रा. रमण ने इसका नाम रखा था, मि. होंची. होंची ! प्रा. रमण उसे जो कोई निर्देश दें, उसके अनुसार मि. होंची होंची तमाम काम सफलतापूर्वक करने लगा था। यद्यपि रोबोट को निर्देश देने के लिए विशिष्ट भाषा का निर्माण किया था प्रा. रमण ने। मि. होंची होंची वही भाषा समझता था, अन्य कोई भाषा नहीं।

दरवाजा खोलना हो तो, डोडी डूम.... डोडी डूम... बोलना पड़ता था।

सब्जी काटनी हो तो, वोबू वोबू... कहना होता था।

भोजन के लिए थाली टेबिल पर रखवानें के लिए, 'हू शु शेंग... हू शु शेंग... तथा किसी काम को करने से रोकने के लिए गोटू... गोटू... शब्दों का प्रयोग करना पड़ता था।

इस प्रकार तमाम प्रकार के जीव न व्यवहारों के लिए भाषा कोड निर्धारित कर लिये थे। परिमाण स्वरूप मि. होंची होंची प्रा. रमण का दोस्त, प्रा. रमण का साथी था। प्रा. रमण का सेवक हो गया था। इसी कारण प्रा. रमण का कारोबार खुशी-खुशी चल रहा था।

शनै: शनै: मि. होंची होंची के किस्से-कहानियाँ स्थानीय समाज में फैलने लगे। तो मि. होंची होंची की माँग बढ़ने लगी। खर्च की कोई चिन्ता नहीं, बस मि. होंची होंची हमें चाहिए... हमें चाहिए... इस प्रकार के प्रस्तावों का ताँता लग गया था। प्रा. रमण का सबके लिए एक ही उत्तर था - यह रोबोट अपनी प्रयोगावस्था में हैं, इसमें कई प्रकार के संशोधन-परिमार्जन करने शेष हैं... दो एक साल के पश्चात् हम आपके प्रस्ताव पर सोचेंगे।

कालेज का कार्य पूर्ण करके प्रा. रमण घर लौटे। कॉलबेल के लिए बटन दबाया... पर दरवाजा न खुला। आमतौर पर प्रा. रमणलाल के कॉलबेल का बटन दबाने पर तुरन्त मि. होंची होंची दरवाजा खोलता था और वेलकम सर ! कह कर उसका स्वागत करता था। किन्तु आज पाँच-छ: बार कॉलबेल बजाने के बावजूद भी दरवाजा न खुला तो प्रा. रमण सोच में पड़ गये।

अरे ! मि. होंची होंची को क्या हो गया है ? उसने दरवाजा क्यों नहीं खोला ? आखिर प्रा. रमण ने अपने हैंन्ड बेग से चाबियाँ निकाली और दरवाजा खोला।

ओहो... ओहो... हो... क्या बात है यार मेरे ! मि. होंची होंची सोफा पर बिराजमान होकर आराम से टी.वी. देख रहे हैं... उधर टोम एन्ड जैरी के पराक्रम देखने का लुफ्रत उठा रहे हैं।

यह नजारा देख प्रा. रमण गहरी सोच में पड़ गये। वह चुपके-चुपके उसके पास पहुँचे... एकदम नजदीक पहुँचकर फुसफुसियाने स्वर में बोले, मि. होंची होंची... अचानक प्रा रमण का आवाज सुनकर मि. होंची होंची सकते में आ गये। प्रा. रमण को एकदम पास में खड़े देखकर वह फटाक से खड़ा हो गया। गुड इवनिंग सर ! कह कर खड़ा रह गया। प्रा. रमण ने 'टे टु टी' कहा तो मि. होंची होंची किचन की ओर चला गया। यह देख प्रा. रमण की चिन्ता के बादल हट गये। मि. होंची होंची में उसे कोई विशेष गड़बड़ नजक नहीं आयी। तो मेरा दोस्त सयाना ही.... ऐसा सोचते-सोचते उसने आराम से चाय पी। 'गुड... गुड... माय सन' कहकर उसकी पीठ थपथपाई ! ''थैंक्यू !'' कह कर मि. होंची-होंची ने भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

इस प्रकार दिन गुजरते गये। घर आने वाले परिचित-अपरिचित मेहमानों को मि. होंची-होंची का प्रशंसात्मक परिचय देते हुए उसका हृदय बाँसों उछलता था।

आज कॉलेज से लौटते समय प्रा. रमण के स्कूल के साथ एक मनमौजी युवक ने अपनी बाइक टकरा दी। इत्तफाक से प्रा. रमण को गहरी चोट नहीं पहुँची पर स्कूटर को थोड़ा नुकसान हुआ। प्रा. रमण आगबबूला हो उठे। क्रोधावस्था में ही बे घर पहुँचे। कॉलबेल का बटन दबाया पर दरवाजा नहीं खुला। दो चार बार जोर जोर से बटन दबाया पर दरवाजा न खुला। अब प्रा. रमण का पारा चढ़ गया। उन्होंने चीखकर मि. होंची-होंची कहकर पुकारा... फिर भी दरवाजा न खुला। अत: उन्होंने हुकम दिया, डो डी

ड्रम... इतने प्रयत्नों के बावजूद भी जब दरवाजा न खुला तो उनका क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया। हैंन्ड बेग से चाबियाँ निकाल कर उसने फटाक से दरवाजा खोला। मि. होंची-होंची तो दुनियादारी से पूर्णत: बेखबर टी.वी. शो देखने में व्यस्त। प्रा. रमण घर में प्रवेश कर चुके हैं फिर भी उस ओर उसका ध्यान नहीं। अत: गुस्से में पैर पटकते हुए प्रा. रमण मि. होंची-होंची के निकट पहुँच चिल्लाए, मि. होंची-होंची!!!

यह सुनते ही मि. होंची होंची की मानो नींद टूटी। वह सड़ाक से खड़े हो गये, गुड ईवनिंग सर कह कर आदेश का इन्तजार करने लगे। किन्तु मि. होंची-होंची के गुड ईवनिग सर की आवाज में उसने उपहास की बू महसूस की। वैसे भी प्रा. रमण पहले से ही गुस्से में तो थे ही... किन्तु घर आने पर मि. होंची-होंची के इस व्यवहार ने उसके गुस्से की आग को हवा दे दी। परिणामस्वरूप प्रा. रमण ने मि. होंची होंची के चेहरे पर जोरदार थप्पड़ जमा दी। लेकिन दूसरे क्षण मि. होंची-होंची ने भी प्रा. रमण के मुँह पर जोरदार थप्पड़ जमा दी। प्रा. रमण तो लुढ़क गये, आँखों के सामने अंधेरा छा गया। मि. होंची-होंची तो मानो कुछ भी हुआ ही नहीं है । इस प्रकार बुत बनकर खड़ा रह गया... तथा अन्य आदेश की प्रतीक्षा में व्यस्त हो गया। प्रा. रमण मुश्किल से खड़े हुए, उसका सिर चकरा रहा था... जैसे तैसे सोफा तक पहुँचे और इस पर लुढ़क गये। वहाँ से ही भय की हल्की सी सिहरन महसूस करते हुए वहीं से बोले, ''टें टु टी, माय सन!'' मि. होंची-होंची किचन की ओर चलने लगे। यह देख प्रा. रमण का ढाढस बँधा। फिर भी उसके मन में मि. होंची-होंची के व्यवहार में आये हुए परिवर्तन को लेकर काफी व्यग्रता बढ़ गयी थी। चिन्ता की तरंगें ''ज्वार में बदल जाती'' उसके पहले ही चाय आ गई। लिज्जतदार चाय की चुस्की लेते ही मन प्रसन्नता से भर गया... चिन्ता के बादल एकदम नदारद। मानो कुछ भी अप्रत्याशित हुआ ही नहीं हैं, ऐसा हलका-फुलका माहोल हो गया। चाय खत्म करके प्रा. रमण मि. होंची-होंची की शुक्रिया अदा करने के लिए उठ खड़े हुए तथा मि. होंची-होंची के सम्मुख पहुँचे.... गुड गुड माय..... अभी वाक्य पूरा हुआ भी नहीं था कि सड़ाक सी आवाज करती हुई थप्पड़ प्रा. रमण के गाल पर लग गया। यह करारा तमाचा मार कर मि. होंची-होंची बुत सा खड़ा रह गया। तमाचे की चोट ने प्रा. रमण को सोफे पर लुढ़का दिया। चोट की पीड़ा से उसका गाल दर्द कर रहा था। फिर भी बड़ी मुश्किल से प्रा. रमण गोटु गोटु का आदेश दिया मि. होंची-होंची वहाँ से चला गया। लेकिन तब से प्रा. रमण मि. होंची-होंची के सामने जाने से डरने लगे।

एक बार उसके घर बुआ आ धमकी। फलत: प्रा. रमण ने मि. होंची-होंची को हुक्म किया, टें टु टी। बुआ ने रमण से पूछा 'बेटा, रमण' तुम यह क्या बोल रह हो ? हमारी तो कछु समझ में नही आवत हैं, तू पागल तो नही गियोरी। टें टु टी... टें टू.... इतने में मि. होंची होंची चाय की ट्रे लेकर उपस्थित हो गया। मि. होंची-होंची को देखकर बुआ हक्काबक्का रह गयी। बाप रे! यह भूत कहाँ से आ गया ? बचाओ.... बचाओ..... वह चिल्लाने लगी। बड़ी मुश्किल से प्रा. रमण ने बुआ को शान्त किया। उसके पास बैठ कर प्रा. रमण ने चाय का कप उठाकर बुआ को दिया तथा बाद में उसने अपने लिए कप उठाया। अलबत्ता उस वक्त उसका हाथ तनिक काँ प सा गया था। चाय की प्रथम चुस्की पर ही बुआ के मुख से आनन्दोद्गार निकल गया, ' भाई वाह! क्या लिज्जतदार चाय बनी हैं !!!' उसने रमण से पूछा, 'यह कौन है भला ?'

'यह मेरा दोस्त मि. होंची-होंची है । वही मेरा साथी और वही मेरा सेवक भी।' यह सुनकर बुआ खुश-खुश हो गयी। वह मि. होंची-होंची की प्रशंसा करने लगी। बुआ की खुशियों को देखकर मि. होंची होंची को धन्यवाद देने हेतु खड़े हो गये। उसकी पीठ पर अपना हाथ रख कर वह ज्यों ही गुड... गुड बोलने लगे उसी क्षण मि. होची-होंची के दाहिने हाथ से एक जोरदार तमाचा उसके गाल पर पड़ा सड़ाक!! वह तो डगमगा कर गिर पड़े? यह देख बुआ को गुस्सा आ गया। गुस्से की मारी वह चिल्लाई, 'हरामजादे! तुमने मेरे भतीजे को पीटा। देख अब मैं तुम्हारा क्या हाल करती हूँ। चिल्लाते हुए वह मि. होंची-होंची को पीटने के लिए उसके सम्मुख जा पहुँची। इतने में तो उसके गाल पर भी मि. होंची-होंची के बायें हाथ की करारी थप्पड़ जा लगी.... सड़ाक.... बुआ बेचारी गेंद की भाँति लुढ़क गयी। बुआ को लुढ़कते देख प्रा. रमण को उन पर तरस आ गया। उसने तुरन्त आदेश दिया, गोटु

गोटु। और मि. होंची-होंची चुपचाप' वहाँ से चल दिये... टप... टप... टप...

बुआ बड़बड़ाती हुई खड़ी हुई 'निगोड़ा... सल्ला....हरामी की औलाद। मुझे भी पीटता है... नासपीटा....'

बेटा रमण! ऐसा तो कोई दोस्त होता है भला ? चल अभी मुझे बस अड्डे तक पहुँचा दे... मैं यहाँ छिनभर भी रुकना नहीं चाहती....

प्रा. रमण ने बुआ जी को समझाने-मनाने की काफी कोशिश की लेकिन बुआ टस से मस नहीं हुई।

फिर तो सबकुछ ठीकठाक चलने लगा। फिर भी. प्रा. रमण मि. होंची होंची की थप्पड़ मारने की आदत से काफी चिन्तित रहने लगे। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि एसा कोई प्रोग्राम मैंने मि. होंची-होंची रोबोट में इन्सटॉल नहीं किया है फिर भी यह ऐसा बेहूदा व्यवहार क्यों करता है ? प्रो. रमण की नींद हराम हो गई थी।

अब इस मि. होंची-होंची को कैसे समझाया जाय ?..... यह प्रश्न उसकी नींद को हराम करने लगा। उसने रोबोटिक सायन्स के अद्यतन ग्रंथों का भी अनुशीलन कर लिया... इन्टरनेट पर घण्टों व्यय किये... अन्य रोबोट वैज्ञानिकों कोई-मेल किये... इन्स्टोल किये गये तमाम प्रोग्राम अनुसार तो मि. होंची-होंची कार्य कर रहा है। लेकिन यह थप्पड़वाला नया कार्य वह किस प्रोग्राम के तहत करने लगा है ? यही उसकी समझ में नहीं आ रहा था। वस्तुत: मि. होंची-होंची एक प्रकार का यंत्र ही है तो अब यह यंत्र-मानव कैसे बन गया ? लाख कोशिशों के बावजूद भी जब उसे उत्तर नहीं मिला तो उसने देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा अपने गुरु प्रा. डॉ. कबीर काका की मुलाकात करने का निर्णय किया यद्पि कबीर काका नामी वैज्ञानिक थे, किन्तु उनका बच्चे-बच्चे को वैज्ञानिक बनाने का मिशन था। लिहाजा सायन्स सीटी बनाकर वे उसी कार्य में व्यस्त-मस्त रहते थे।

एपाइन्टमेन्ट लेकर प्रा. रमण सायन्स सीटी पहुँचे तो वहां प्रा. कबीर काका उसकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे। आओ...... डॉ. रमण..... कैसे आना हुआ ? इसके उत्तर में प्रो. रमण ने मि. होंची-होंची के नयी हरकतों के विषय में सुनाया.... अब तो वह स्वयमेव टी. वी. ऑन कर के सोफा पर लुढ़कर बैठे बैठे आराम से टी.वी. देखता है, बेशक इस प्रकार का कोई भी प्रोग्राम मैंने इस में इन्स्टोल किया नहीं है अब तो वह उसके सामने आने वाले को पीटने भी लगा है....

कबीर काका ने उसे बीच में ही रोकर कर पूछा, यह तुम क्या कह रहे हो ?..... सबको पीटता है ? क्या मतलब ?.....

सुनिये... मैं जरा विस्तार से कहूँ प्रा. रमण ने स्पष्टता करना शुरू किया, बात यह हैं कि जब से उसका थप्पड़कांड शुरू हुआ हैं, तब से भी जो भी उसके सामने आकर खड़ा होता है उसको वह अपने दायें हाथ से जोरदार थप्पड़ लगा देता है ?

अच्छा! मुझे एक बात बताइए कि. मि. होंची-होंची में आपने जो भी प्रोग्राम इन्स्टोल किये हैं इनमें मारपीट संबंध कोई प्रोग्राम इन्स्टोल किया है।

ना जी..... सर.... एक भी नहीं! इसी कारण मि. होची-होंची के इस प्रकार के व्यवहार से डर लगने लगा हैं। दु:खद बात तो यह हैं कि इस दुर्व्यवहार का श्री गणेश भी उसने मुझसे ही किया है। सबसे पहला थप्पड़ मुझ पर ही पड़ा था।

'ओहो! क्या बात करते है, आप! आपको भी!!' प्रो. कबीर काका सोच में पड़ गये। कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने एक और प्रश्न किया, टी. वी. ऑन-ऑफ करने का कोई प्रोग्राम आपने इसमें इन्स्टोल किया था ?

ना जी!'

क्या उसकी उपस्थिति में आपने कभी टी. वी. ओन-ऑफ किया था ?

हाँ.... अनेक बार.... किन्तु उसने पहले कभी टी. वी. ऑन-ऑफ नहीं किया था। एक दिन अचानक ही उसने टी. वी. ऑन

किया। वैसे तो उस वक्त में वहाँ उपस्थित भी नहीं था।

प्रा. रमण का यह उत्तर सुनकर प्रा. कबीर काका गम्भीर हो गये ? दत्तचित्त हो कर कुछ सोचने लगे। फिर अचानक ही वे अट्टहास कर उठे.... आहांहांहां........आहांहांहांहां..... प्रा. कबीर का ऐसा अप्रत्याशित व्यवहार देख प्रा. रमण ताज्जुब रह गया... किन्तु प्रा. कबीर के चहेरे पर तो आनन्द छा गया था।

अन्ततः उन्होंने कहना शुरू किया.... प्रा. रमण... चलिए... मुझे अपने घर ले चलो... घर जाकर क्या क्या करना है इस बारे में सभी निर्देश उन्होंने प्रा. रमण को रास्ते में ही समझा दिये। साथ ही साथ सावधान भी किया.... कि देख भाई.... यह एक एक्सपिरिमेन्ट हैं.... हम सफल भी हो सकते हैं.... असफल भी हो सकते हैं। किन्तु प्रो. रमण तो किसी प्रकार का जोखिम उठाने को तैयार थे।

कॉलबेल गूँज उठी। मि. होंची-होंची ने बाकायदा दरवाजा खोला। प्रो. रमण का तनाव कुछ कम हुआ। मि. होंची-होंची ने नियमानुसार वेलकम सर ! कहा प्रा. रमण ने गुड गुड माय सन कह कर उसे प्रोत्साहित किया। मि. होंची-होंची अपनी नियत जगह पर जा कर खड़ा हो गया। प्रो. रमण ने टे टू टी टें टू टी का हुक्म दिया। कुछ ही देर में चाय लेकर मि. होंची-होंची उपस्थित हुआ। दोनों ने आराम से चाय पी। तब जाकर उनका ध्यान टी. वी. की ओर गया। स्क्रीन पर ईदेमिलाद का दृश्य आ रहा था। उन्होंने समझ लिया कि मि. होंची-होंची ने टी. वी. ऑन किया होगा तब टी. वी. दर्शन कर रहा होगा। स्क्रीन पर ईद की नमाज के बाद मुबारकबादी देते हुए परस्पर को गले लगाते के चित्र दीख रहे थे। मि. होंची वही दृश्य देख रहा था।

पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार प्रा. कबीर एवं प्रा. रमण की बातचीत में उग्रता बढ़ने लगी। दोनों तू तू मैं-मैं पर उत्तर आए। इसी वक्त प्रा. कबीर ने प्रा. रमण के गाल पर कसकर एक थप्पड़ रसीद कर दी। फिर भी प्रा. रमण ने प्रतिशोध स्वरूप कबीर को थप्पड़ न जड़ा बल्कि खुशी-खुशी प्रा. कबीर को गले लगाकर उनकी पीठ थपथपाने लगे। मि. होंची-होंची यह सब देख रहा था। उधर टी. वी. पर ईद मुबारकवादी के दृश्य आ रहे थे। खुदा के पाक बन्दे गले मिले रहे थे। चारों ओर खुशियों की लहरे उठ रही थी। थोड़ी देर के बाद प्रा. कबीर भी प्रो. रमण के गले मिलकर चले गये। किन्तु दूसरे दरवाजे से चुपके-चुपके कमरे में प्रवेश कर यह देखने लगे कि मि. होंची-होंची अब कैसा व्यवहार करता है।

यहाँ प्रा. रमण ने अपने भय को नियंत्रित कर पूरी स्वस्थता के साथ मुस्कराते हुए मि. होंची-होंची की तरफ चलना शुरू किया। धीरे-धीरे वह मि. होंची के सम्मुख जाकर खड़े रह गये। सबको चकित करते हुए मि. होंची-होंची ने थप्पड़ लगाने के बदले प्रा. रमण को गले लगाकर उसकी पीठ थपथपाना शुरू किया। प्रा. रमण ने भावविभोर हो उसको गले लगा लिया... और यह बोलने लगे..... गुड गुड माय सन.....।

●

| 2 | कट गये पेड़ परदेसिन भई छांव रे |
|---|---|

कट गए पेड़  परदेसिन भई छांव रे
फैल गये नगर सिमिट गये गाँव रे
जानी ना मनुख ने
मौसम की पीड़ भाई
पंछी बनाए तो बनाए
कहाँ अब नीड भाई
फिरता है कागा भी ढूँढता छांव रे
अब महके ना चंपा
ना बेला है फूले
सावन के वे झूलें
भैया हम सब भूले
शेष बचा है बस आखिरी इक दांव रे
पेड़ लगाओ भैया, पेड़ लगाओ रे
फैल गये नगर भैया, सिमिट गये गाँव रे

**– इंटरनेट से साभार**

**शब्दार्थ–टिप्पणी**

**सिमिट** सिमट **पीड़** पीड़ा **नीड़** घोंसला **कागा** कौआ **इक** एक

# शब्द

आप जानते हैं वि निश्चित अर्थ की प्रतीति करानेवाले वर्ण समूह को शब्द कहते हैं। शब्द दो प्रकार के हैं–मूल और व्युत्पन्न। मूल शब्द को रूढ़ शब्द भी कहा जाता है जैसे–घर, किताब, बस, जल, आदि। मूल शब्द में उपसर्ग या प्रत्यय जुड़ने से बने शब्दों को व्युत्पन्न शब्द कहा जाता हैं। व्युत्पन्न शब्दों को यौगिक तथा योगरूढ़ दो भागों में बाँटा जाता है। योगरूढ़ शब्दों का अर्थ उनकी रचना के बजाय किसी अन्य अर्थ में रूढ़ हो जाता है; जैसे – पंकज, नीरज, जलज। यहाँ 'पंकज' का अर्थ पंक (कीचड़) में उत्पन्न होने वाला 'कमल' के लिए रूढ हो गया है। पंक में उत्पन्न होने वाले अन्य सूक्ष्म जीवों, जंतुओं से इसका कोई संबंध नहीं है।

हिन्दी के शब्द भंडार में अधिकांश मूल शब्द संस्कृत परंपरा से आते हैं। संस्कृत से हिन्दी में आए शब्द दो प्रकार के हैं– (1) तत्सम शब्द और (2) तद्‌भव शब्द।

**तत्सम शब्द** – तत्सम (तत्+सम) का अर्थ हैं – उसके (संस्कृत के, जैसा अर्थात् जिन हिन्दी शब्दों को संस्कृत में से उसी अर्थ और स्वरूप में स्वीकार कर लिया गया हैं, वे **तत्सम** शब्द हैं। जैसे – भूमि, पुष्प, ममता, साहस आदि।

**तद्‌भव शब्द** –तद्‌भव का अर्थ हैं 'उससे उत्पन्न' करे वास्तव में संस्कृत के वे शब्द तो विकासक्रम में पालि, प्राकृत और अबभ्रंश से विकसित होकर अपने परिवर्तित रूप में हिन्दी में प्रचलित हैं, **तद्‌भव** कहलाते हैं। जैसे – माता (मातृ), दूध (दुग्ध) काम (कर्म), पत्ता (पत्र) इत्यादि।

देशज : हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द प्रचलित हैं जिनके मूल का स्पष्ट पता नहीं चलता है। ये प्राय: जन भाषाओं से आए हुए हैं। इनके मूल का वैज्ञानिक अनुमान लगाना प्राय: संभव नहीं हैं, इन्हें 'देशज' देश (यानी स्थान विशेष)से उत्पन्न कहा जाता है। जैसे – पगड़ी, खाट, झाड़, झंझट, भोंपू इत्यादि।

हिन्दी शब्दों का एक बड़ा वर्ग **'आगत'** यानी विदेशी शब्दों का हैं। अपनी विकास यात्रा में हिन्दी ने अरबी फारसी, तुर्की तथा यूरोपीय भाषाओं – अंग्रेजी, पुर्तगाली, जर्मनी आदि के शब्दों को किंचित, परिवर्तन के साथ आत्मसात् किया हैं। इन शब्दों को **'आगत' या 'विदेशी'** शब्द कहते हैं। जैसे–

अरबी – अदालत, अल्लाह, आईना, इम्तहान, औरत, कसम, कसाई, किताब, कुरसी, फसल, दवा फकीर, मरीज़, हवा, शतरंज, शैतान, हुक्म आदि।

फारसी – आदमी, आसमान, कमरा कारीगर, गुब्बारा, ज़मीन, गुलाब, चिलम, जंजीर, जहर, जानवर, तराजू, दरवाज़ा, दिमाग, दूरबीन, व्याज, फौज, बदमाश, बीमा, मसाला, मेज़, महेमान, शादी, शायरी, सब्जी, सरकार इत्यादि।

तुर्की – कुली, कैंची, कुरता, चाकू, तोप, बंदूक, बारूद, बेगम इत्यादि।

अंग्रेजी – इंजन, एकड़, कंपनी, कार, कॉलेज, कालोनी, कोट, क्रिकेट, क्लब, गैस, गाउन, चॉकलेट, जेल, टाई, पाइप, फलैट, फुटबोल, पलेटफार्म फ्रॉक, बजट, बूट, मीटर, लाटरी, सूटकेस, स्कूटर स्टेशन, हीटर इत्यादि

पुर्तगाली – आया, आलपिन, गमला, चाबी, तौलिया, नीलाम, बालटी, मिस्तरी, संतरा, साबुन इत्यादि।

**अन्य भाषाओं से** – मिग, स्पुतनिक, ल्यूना (रूसी) चाय (चीनी) इत्यादि।

(5) **संकर शब्द** – दो भिन्न स्रोतों से आए शब्दों के मेल से बने शब्द संकर कहलाते हैं। जैसे –

रेलगाड़ी – रेल (अंग्रेजी)+गाड़ी (हिन्दी)

छायादार–छाया (संस्कृत)+ दार (फारसी)

सीलबंद – सील (अंग्रेजी)+ बंद (फारसी) आदि।

इस प्रकार हिन्दी शब्द भंडार को इतिहास या स्रोत की दृष्टि से पाँच भागों – (1) तत्सम, (2) तद्भव (3) देशज (4) आगत या विदेशी तथा संकर शब्दों में बाँटा जा सकता है।

**शब्दों का वर्गीकरण**

1 रचना के आधार पर वर्गीकरण :

रचना या बनावट की दृष्टि से शब्दों को दो वर्गों में बाँटा जाता है:

(1) रूढ़ (मूल) शब्द और (2) व्युत्पन्न शब्द

**( 1 ) रूढ़ ( मूल ) शब्द :**

जो शब्द अपने आप में पूर्ण हो तथा उनमें किसी

– शब्द या शब्दांश का योग न हुआ हो उनको रूढ़ या मूल शब्द कहते हैं।

– जो शब्द खण्डों मे विभक्त नहीं किये जा सकते, उनको रूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे – तराजू, मुख, हाथ, काम, पैर आदि, ये शब्द दूसरों के योग से नहीं बने हैं

यदि इन शब्दों को विभक्त किया जाए तो भी कोई अर्थ नहीं निकलता, जैसे–

त+रा+जू, मु+ख, हा+थ, का+म, पै+र

**( 2 ) व्युत्पन्न शब्द**

जो शब्द किसी शब्द या शब्दांश उपसर्ग या प्रत्यय के जुड़ने से बनते हैं उनको व्युत्पन्न शब्द कहते हैं; जैसे – निष्पक्ष, देखकर, प्रमाणपत्र, कमबख्त आदि। व्युत्पन्न शब्द दो प्रकार के हैं :

(क) यौगिक और (ख) योगरूढ़

**( क ) यौगिक शब्द : यौगिक अर्थात् :**

जो शब्द किसी मूल शब्द में किसी अन्य शब्द या शब्दांश (उपसर्ग या प्रत्यय) के योग से बनते हैं, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं।

* शब्द+शब्द :

न्यायालय = न्याय + आलय = (शब्द+शब्द)

विद्यालय = विद्या + आलय = (शब्द+शब्द)

* शब्द+शब्दांश :

देखकर = देखना + कर = (शब्द+शब्दांश)

पकड़कर = पकड़ना + कर = (शब्द+शब्दांश)

* शब्दांश+शब्द :

निर्बलता = निः + बलता = (शब्दांश+शब्द)

लावारिस = ला + वारिस = (शब्दांश+शब्द)

**( ख ) योगरूढ़ शब्द** जो शब्द यौगिक होते हुए भी किसी एक ही अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं; उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे – पंकज (पंक+ज = पंक में उत्पन्न होने वाला) इस सामान्य अर्थ में प्रचलित न होकर 'कमल' के अर्थमें रुढ़ हो गया हैं। अतः पंकज योगरूढ़ शब्द हैं।

इसी प्रकार जलज, सरसिज, मनोज, दशानन, चतुरानन, श्वेतांबर, लंबोदर आदि भी योगरूढ़ शब्द हैं।

**2. अर्थ की दृष्टि से वर्गीकरण :**

शब्द और अर्थ का अटूट संबंध होता है; किन्तु शब्दों के अर्थ सदा समान नहीं रहते हैं। अर्थ की दृष्टि से शब्द के निम्नानुसार चार प्रमुख भेद हैं –

(क) समानार्थी शब्द या पर्यायवाची शब्द

(ख) एकार्थी शब्द

(ग) अनेकार्थी शब्द

(घ) विपरीतार्थी शब्द या विलोम शब्द

**( क ) समानार्थी शब्द या पर्यायवाची शब्द :**

कुछ शब्द अलग होते हुए भी उसका अर्थ एक जैसा होता है, ऐसे शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

जैसे –

**आँख** – नेत्र, नयन, लोचन, दृग

**आकाश** – गगन, अम्बर, आसमान

**नदी** – सरिता, आपगा, तरंगिणी

**पृथ्वी** – भूमि, धरती, धरा, वसुंधरा

**कमल** – सरोज, पद्मज, पद्म, सरसिज

**( ख ) एकार्थी शब्द :**

ऐसे शब्द जिनका एक ही अर्थ होता हैं;

जैसे – कुंदन, चुनरी, रुमाल, कलगी

**( ग ) अनेकार्थी शब्द :**

ऐसे शब्द जिनके कई अर्थ होते हैं;

जैसे –

**आब** – शोभा, कान्ति, चमक, पानी, पसीना, आँसू,

**कर** – हाथ, किरण, लगान, हाथी की सूँढ।

**अवकाश** – समय, आकाश, रिक्त स्थान, विश्रामकाल, छुट्टी का समय।

**कोट** – किला, प्राचीन, महल, समूह, एक अंग्रेजी ढंग का वस्त्र।

**गुरु** – शिक्षक, श्रेष्ठ, भारी, एक ग्रह

**( घ ) विपरीतार्थी शब्द या विलोम शब्द :**

ऐसे शब्द युग्म जो – एक – दूसरे का विरोधी अर्थ सूचित करते हैं।

जैसे –

आदि – अंत शत्रु – मित्र नकद – उधार

आशा – निराशा निन्दा – स्तुति उदय – अस्त

आयात – निर्यात अंधकार – प्रकाश हिंसा – अहिंसा

विशेष : कुछ शब्द के उच्चारण में यदि सावधानी न बरती जाए तो उनका उच्चारण अर्थभेदक हो जाता हैं, खासकर ( उनकी दीर्घता या ह्रस्वता के कारण एसा होता है। जैंसे – सुर–सूर; दीन–दिन; कुल–कूल आदि।

## शब्द–निर्माण

हम जान चुके हैं कि मूल शब्दों में कुछ शब्दों या शब्दांशों को जोड़ कर नए शब्दों का निर्माण किया जाता है। यह शब्द निर्माण तीन प्रकार से होता है –

(1) उपसर्ग द्वारा

(2) प्रत्यय द्वारा

(3) समास द्वारा

## उपसर्ग

ने लघुत्तम शब्दांश हैं जो शब्द के आरंभ में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं; जैसे – सु+विचार = सुविचार, आ+जीवन = आजीवन

हिन्दी में तीन प्रकार के उपसर्ग हैं –

1. तत्सम उपसर्ग

2. तद्भव उपसर्ग

3. आगत (विदेशी) उपसर्ग

1. तत्सम उपसर्ग – ये उपसर्ग संस्कृत से आए हैं। ये केवल तत्सम शब्दों में ही लगते हैं। कुछ प्रचलित तत्सम उपसर्ग नीचे सोदाहरण नीचे दिए गए हैं –

| **उपसर्ग** | **शब्द** | **उदाहरण** |
|---|---|---|
| अति | अधिक | अतिरिक्त, अत्याचार, अतिशय, अत्यंत |
| अधि | श्रेष्ठ, ऊपर | अधिकार, अध्यादेश, अधिकृत, अधीश अधिशुल्क |
| अनु | पीछे, गौण बाद में आनेवाला | अनुचर, अनुराग, अनुकूल, अनुशासन,अनुकम्पा, अनुमान |
| अप | बुरा, हीन | अपयश, अपवाद, अपहरण, अपव्यय, अपमान |
| अभि | सामने, ओर | अभिनव, अभिभावक, अभिवादन, अभ्यागत, अभियान, अभीष्ट, अभिमान |
| अव | बुरा, हीन | अवतार, अवनति, अवगुण, अवमूल्यन |
| वि | विशिष्ट, भिन्न | विशुद्ध, विरक्त विनम्र |
| आ | तक, समेत | आरक्षण, आमरण, आदान, आकंठ |
| नि | नीचे, निषेध, | निवास, निवारण, निबंध, निरूपण, निगमन |
| परा | विपरीत, नाश | पराजय, प्राक्रम, पराधीन, पराकाष्ठा |
| प्र | आगे, अधिक | प्रकार, प्रगति, प्रेरणा, प्रमाण, प्रसिद्ध, प्रगति |
| प्रति | विरुद्ध, सामने | प्रतिकार, प्रतिकूल, प्रतिरोध, प्रतिवादी |
| दुर | बुरा | दुर्भाग्य, दुर्घटना, दुर्बल |

**2. तद्भव उपसर्ग :** हिन्दी में अधिकांश तद्भव उपसर्ग हैं, जो संस्कृत के तत्सस उपसर्गों से ही विकसित हुए हैं; जैसे –

| **उपसर्ग** | **शब्द** | **उदाहरण** |
|---|---|---|
| अ/अन | अभाव, निषेध | अछूत, अनजान, अनमोल, अनकहा, अनबोला, असफलता, अनदेखा, अढंर |
| क/कु | बुरा | कपूत, कुचाल, कुरूप, कुलक्षण |
| नि | रहित | निडर, निहत्था, निकम्मा |
| स/सु | अच्छा | सुजान, सुडौल, सपूत, सुफल, सचेत |

| | | |
|---|---|---|
| अध | आधा | अधकचरा, अधपका, अधजला, अधमरा |
| बिन | बिना | बिनब्याही, बिनमाँगे, बिनजाने, बिनखाये |
| भर | पूरा | भरपेट, भरसक, भरमार |
| चौ | चार | चौपाई, चौमासा, चौराहा, चौकन्ना |

3. **आगत ( विदेशी ) उपसर्ग :** जो उपसर्ग विदेशी भाषाओं सें हिन्दी में आए हैं, वे विदेशी उपसर्ग कहलाते हैं। इनमें अधिकतर फारसी–उर्दू के हैं। जैसे –

| **उपसर्ग** | **शब्द** | **उदाहरण** |
|---|---|---|
| ब | के साथ, के बिना | बगैर, बखूबी, बदौलत |
| बा | साथ | बाकायदा, बाक्षदत, बनाम |
| बि | बिना | बेघर, बेहोश, बेसमझ, बेगुनाह, बेखटके, बेदाग, बेवजह |
| बद | बुरा | बदनाम, बदमाश, बदचलन, बदसूरत, बद्‌किस्मत |
| खुश | अच्छा | खुश किस्मत, खुशहाल, खुसमिजा़ज |
| ना | अभाव | नामालूम , नाराज, नासमझ, नाबालिग, नामुराद |
| गैर | भिन्न | गैर हाजिर, गैर सरकारी, गैर जिम्मेदारी |
| ला | नहीं, अभाव | लाजवाब, लाइलाज, लापरवाह, लावारिस |
| हम | आपस में साथ | हमउम्र, हमजोली, हमवतन, हमसफर, हमशक्ल |
| कम | थोड़ा | कमबख्त, कमजोर, कमउम्र, कमनसीब, कमनीय |

**प्रत्यय :** शब्दों के अंत में लगकर जो शब्दांश उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे – जलज पंकज आदि, (जल = पानी, ज जन्म लेनेवाला अर्थात् पानी में जन्म लेनेवाला = कमल)। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं।

1. **कृत प्रत्यय :** जो प्रत्यय धातुओं अथवा क्रियाओ के अंत में लगते हैं, वे कृत प्रत्य कहलाते हैं। इनके योग से बने शब्दों को कृदंत कहते हैं। राखन+हारा = राखनहारा; लिख+आवट = लिखावट/हिन्दी के कुछ कृत् प्रत्ययों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

| **प्रत्यय** | **शब्दरूप** |
|---|---|
| अक | पाठक, धावक |
| आक | तैराक, चालाक |
| आड़ी | अनाड़ी, खिलाड़ी, अगाड़ी |

| | |
|---|---|
| ऊ | कमाऊ, चलाऊ |
| आऊ | बिकाऊ, टिकाऊ, चलाऊ |
| आका | धड़ाका, धमाका |
| आलू | झगड़ालू |
| एरा | लुटेरा, सँपेरा |
| आ | झटका, झूला |
| आव | बहाव, चढ़ाव |
| आप | मिलाप, विलाप, आलाप |
| आई | बुनाई, लिखाई, कमाई |
| आहट | चिकनाहट, घबराहट |
| वाला | पढ़नेवाला, रखवाला |

2. **तद्धित प्रत्यय :** जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण, अंत में लगकर उनसे नए शब्द बनाते हैं. वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं, जैसे –

| **प्रत्यय** | **शब्दरूप** |
|---|---|
| आर | सुनार, लुहार, कहार |
| कार | चित्रकार, कलाकार |
| ई | धोबी, तेली |
| वाला | घरवाला, टोपीवाला |
| आ | बुलावा, सराफा |
| इन | मालिन, धोबिन |
| पा | मोटापा, बुढ़ापा |
| औती | बपौती, मनौती |
| पन | पीलापन, बचपन |
| आल | ससुराल, ननिहाल |
| इया | लूटिया, डिबिया, खटिया |
| हारा | लकड़हारा, पनिहारा |
| गर | कारीगर, बाजीगर |
| इमा | कालिमा, लालिमा आदि |

**समास :** दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। समास रचना में दो शब्द (पद) होते हैं। पहला पद पूर्वपद तथा दूसरा पद उत्तर पद कहलाता है। समास शब्दों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहा जाता है। उदाहरण के लिए

'गंगा का जल' पद में दो पद हैं – (1) गंगा (2) जला समास होने पर बनेगा 'गंगाजल'। गंगा जल का विग्रह करने पर हम ऐसा लिखेंगे–

'गंगा का जल'।

हिन्दी में समास के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं :

(1) तत्पुरुष समास

(2) कर्मधारय समास

(3) द्विगु समास

(4) बहुव्रीहि समास

(5) द्वन्द्व समास

(6) अव्ययीभाव समास

1. **तत्पुरुष समास :** तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है तथा पूर्वपद गौण होता है । इस समास में कारक विभक्ति या एकाधिक शब्दों का लोप होता है। जैसे –

| **समस्त पद** | **विग्रह** |
|---|---|
| जनप्रिय | जन को प्रिय |
| यश प्राप्ति | यश को प्राप्त |
| तुलसीकृत | तुलसी द्वारा कृत |
| गुणयुक्त | गुण से युक्त |
| प्रतीक्षालय | प्रतीक्षा के लिए आलय |
| मताधिकार | मत का अधिकार |
| पाठशाला | पाठ के लिए शाला |
| चरण स्पर्श | चरण का स्पर्श |

2. **कर्मधारय समास :** कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है; जैसे –

| | |
|---|---|
| नीलकमल | नीले रंग का कमल |
| नीलांबर | नीले रंग का अंबर |
| श्वेतांबर | सफेद रंग का अंबर |
| महाजन | महान है जो जन |
| दुश्चरित्र | बुरा है जो चरित्र |
| महापुरुष | महान है जो पुरुष |

3. **द्विगु समास :** जहाँ समस्त पद के पूर्वपद संख्यावाचक हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे –

| | |
|---|---|
| पंचवटी | पाँच वटों का समाहार |
| चौराहा | चार राहों का समाहार |
| पंजाब | पाँच आबों (नदी) का समाहार |
| शताब्दी | सौ अब्दों (वर्ष) का समाहार |
| चौमाला | चार मासों का समाहार |
| दोपहर | दो पहरों का समूह |

4. **बहुव्रीहि समास :** जहाँ पहला पद और दूसरा पद मिलाकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, वहाँ बहुब्रीहि समास होता है। जैसे – नीलकंठ अर्थात, नीले कंठवाला अर्थात् शिव। यहाँ नील और कंठ में से कोई पद प्रधान या गौण नहीं है। बल्कि ये दोनों पद मिलकर तीसरे पद शिव के लिए प्रयुक्त हो रहे हैं।

| **समस्त पद** | **विग्रह** |
|---|---|
| गजानन | गज जैसे आनन (मुँह) वाला (गणेश) |
| एकदंत | एक दांतवाला (गणेश) |
| त्रिनेत्र | तीन नेत्रोंवाला (शिव) |
| वीणापाणि | जिसकी पाणि में वीणा हो (सरस्वती) |
| निशाचर | निशा में विचरण करनेवाला (राक्षस) |
| दशानन | दस मुखोंवाला (रावण) |

5. **द्वन्द्व समास :** जिस समस्त पद में दोनों पद समान हों, वहाँ द्वन्द्व समास होता है।

| **समस्त पद** | **विग्रह** | |
|---|---|---|
| अन्न–जल | अन्न और जल | या अन्न तथा जल |
| अपना–पराया | अपना और पराया | या अपना तथा पराया |
| अमीर–गरीब | अमीर और गरीब | या अमीर या गरीब |
| आटा–दाल | आटा और दाल | या आटा तथा दाल |
| आशा–निराशा | आशा और निराशा | या आशा तथा निराशा |
| नर–नारी | नर और नारी | या नर या नारी |
| पाप–पुण्य | पाप और पुण्य | या पाप या पुण्य |

6. **अव्ययीभाव समास :** जिसका पहला पद अव्यय हो, या दोनों पद मलिकर अव्यय की तरह व्यवहार करते हों, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे –

| | | |
|---|---|---|
| प्रतिदिन | प्रत्येक दिन | हर एक दिन |
| आजीवन | जीवन भर | |

| | |
|---|---|
| आमरण | मरण तक |
| बेखटके | बिना खटके के |
| गाँव–गाँव | प्रत्येक गाँव |
| यथाशक्ति | शक्ति के अनुसार |
| यथाविधि | विधि के अनुसार |

●

# 3 इसे जगाओ

**भवानी प्रसाद मिश्र**

(जन्म : सन् 1913, मृत्यु : सन् 1985)

गांधीवादी विचारक कवि भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में हुआ था। सोहागपुर, होसंगाबाद, नरसिंहपुर और जबलपुर में उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई। हिन्दी अंग्रेजी और संस्कृत विषय लेकर बी.ए. पास किया। गांधी विचार अनुसार स्कूल में अध्यापन कार्य किया 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में गिरफ्तार हुए 1945 में झेल से छूटने के बाद वर्धा महिला आश्रम में शिक्षक के रूप में सेवा दी। उनकी कविताओं का प्रकाशन होता रहा। उन्होंने चित्र पट के लिए संवाद भी लिखे। मद्रास से मुंबई आकाशवाणी के प्रोड्युसर हुए। आकाशवाणी केन्द्र दिल्ली में भी अपनी बहुमूल्य सेवाएँ प्रदान की।

उनके मुख्य कविता संग्रह हैं 'गीत फरोश', 'चकित है दु:ख', 'गांधी पंचती', 'बुनी हुई रस्सी', 'खूशबू के शीला लेख', 'त्रिकाल संध्या', 'फसलें और फूल', 'संप्रति अँधेरी कविता', 'अनाम और नीर्ति रेखा तक', 'बाल कविताएँ', 'तुको के खेल'; संस्मरण – 'जिन्होंने मुझे रचा'। निबंध संग्रह – 'कुछ नीति कुछ राजनीति'

मिश्रजी को 'बनी हुई रस्सी' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार सन् 1972 में मिला। सन् 1981-82 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का साहित्यकार सम्मान तथा 1983 में मध्य प्रदेश शासन द्वारा शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया।

प्रस्तुत कविता बोल-चाल की सहज भाषा में लिखी गई हैं। जो व्यक्ति समय पर सचेत होकर असर का लाभ उठाता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त करता हैं। सही समय पर कार्य न करनेवाला व्यक्ति जीवन की दौड़ में पिछड़ जाता है। कवि सूरज, पवन और पक्षी से आग्रह करता ह कि वे मानव को इस सत्य से परिचित कराए। मनुष्य जागरण का संदेश यह कविता देती है साथ ही समय का महत्व भी समझाती है।

---

भई, सूरज
ज़रा इस आदमी को जगाओ!
भई, पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ!
यह आदमी जो सोया पड़ा हैं,
जो सच से बेखबर
सपनों में खोया पड़ा हैं।
भई पंछी,
इसके कानों पर चिल्लाओ!
भई सूरज! ज़रा इस आदमी को जगाओ!
वक्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक्त जगेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं

उन्हें पाने –
घबरा के भागेगा यह।
घबरा के भागना अलग है,
क्षिप्र गति अलग है,
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है।
सूरज, इसे जगाओ,
पवन, इसे जगाओ,
पंछी, इसके कानों पर चिल्लाओ!

**शब्दार्थ-टिप्पणी**

**ज़रा** कुछ,थोड़ा **बेखबर** अनजान **बेवक्त** असमय **क्षिप्र** तेज़: गतिशील **सजग** जगा हुआ, सचेत

●

| 4 | # गुरु-पर्व |
|---|---|

**खाहिद अशरफ़**

भारत की धरती पर बड़े-बड़े संत, फ़कीर और ज्ञानी हुए हैं। इन विशाल सूफी-संतों में गुरु नानक देव का नाम बहुत महत्वपूर्ण हैं। वह लाहौर से कुछ दूर तलौडी नाम के गांव में 1429 ई., में पैदा हुए थे। यह स्थान अब पाकिस्तान में हैं और ननकाना साहब के नाम से जाना जाता हैं। नानक जी बचपन ही से बहुत बुध्धिमान और धार्मिक विचार के थे। उनकी धार्मिक श्रद्धा देख कर उन को शिक्षा देने वाले मौलवी और पंडित भी दंग रह गए। यूं तो देखने में नानक देव का दिल पढ़ाई लिखाई में नहीं लगता था लेकिन गहरी सोच रखने के कारण वह संस्कृत और अरबी, फारसी के बड़े विद्वान बन गए।

गांव के दूसरे बच्चों की तरह उन को भी बचपन में मवेशी चराने की जिम्मेदारी दी गई। लेकिन वह गाय-भैंसों को जंगल में छोड़ देते थे और स्वयं परमात्मा की भक्ति में डूब जाते थे। जवान होने पर नानक देव के पिता ने उन को कुछ पैसे व्यवसाय के लिए दिए। लेकिन उन्होंने सारे पैसे साधू-संतों की सेवा में खर्च कर दिए और खाली हाथ घर वापस आ गए। अठारह साल की आयु में नवाब दौलत खां के यहां उनको नौकरी मिल गई। वहां भी नानक जडी गरीबों की सेवा में लगे रहे, एक दिन तेरह सेर आटा तौलते समय तेरा-तेरा कहते गए और सारा आटा एक ग़रीब को दे दिया। परिणामस्वरूप नौकरी से हटा दिए गए।

उसी साल उनकी शादी सुलक्षणा देवी से हुई। आप के बेटे लक्ष्मी दास और श्री चन्द पैदा हुए। लेकिन दुनियादारी से जी ऊब गया था, इसलिए तीस वर्ष की आयु में बैराग ले लिया। आप ने देश भर में घूम-घूम कर नान पंथ का प्रचार किया। गुरु नानक हिंदू समाज की ज़ात के बंटवारे और सतीप्रथा के खिलाफ थे। आप निराकार ईश्वर के भक्त थे और मेहनत से रोजी कमाने का पाठ देते थे। एक बार एक धनवान आदमी का निमंत्रण छोड़ कर उन्होंने एक बढ़ई के घर की रूखी-स्रूखी रोटी खाई। जब धनवान ने शिकायत की तो नानक जी ने दोनों की रोटियों को निचोड़ कर दिखाया। गरीब की रोटी में से दूध और रईस आदमी की रोटी में से खून की बूंदे टपकी। यह देख कर दौलतचंद आदमी बहुत शरमाया, क्योंकि उसने धन गरीबों का खून चूस कर प्राप्त किया था।

कहा जाता हैं कि गुरु नानक जी मक्का और बग़दाद भी गए, जहां खलीफा ने उनका जोरदार स्वागत किया। फिर वह ईरान होते हुए बुखारा पहुंचे। देश लौटकर वह गुरुदासपुर जिला के गांव कर्तारपुर में बस गए। 1539 ई. को आप अपने ईश्वर से जा मिले। आप को मानने वाले सिक्ख कहलाते हैं।

हर कार्तिक पूर्णिमा को अक्टूबर-नवंबर के महीने में गुरु नानक जी का जन्म दिवस सिक्ख लोग गुरूपर्व के रूप में मनाते हैं। गुरु नानक का कहना था कि सारे मनुष्य बराबर हैं वह सिक्ख धर्म के आदि गुरु हैं। उनके कथन, वचन गुरुग्रंथ साहब में इकट्ठा किए गए हैं जो सिक्खों की पवित्र पुस्तक हैं। गुरूपर्व को गुरुद्वारों को खूब सजाया जाता हैं। उनके भक्त गुरुबाणी गीत के रूप में गाते हैं। इस दिन प्रभात फेरियां निकाली जाती हैं। शाम को बहुत बड़ा जुलूस निकाला जाता हैं।

जिसके रास्ते में जगह-जगह शर्बत, फल और खाने के सामान बांटे जाते हैं। सारे रास्ते गुरुग्रंथ साहब का पाठ होता रहता हैं। रास्ते में लंगर लगते हैं। जहां कड़ा प्रसाद बांटा जाता हैं। गुरु गोविंद सिंह सिक्खों के दसवें और अंतिम गुरु थे। उनके बाद 'खालसा पंथ' गुरु ग्रंथसाहब की निगरानी में चलता हैं। गुरुग्रंथ साहब, गुरु अर्जुन देव के ''आदि ग्रंथ'' से कुछ भिन्न हैं। इसमें

गुरु नानक, संत कबीर और दूसरे सूफियों की अच्छी-अच्छी बातें शामिल हैं। गुरु गोविंदजी का जन्म दिवस भी गुरु पर्व कहलाता हैं। जो पूस अर्थात् दिसंबर -जनवरी में आता है। यह भी गुरुनानक के जन्मदिक की तरह मनाया जाता है। इस दिन सिक्ख धर्म के अनुयायी घरों में दीवाली की तरह रोशनिया करते हैं और बच्चे पटाखे, फुलझड़िया छोड़ते हैं। गुरु गोविन्द सिंह का जन्म पटना में हुआ था, इस दिन गुरुद्वारा पटना साहब में दर्शन करने वालों की भीड़ होती हैं। इस दिन गुरुग्रंथ साहब का जुलूस निकाला जाता हैं, जिसके आगे-आगे पांच प्यारे चलते हैं। इसके अतिरिक्त गुरु पर्व पर अखंड पाठ होता हैं।

**( अनुवाद : इजहार अहमद नदीम )**

**शब्दार्थ-टिप्पणी**

**मवेशी** पशु **सेर** सोलह छटाँक की एक तौल **बैराग** संन्यास : वैराग्य **रईस** धनवान **खलीफा** पैगंबर का उत्तराधिकारी **लंगर** बहुत लोगों का भोजन एक साथ पकाने का स्थान **खालसा** सिखों का एक प्रमुख पंथ **सूफी** इस्लाम धर्म में प्रेममार्ग की शाखा

●